रजता है=गर्जति
ाता है=खादति, भक्षयति
ेता है=पश्यति
घता है=जिघ्रति
ाटता है=लुठति
रता है=पतति
लता है=वदति, गदति

नाचता है=नृत्यति, नटति
रहता है=वसति
चलता है=चलति
जाता है=गच्छति, व्रजति
आता है=आगच्छति
तैरता है=तरति
पकड़ता है=धरति

ि्पणी—

(१) ऊपर की क्रियाओं का बहुवचन बनाने के लिए उनमें 'ति' के ान में 'न्ति' कर देना चाहिए। जैसे—खेलन्ति, चरन्ति, आदि।

(२) ऊपर की क्रियाओं का द्विवचन बनाने के लिए उनमें 'ति' की जगह 'तः' कर देना चाहिए। जैसे—खेलतः, चरतः, आदि।

## अनुवाद

का खेलता है=बालकः खेलति।
ह गरजते हैं=सिंहः गर्जति।
घोड़े दौड़ते हैं=अश्वौ धावतः।
ऊँट चलते हैं= उष्ट्रौ चलतः।
ि दौड़ते हैं=कुक्कुराः धावन्ति।
ा लोटता है=गर्दभः लुठति।
यूराः नृत्यन्ति=मयूर नाचते हैं।
ाः गर्जन्ति=बादल गरजते हैं।
ोकिलः कूजति=कोयल कूकती है।
स्याः तरन्ति=मछलियाँ तैरती हैं।
नः कपोतं धरति=बाज कबूतर को पकड़ता है।

बैल चरते हैं=वृषाः चरन्ति।
हरिण खेलते हैं=हरिणाः खेलन्ति।
बाघ हाथी को मारता है=व्याघ्रः गजं मारयति।
बिलार चूहे को खाता है=मार्जारः मूषकं खादति।
नकुलः सर्पं खादति=नेवला साँप को खाता है।
हंसौ तरतः=दो हंस तैरते हैं।
शुकौ वदतः=दो सुग्गे बोलते हैं।
शशकाः धावन्ति=खरगोश दौड़ते हैं।
शलभाः दीपे पतन्ति=फतिंगे दीप पर गिरते हैं।

## अभ्यास

कृतेऽनुवादं कुरु—

कुत्ता दौड़ता है। भालू आता है। भेंड़ा चरता है। सूअर लोटता है। बन्दर खेलते हैं। दो बकरे चरते हैं। नेवला साँप को खाता है। कुत्ते रगोश को मारते हैं। साँप मनुष्यों को डँसता है। दो मयूर नाचते हैं। मछलियाँ तैरती हैं। कछुआ चलता है। मकड़ा (मर्कटकः) जाल बनाता । कौए बोलते हैं। घड़ियाल समुद्र में रहते हैं। कुएँ में कछुआ है।

हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—

छागः चरति। कुक्करौ धावतः। गजः आगच्छति। अश्वौ गच्छतः। कृकलासः पतति। कर्कटः चलति। भेकाः नदन्ति। बकः मत्स्यान् खादति। मयूरः कीटान् खादति। वृश्चिकः नरान् दशति। कुक्कुटौ नदतः। महिषौ आगच्छतः। गोपालः मकरं पश्यति। तडागे वर्त्तकौ तरतः। रामः कर्कटं (केंकड़े को) धरति। कृकलासः कीटान् खादति। केशवः शुकान् पश्यति। तडागे मत्स्याः सन्ति। कुलाये पिकौ स्तः। दिने उलूकः न पश्यति।

### शब्द-कोष

बाप=**जनकः**
दादा=**पितामहः**
चाचा=**पितृव्यः**
बड़ा भाई=**अग्रजः**
छोटा भाई=**अनुजः**
बेटा=**पुत्रः (सुतः)**

नाना=**मातामहः**
मामा=**मातुलः**
साला=**श्यालः**
भतीजा=**भ्रातृव्यः (भ्रातृजः)**
पोता=**पौत्रः**
नाती=**दौहित्रः**

### शब्द-कोष

हँसता है=**हसति**
रोता है=**क्रन्दति**
चिल्लाता है=**क्रोशति**
पूछता है=**पृच्छति**

पढ़ता है=**पठति**
लिखता है=**लिखति**
प्रणाम करता है=**प्रणमति**
कहता है=**कथयति**

### अनुवाद

राम का बाप आता है=**रामस्य जनकः आगच्छति।**
मोहन का लड़का जाता है=**मोहनस्य पुत्रः गच्छति।**
केशव का छोटा भाई रोता है=**केशवस्य अनुजः क्रन्दति।**
गोपाल का बड़ा भाई हँसता है=**गोपालस्य अग्रजः हसति।**
बेटा बाप को प्रणाम करता है=**पुत्रः जनकं प्रणमति।**
चाचा भतीजे को देखता है=**पितृव्यः भ्रातृव्यं पश्यति।**
पोता बाबा को पूछता है=**पौत्रः पितामहं पृच्छति।**
नाना नाती को कहता है=**मातामहः दौहित्रं कथयति।**

**गोविन्दस्य मातुलः आगच्छति**=गोविन्द का मामा आता है।
**केशवस्य श्यालः गच्छति**=केशव का साला जाता है।
**जनकः पुत्रं पृच्छति**=बाप बेटे को पूछता है।

**गोपालस्य दासः क्रोशति**=गोपाल का नौकर चिल्लाता है।
**नारायणस्य अनुजः पठति**=नारायण का छोटा भाई पढ़ता है।
**इन्द्रस्य अग्रजः लिखति**=इंद्र का बड़ा भाई लिखता है।
**कृष्णः पितृव्यं पश्यति**=कृष्ण चाचा को देखता है।
**रामः देवान् प्रणमति**=राम देवताओं को प्रणाम करता है।

## शब्द-कोष

सिपाही—**सैनिकः**
किसान—**कृषकः**
नाई—**नापितः**
बढ़ई—**काष्ठकारः**
तेली—**तैलिकः**
ग्वाला—**गोपः, गोपालः**
दर्जी—**सूचीकारः**
माली—**मालाकारः**
दूकानदार—**आपणिकः**
हलवाई—**मौदकिकः (कान्दविकः)**
कुम्हार—**कुम्भकारः, कुलालः**
मल्लाह—**धीवरः (नौवाहः)**
धोबी—**रजकः**
रँगरेज—**रङ्गाजीवः**
लुहार—**लौहकारः (कर्मकारः)**
सोनार—**स्वर्णकारः**
चमार—**चर्मकारः**
रसोइया—**पाचकः (सूदः)**
लाठी—**लगुडः (दण्डः)**
पहलवान—**मल्लः**
गवैया—**गायकः**
गाँव—**ग्रामः**
कपड़ा—**पटः**
छुरा—**क्षुरः**
गाड़ी—**शकटः**
बोझ—**भारः**
बछड़ा—**वत्सः**
तलवार—**खड्गः**

## क्रिया-कोष

ले जाता है—**नयति**
लाता है—**आनयति**
देता है—**यच्छति, प्रयच्छति**
पकाता है—**पचति**
धोता है—**क्षालयति (धावति)**
रँगता है—**रञ्जयति**
पीटता है—**ताडयति, प्रहरति**
ढोता है—**वहति**
खींचता है, जोतता है—**कर्षति**
पूजा करता है—**पूजयति, अर्चयति (अर्चति)**

## अनुवाद

धोबी कपड़ा धोता है—**रजकः पटं क्षालयति।**
रँगरेज कपड़ा रँगता है—**रङ्गाजीवः पटं रञ्जयति।**
किसान बैल ले जाता है—**कृषकः वृषं नयति।**
कुम्हार घड़ा बनाता है—**कुम्भकारः घटं रचयति।**

मल्लाह मछलियाँ पकड़ता है—**धीवरः मत्स्यान् धरति।**
गवैये गाते हैं—**गायकाः गायन्ति।**
दो पहलवान आते हैं—**मल्लौ आगच्छतः।**
गाँव में वैद्य रहते हैं—**ग्रामे वैद्याः वसन्ति।**
रसोइया पकाता है—**पाचकः पचति।**
लड़के खाते हैं—**बालकाः खादन्ति।**
नौकर चोर को मारता है—**दासः चौरं ताडयति।**
ब्राह्मण के लड़के पढ़ते हैं—**ब्राह्मणस्य पुत्राः पठन्ति।**
**पाचकः ग्रामं गच्छति**—रसोइया गाँव जाता है।
**भृत्यः भारं वहति**—नौकर बोझ ढोता है।
**मल्लः लगुडं नयति**—पहलवान लाठी ले जाता है।
**चौराः धावन्ति**—चोर दौड़ते हैं।
**अश्वौ शकटं कर्षतः**—दो घोड़े गाड़ी को खींचते हैं।
**ब्राह्मणः देवान् पूजयति**—ब्राह्मण देवताओं को पूजता है।
**बालकः वृक्षात् पतति**—लड़का पेड़ से गिरता है।
**स्वर्णकारः ग्रामात् गच्छति**—सुनार गाँव से जाता है।
**सैनिकः चौरं धरति**—सिपाही चोर को पकड़ता है।
**ग्रामे चर्मकारः नास्ति**—गाँव में चमार नहीं है।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

मोहन गाँव जाता है। केशव तालाब से आता है। बढ़ई किसान की गाड़ी बनाता है। दो ग्वाले जाते हैं। लुहार नाई का छुरा बनाता है। तेली आता है। दर्जी कपड़ा सीता है (सीव्यति)। गाँव में माली रहता है। दूकानदार कपड़ा देता है। ग्वाला बछड़ों को ले जाता है। दो गवैये गाते हैं। चमार का लड़का दौड़ता है। लुहार का भाई आता है। वैद्य का लड़का पढ़ता है। किसान चोर को लाठी से पीटता है। हलवाई का भतीजा आता है। सिपाही जाता है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

वृषौ शकटं कर्षतः। नापितः क्षुरम् आनयति। रजकः पटान् नयति। मालाकारः वृक्षान् पश्यति। गोपः ब्राह्मणं प्रणमति। धीवरः कच्छपं धरति। वैद्यस्य पुत्रः क्रन्दति। रथकारः रथं रचयति। गायकाः आगच्छन्ति। तैलिकस्य वृषौ धावतः। रजकः गर्दभम् ताडयति। कृषकः [illegible] पश्यति। रथात् भारः पतति। ब्राह्मणाः देवं पूजयन्ति। सैनिकः खड्गं नयति।

***

# द्वितीयः पाठः

## नपुंसकलिंग अकारांत 'फल' शब्द

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा— | फल, फल ने | फल, फलों ने |
| | **फलम्** | **फलानि** |
| द्वितीया— | फल, फल को | फल, फलों को |
| | **फलम्** | **फलानि** |

टिप्पणी—(१) **प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन में 'फले' होता है।**

(२) **शेष कारकों में पुँल्लिग और नपुंसकलिंग अकारांत शब्दों के रूप एक-से होते हैं।**

### शब्द-कोष

पानी=**पानीयम् (जलम्)**
दूध=**दुग्धम्, क्षीरम्**
गहना=**भूषणम्**
फूल=**पुष्पम् (कुसुमम्)**
पत्ता=**पत्रम् (पर्णम्)**
तिनका=**तृणम्**
जंगल=**वनम् (अरण्यम्)**
सुख=**सुखम्**
दुख=**दुःखम्**
बल=**बलम्**
खेत=**क्षेत्रम्**
बीज=**बीजम्**
सिर=**मस्तकम्**
लकड़ी=**काष्ठम्**
हल=**हलम्**
किताब=**पुस्तकम्**
शरीर=**शरीरम्**
घर=**गृहम् (गेहम्, भवनम्)**

आँख=**नेत्रम् (नयनम्)**
कपड़ा=**वस्त्रम् (वसनम्)**
घी=**घृतम् (आज्यम्)**
तेल=**तैलम्**
भोजन=**भोजनम्**
मिठाई=**मिष्टान्नम्**
मुँह=**मुखम्, वदनम्**
तरकारी=**शाकः**
दाल=**सूपः (पुं०), दाली (स्त्री०), द्विदलम् (नपुं०)**
भात=**भक्तम् (न०), ओदनः (पुं०)**

नमक=**लवणम्**
मांस=**मांसम् (आमिषम्)**
रक्त=**रक्तम् (रुधिरम्)**
जलावन=**इन्धनम्**
बिल=**बिलम् (विवरम्)**
फल=**फलम्**

### क्रिया-कोष

चाहता है=**इच्छति (वाञ्छति)**
घूमता है=**परिभ्रमति**
बोता है=**वपति**

पीता है=**पिबति**
होता है=**भवति**
गिरता है=**पतति**

## अनुवाद

दूध से बल होता है=**दुग्धेन बलं भवति।**
दाल में नमक नहीं है=**द्विदले लवणं नास्ति।**
ब्राह्मण मिठाई खाते हैं=**ब्राह्मणाः मिष्टान्नं खादन्ति।**
लड़का दूध पीता है=**बालकः दुग्धम् पिबति।**
पेड़ से पत्ते गिरते हैं=**वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।**
घर में इंधन नहीं है=**गृहे इन्धनं नास्ति।**
किसान खेत में बीज बोता है=**कृषकः क्षेत्रे बीजं वपति।**
गोपाल आँखें धोता है=**गोपालः नेत्रे क्षालयति।**
साँप बिल में घुसता है=**सर्पः बिलं प्रविशति।**
नौकर जलपान लाता है=**दासः इन्धनम् आनयति।**

**मनुष्याः सुखम् इच्छन्ति**=लोग सुख चाहते हैं।
**सिंहः वनम् प्रविशति**=सिंह वन में घुसता है।
**वृक्षे फलं नास्ति**=पेड़ पर फल नहीं है।
**मोहनः गृहं गच्छति**=मोहन घर जाता है।
**व्याघ्रः मांसं खादति**=बाघ मांस खाता है।
**शिवः लवणं न खादति**=शिव नमक नहीं खाता है।
**रामः वनं गच्छति**=राम वन जाते हैं।
**शरीरे भूषणं नास्ति**=शरीर में गहना नहीं है।
**पाचकः भक्तं पचति**=रसोइया भात पकाता है।
**बालकाः पुस्तकं पठन्ति**=लड़के किताब पढ़ते हैं।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

मांस से बल होता है। धन से सुख होता है। तरकारी में घी नहीं हैं। वृक्ष में पत्ते नहीं हैं। घर में अन्न नहीं है। बिल में साँप है। तालाब में पानी नहीं है। रसोइया भोजन पकाता है। सुनार गहना बनाता है। माली फूल ले जाता है। गोपाल मुँह धोता है। शरीर में रक्त होता है। जंगल में सिंह रहते हैं। कुत्ता तालाब में पानी पीता है। गोविंद सिर धोता है। मोहन किताब पढ़ता है। बर्तन में (पात्रे) गुडः (गुड़) है। घर में छाता (छत्रम्) नहीं है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

दीपे तैलं नास्ति। गोपालः भक्तं खादति। मनुष्याः धनम् इच्छन्ति। कृषकाः अन्नम् इच्छन्ति। छागः तृणं चरति। वृक्षात् फलानि पतन्ति। विडालः दुग्धं पिबति। बालकाः मिष्टान्नम् इच्छन्ति। शरीरे वस्त्रं नास्ति। व्यञ्जने लवणं नास्ति। बिले सर्पौ स्तः। क्षेत्रे हलानि सन्ति। बालकौ पुस्तके पठतः।

***

# तृतीयः पाठः

## स्त्रीलिंग आकारांत 'लता' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| **(प्र०)**— | लता, लता ने<br>**लता** | लताएँ, लताओं ने<br>**लताः** |
| **(द्वि०)**— | लता को<br>**लताम्** | लताओं को<br>**लताः** |
| **(तृ०)**— | लता से<br>**लतया** | लताओं से<br>**लताभिः** |
| **(च०)**— | लता के लिए<br>**लतायै** | लताओं के लिए<br>**लताभ्यः** |
| **(पं०)**— | लता से<br>**लतायाः** | लताओं से<br>**लताभ्यः** |
| **(ष०)**— | लता का<br>**लतायाः** | लताओं का<br>**लतानाम्** |
| **(सं०)**— | लता में (पर)<br>**लतायाम्** | लताओं में (पर)<br>**लतासु** |
| **(सम्बो०)** | हे लते! हे लते!<br>**हे लते!** | हे लताओ!<br>**हे लताः!** |

**द्विवचन के रूप—**

| | |
|---|---|
| **(प्र०)**—दो लताएँ<br>**(द्वि०)**—दो लताओं को | **लते** |
| **(तृ०)**—दो लताओं के द्वारा (से)<br>**(च०)**—दो लताओं के लिए<br>**(पं०)**—दो लताओं से | **लताभ्याम्** |
| **(ष०)**—दो लताओं का<br>**(स०)**—दो लताओं में (पर) | **लतयोः** |

## शब्द-कोष

**बालिका**---लड़की
**कन्या**---पुत्री, सुता, बेटी
**भार्या**---स्त्री
**अजा**---छागी, बकरी
**शिवा**---गीदड़ी
**सरमा**---कुक्कुरी, सारमेयी
**पिपीलिका**---चींटी
**यूका**---मत्कुण, खटमल, जूँ
**लिक्षा**---लीख
**मक्षिका**---मक्खी
**जिह्वा**---रसना, जीभ
**लाला**---लार
**नासिका**---नाक
**रथ्या**---गली
**चन्द्रिका**---ज्योत्स्ना, चाँदनी
**सन्ध्या**---सायम्, साँझ
**तारका**---तारा
**वार्ता**---बात
**कथा**---कहानी
**कक्षा**---श्रेणी, क्लास, कमरा
**घण्टा**---घंटा
**घण्टिका**---घंटी
**कारा**---जेल
**कशा**---चाबुक
**कविका, वल्गा**---लगाम
**शिविका**---पालकी
**शय्या**---बिछावन
**पादुका**---खड़ाऊँ
**दूर्वा**---दूब
**द्राक्षा**---दाख
**अपूपिका**---पुआ
**सिता**---चीनी
**शर्करा**---शक्कर, चीनी, कंकड़
**छुरिका**---चाकू
**मुद्रिका**---अँगूठी
**रोटिका**---रोटी
**मुद्रा**---रुपया, सिक्का, छाप, अँगूठी
**इष्टका**---ईंट
**छाया**---छाँह
**हरिद्रा**---हलदी
**पुष्पवाटिका**---फुलवाड़ी
**शिला**---चट्टान
**शाला**---घर
**पाठशाला**---पाठशाला, स्कूल
**माला**---माला
**शाखा**---डाल
**खिच्चटिका**---खिचड़ी
**कुण्डलिका**---कुंडलिनी, जलेबी
**सन्तानिका**---मलाई

## अनुवाद

लड़की स्कूल जाती है=**बालिका पाठशालां गच्छति।**
दो बकरियाँ चरती हैं=**अजे चरतः।**
कुत्ता दौड़ता है=**सरमा धावति।**
लड़का रोटी खाता है=**बालकः रोटिकां खादति।**

जीभ से लार टपकती है=**जिह्वायाः लाला स्रवति।**
पुए में चीनी है=**अपूपिकायां सिता अस्ति।**
गली में कुत्ते हैं=**रथ्यायां कुक्कुराः सन्ति।**
बिछावन में खटमल हैं=**शय्यायां मत्कुणाः सन्ति।**
वृक्ष की डाल पर मैना है=**वृक्षस्य शाखायां सारिका अस्ति।**
गोविन्द की स्त्री पालकी में जाती है=**गोविन्दस्य भार्या शिविकायां गच्छति।**

**घण्टिका नदति**=घंटी बजती है।
**तारकाः उद्यन्ति**=सितारे उगते हैं।
**पिपीलिकाः सितां खादन्ति**=चींटियाँ चीनी खाती हैं।
**पाठशालायां सभा भवति**=विद्यालय में सभा होती है।
**राजकन्या वाटिकायां भ्रमति**=राजकन्या बाग में घूमती है।
**विद्यया प्रतिष्ठा भवति**=विद्या से प्रतिष्ठा होती है।
**महादेवस्य जटाभ्यः गङ्गा निःसरति**=महादेव की जटाओं से गंगा निकलती है।
**सैनिकः कशया अश्वं ताडयति**=सिपाही चाबुक से घोड़े को मारता है।
**खिच्चटिकायां हरिद्रा नास्ति**=खिचड़ी में हलदी नहीं है।
**बालकाः कुण्डलिकाः खादन्ति**=लड़के जलेबियाँ खाते हैं।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

बकरी चरती है। गीदड़ी जंगल में दौड़ती है। मक्खियाँ भनभनाती हैं (गुञ्जन्ति)। सन्ध्या में सितारे उगते हैं। फुलवाड़ी में आम के पेड़ हैं। मुसाफिर (पथिकः) घोड़े की लगाम पकड़ता है। जेल में सिपाही चोरों को चाबुक से मारते हैं। स्कूल की घंटी बजती है। कक्षाओं से विद्यार्थी आते हैं। नाक पर मक्खी है। अमावस्या (अमावास्यायां) में चाँदनी नहीं होती। वृक्ष की छाया में सभा होती है। चट्टान पर दूब नहीं होती। भरत रामचंद्र जी की खड़ाऊँ लाते हैं (आनयति)। पेड़ की डाल पर बंदर है। बकरियाँ दूब चरती हैं। फुलवाड़ी में माली फूलों की मालाएँ बनाता है। हाँड़ी में (हण्डिकायां) खिचड़ी है। संदूक में (मञ्जूषायां) रुपए हैं। गोविंद की लड़की मलाई खाती है। आकाश में सितारे हैं। इस कोठरी में ईंट नहीं है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**


बालिका पुष्पाणां मालाः रचयति। अजाः दूर्वां चरन्ति। जटायां (जटा में) लिक्षाः सन्ति। यात्रायाः (यात्रा के) समये छिक्का (छींक) भवति।

बालकः छुरिकां नयति। छात्राः विद्यां पठन्ति। मस्तके पीडा भवति। वृद्धः कथां कथयति। बालकः वार्त्तां पृच्छति। बालकौ आगच्छतः। पूर्णिमायां (पूर्णिमा में) सत्यनारायणस्य पूजा भवति। ब्राह्मणः कन्यायै शर्करां नयति। बालकः खिच्चटिकां खादति। कन्या रोटिकाः खादति। दुग्धात् सन्तानिका भवति। महादेवस्य जटाभ्यः गङ्गा निःसरति। वाटिकायां सारिका (मैना) वदति। रामस्य भार्यायाः मुद्रिका अस्ति। केशवस्य कन्या हरिद्रया वस्त्रं रञ्जयति। वृद्धा (बुढ़िया) कथां कथयति।

***

## चतुर्थः पाठः

### पुँल्लिग इकारांत 'मुनि' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| (प्र०)—— | मुनि, मुनि ने<br>**मुनिः** | मुनि, मुनियों ने<br>**मुनयः** |
| (द्वि०)—— | मुनि को<br>**मुनिम्** | मनियों को<br>**मुनीन्** |
| (तृ०)—— | मुनि के द्वारा<br>**मुनिना** | मुनियों के द्वारा<br>**मुनिभिः** |
| (च०)—— | मुनि के लिए<br>**मुनये** | मुनियों के लिए<br>**मुनिभ्यः** |
| (पं०)—— | मुनि से<br>**मुनेः** | मुनियों से<br>**मुनिभ्यः** |
| (ष०)—— | मुनि का<br>**मुनेः** | मुनियों का<br>**मुनीनाम्** |
| (सं०)—— | मुनि में (पर)<br>**मुनौ** | मुनियों में (पर)<br>**मुनिषु** |
| (संबो०)—— | हे मुनि! हे मुने!<br>**हे मुने!** | हे मुनियो!<br>**हे मुनयः!** |

**द्विवचन के रूप——**



(प्र०)——दो मुनियों ने }
(द्वि०)——दो मुनियों को } **मुनी**

नयति। गोपालः सख्युः पुस्तकं पठति। कपी धावतः। जले कृमयः सन्ति। यतिः व्रीहिं न इच्छति। अतिथी आगच्छतः। किरयः धावन्ति। कविः काव्यं रचयति। हिमालयगिरेः गङ्गा निःसरति।

***

# पञ्चमः पाठः

## स्त्रीलिंग इकारांत

पुँल्लिग 'मुनि' शब्द के रूप जैसे दिखलाए गए हैं वैसे ही 'रीति' शब्द के रूपों को भी बना लेना चाहिए। केवल दो स्थलों पर अंतर पड़ेगा, जिसे अच्छी तरह मनःस्थ कर लेना चाहिए।

| | एक व० | ब० व० |
|---|---|---|
| द्वितीया— | × | रीतियों को<br>रीतीः ('रीतीन्' नहीं) |

तृतीया—(रीति के द्वारा)

रीत्या ('रीतिना' नहीं) शेष रूप 'मुनि' की तरह बना लें। चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी तथा सप्तमी एकवचन के वैकल्पिक रूपों के लिए उपक्रमणिका देखें।

### शब्द-कोष

भूमि=जमीन
धूलि=धूलि
पङ्क्ति=कतार
शुक्ति=सीपी
वर्त्ति=बत्ती
कटि=कमर
मुष्टि=मुट्ठी
वृत्ति=जीविका, रोजगार
जाति=जाति
कृषि=खेती
भित्ति=दीवार

व्रतति=लता
सर्जि=सज्जी
मूर्त्ति=मूर्त्ति
चुल्लि=चूल्हा, चुल्ली
रात्रि=रात, रात्रि
बुद्धि=अक्ल
शान्ति=चैन
अङ्गुलि=अंगुली, उँगली
नाभि=ढोंढ़ी, नाभि
दर्वि=करछुल, दर्वी

### अनुवाद

मनुष्य शान्ति चाहते हैं—**मनुष्याः शान्तिम् इच्छन्ति।**



बुद्धि से काम होते हैं—**बुद्ध्या कार्याणि भवन्ति।**

बूढ़े की कमर में दर्द है—वृद्धस्य कटौ पीडा अस्ति।
वैद्य दवा देता है—वैद्यः औषधं यच्छति।
लड़के पत्थर की मूर्त्ति देखते हैं—बालकाः प्रस्तरस्य मूर्त्ति पश्यन्ति।
जमीन पर सज्जी है—भूमौ सर्जिजः अस्ति।
गधा धूलि में लोटता है—गर्दभः धूलौ लुठति।
चूल्हे में आग है—चुल्लौ अग्निः अस्ति।
गोपाल की उँगलियों में अँगूठियाँ हैं—गोपालस्य अङ्गुलिषु मुद्रिकाः सन्ति।
सीपी से मोती निकलता है—शुक्तेः मौक्तिकं प्रभवति।

केशवः जात्या क्षत्रियः—केशव जाति से क्षत्रिय है।
वैश्यानां कृषिः वृत्तिः—वैश्यों का खेती रोजगार है।
भित्तौ व्रततिः प्रसरति—दीवार पर लता फैलती है।
रात्रौ अन्धकारः भवति—रात में अँधेरा होता है।
पाचकः दर्व्या शाकं चालयति—रसोइया करछुल से तरकारी चलाता है।
सैनिकः मुष्ट्या चौरं प्रहरति—सिपाही घूँसे से चोर को मारता है।
शाकुनिकः बकानां पङ्क्तीः पश्यति—बहेलिया बगुलों की कतारों को देखता है।
पुरोहितः कर्पूरस्य वर्त्ति ज्वालयति—पुरोहित कपूर की बत्ती जलाता है।
रजकः सज्ज्या वस्त्राणि क्षालयति—धोबी सज्जी से कपड़ों को साफ करता है।
मृगस्य नाभौ कस्तूरिका जायते—हरिण की नाभि से कस्तूरी उत्पन्न होती है।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

ईंटों की दीवार है। बत्ती जलती है। मुट्ठी में फल है। लड़का जमीन पर खेलता है। देवदास जाति का नाई (नापितः) है। वैद्य लोग दवा बनाते हैं। लड़की की उँगलियों में दर्द है। शांति से सुख होता है। कारीगर (शिल्पकारः) नारायण की मूर्त्ति बनाता है। नाभि पर कमल (कमलम्) खड़ा है (तिष्ठति)। गोपाल रात में नहीं पढ़ता है। चूल्हे पर कड़ाह (कटाहः) है। लड़की करछुल से (दर्व्या) दूध चलाती है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

बालकः रात्रौ लिखति। भूमौ सर्पौ चलतः। केशवस्य नाभौ व्रणः (घाव) अस्ति। वृद्धः औषधं पिबति। बालकस्य मुष्टौ धूलिः अस्ति। शुक्तिभ्यः मौक्तिकानि प्रभवन्ति। छात्राणां पङ्क्तयः धावन्ति। व्रततेः पुष्पाणि भूमौ पतन्ति। कृषकाणां कृषिः वृत्तिः। ब्राह्मणानां विद्या वृत्तिः।



***

# षष्ठः पाठः

## स्त्रीलिंग ईकारांत 'नदी' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| (प्र०)— | नदी | नदियाँ |
| | **नदी** | **नद्यः** |
| (द्वि०)— | नदी को | नदियों को |
| | **नदीम्** | **नदीः** |
| (तृ०)— | नदी के द्वारा | नदियों के द्वारा |
| | **नद्या** | **नदीभिः** |
| (च०)— | नदी के लिए | नदियों के लिए |
| | **नद्यै** | **नदीभ्यः** |
| (पं०)— | नदी से | नदियों से |
| | **नद्याः** | **नदीभ्यः** |
| (ष०)— | नदी का | नदियों का |
| | **नद्याः** | **नदीनाम्** |
| (स०)— | नदी में | नदियों में |
| | **नद्याम्** | **नदीषु** |
| (सम्बो०)— | हे नदी ! हे नदि ! | हे नदियो ! |
| | **हे नदि !** | **हे नद्यः !** |

(प्र०)— दो नदियाँ
(द्वि०)— दो नदियों को } **नद्यौ**

(तृ०)— दो नदियों के द्वारा
(च०)— दो नदियों के लिए } **नदीभ्याम्**
(पं०)— दो नदियों से

(ष०)— दो नदियों का
(स०)— दो नदियों में } **नद्योः**

### शब्द-कोष

**दासी**—नौकरानी
**पेटी**—सन्दूक
**स्थाली**—हाँड़ी, बटुला, तसला
**शाटी**—साड़ी
**मशकहरी**—मसहरी
**मसी**—काली, मसि, स्याही

**भगिनी**—बहन
**पत्नी**—स्त्री, यज्ञ में सहायिका
**राज्ञी**—रानी
**पृथ्वी**—पृथ्वी, पृथिवी
**पल्ली**—पल्लि, छोटी बस्ती, छिपकिली
**पुष्करिणी**—पोखरा

**लेखनी**--कलम
**कर्तरी**--कैंची
**खनी**--खनि, खान
**जननी**--जननेवाली, माता
**वटी**--बरी (गोली)
**त्रपुषी**--क्षीरा, खीरा
**आढकी**--अरहर
**कर्कटी**--ककड़ी

## अनुवाद

**दासी कुम्भं नयति**--नौकरानी घड़ा ले जाती है।
**पल्ल्यां पुष्करिणी अस्ति**--बस्ती में पोखरा है।
**पेटिकायां शाट्यः सन्ति**--सन्दूक में साड़ियाँ हैं।
**राज्ञी जननीम् प्रणमति**--रानी माँ को प्रणाम करती है।
**मसीपात्रे मसी नास्ति**--दावात में रोशनाई नहीं है।
**रामः छुरिकया लेखनीं तेजयति**--राम छुरी से कलम तेज करता है।
**गोपालस्य पत्नी मसूरस्य वटीः पचति**--गोपाल की स्त्री मसूर की बड़ियाँ पकाती हैं।
**क्षेत्रे कर्कटी अस्ति**--खेत में ककड़ी है।
मनुष्य पृथ्वी पर बसते हैं--**मनुष्याः पृथिव्यां वसन्ति।**
सन्दूक में रुपये हैं--**पेट्यां मुद्राः सन्ति।**
रानी की दासी आती है--**राज्ञ्याः दासी आगच्छति।**
थाली में रोटी है--**भोजनपात्रे रोटिका अस्ति।**
तालाब में कमल हैं--**पुष्करिण्यां कमलानि सन्ति।**
रसोइया अरहर की दाल पकाता है--**पाचकः आढक्याः सूपं पचति।**
लड़का बड़ी खाता है--**बालकः वटीं खादति।**
खान में सोना है--**खन्यां स्वर्णम् अस्ति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

सन्दूक में कपड़े हैं। केशव की बहन जाती है। थाली में मिठाई (मिष्टान्नं) है। तालाब में पानी नहीं है। बस्ती में कुआँ नहीं है। नाई कैंची से बाल बनाता है (वपति)। खान में हीरे (हीरकाणि) हैं। मसहरी में मच्छर (मशकाः) नहीं आते हैं। लड़का लोहे की लेखनी से लिखता है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

दासी मशकहरीम् आनयति (लाती है)। पुष्करिण्यां मत्स्याः सन्ति। रामस्य भगिनी पुस्तकं पठति। मनुष्याः खनिं खनन्ति (खोदते हैं)। छात्रः लेखन्यौ नयति। जनन्याः शाटी अस्ति। बालकः मसीं घोलयति (घोलता है)।



***

# सप्तमः पाठः

## पुँल्लिग उकारांत 'साधु' शब्द

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| (प्र०)— | साधु, साधु ने<br>**साधुः** | साधुओं ने<br>**साधवः** |
| (द्वि०)— | साधु को<br>**साधुम्** | साधुओं को<br>**साधून्** |
| (तृ०)— | साधु के द्वारा<br>**साधुना** | साधुओं के द्वारा<br>**साधुभिः** |
| (च०)— | साधु के लिए<br>**साधवे** | साधुओं के लिए<br>**साधुभ्यः** |
| (पं०)— | साधु से<br>**साधोः** | साधुओं से<br>**साधुभ्यः** |
| (ष०)— | साधु का<br>**साधौ** | साधुओं का<br>**साधूनाम्** |
| (स०)— | साधु में<br>**साधौ** | साधुओं में<br>**साधुषु** |
| (संबो०)— | हे साधु! हे साधो!<br>**हे साधो!** | हे साधुओ!<br>**हे साधवः!** |

**द्विवचन के रूप—**

| | | |
|---|---|---|
| (प्र०)— | दो साधु | साधू |
| (द्वि०)— | दो साधुओं को | |
| (तृ०)— | दो साधुओं के द्वारा | साधुभ्याम् |
| (च०)— | दो साधुओं के लिए | |
| (पं०)— | दो साधुओं से | |
| (ष०)— | दो साधुओं का | साध्वोः |
| (स०)— | दो साधुओं में | |

**शब्द-कोष**

| | |
|---|---|
| गुरु—गुरु | मृत्यु—मौत, यम |
| प्रभु—स्वामी, मालिक | विन्दु—बूँद |
| बन्धु—बंधु | सेतु—पुल |
| शत्रु, रिपु—दुश्मन | हेतु—कारण |
| वायु—पवन, हवा | पशु—जानवर |

भानु—सूर्य
कृशानु—अग्नि
विधु, इन्दु—चंद्र, चंद्रमा
सिन्धु—समुद्र
ऋतु—ऋतु, मौसिम
तरु—पेड़, वृक्ष
दस्यु—डाकू
मधु—वसंत, चैत्र, एक राक्षस
कमण्डलु—कमंडलु
सक्तु—सत्तू (केवल बहुवचन) सक्तवः
बाहु—बाँह
ओतु—बिड़ाल
तन्तु—ताँत, डोरी
ऋतु—यज्ञ
आखु—मूषिक, चूहा
इक्षु—ईख
अंशु—किरण
पांसु—धूलि
ऊरु—घुटने के ऊपर का भाग
सूनु—बेटा, पुत्र
भिक्षु—भिक्षुक, संन्यासी, भिखारी
जन्तु—प्राणी, जीव

## अनुवाद

**गुरुः आगच्छति**—गुरु आते हैं।
**विधुः उदेति**—चंद्रमा उगता है।
**वायुः चलति**—हवा चलती है।
**कृषकः इक्षो रसं पिबति**—किसान ईख का रस पीता है।
**दस्यूनां मृत्युः भवति**—डाकुओं की मृत्यु होती है।
**पशवः पांसौ लुठन्ति**—जानवर धूलि में लोटते हैं।
**भानोः अंशवः भूमौ निपतन्ति**—सूर्य की किरणें भूमि पर पड़ती हैं।
**मधौ ऋतौ तरुषु पुष्पाणि जायन्ते**—वसंत ऋतु में वृक्षों में फूल लगते हैं।
हवा के जोर से पेड़ गिरते हैं—**वायोः वेगेन तरवः पतन्ति।**
भिखमंगे के हाथ में कमण्डलु है—**भिक्षुकस्य पाणौ कमण्डलुः अस्ति।**
वानर समुद्र में पुल बनाते हैं—**कपयः सिन्धौ सेतुं रचयन्ति।**
ब्रह्मा के ऊरुओं से वैश्य निकले—**विधेः ऊरुभ्यां वैश्याः अजायन्त।**
ग्रीष्म में पशुओं की मृत्यु होती है—**ग्रीष्मे पशूनां मृत्युः भवति।**
बिलार चूहे को खाता है—**ओतुः आखुं खादति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

ब्रह्मा की बाँहों से क्षत्रिय निकलते हैं। जुलाहा (तन्तुवायः) वस्त्र बुनता है। कमंडलु से पानी की बूँदें गिरती हैं। ईख के रस से चीनी बनती है (जायते)। शत्रुओं की मृत्यु से आमोद होता है। मालिक का बेटा नौकर की जाँघ पर खेलता है। यज्ञ में अग्नि की पूजा होती है। गुरु

लड़के की मृत्यु का कारण पूछते हैं(पृच्छति)। सूर्य की किरणों से कीटाणु नष्ट होते हैं (नश्यन्ति)। लड़का सत्तू खाता है। समुद्र में बहुत से प्राणी रहते हैं (निवसन्ति)।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

छात्राः गुरून् प्रणमन्ति। बन्धूनां मृत्युभिः दुःखं भवति। दिने भानुः भाति (चमकता है)। रात्रौ इन्दुः उदेति। वायुः वाति (बहती है)। मधौ तरवः फुल्लन्ति (फूलते हैं)। भिक्षोः सूनुः पांसौ खेलति (खेलता है)। दस्यवः मनुष्याणां शत्रवः सन्ति। ऋतुना रिपवः नश्यन्ति। भिक्षुः सक्तून् खादति। आखुः तन्तुं छिनत्ति (काटता है)। बालिका सूत्रं कृन्तति (कातती है)।

***

# अष्टमः पाठः

## स्त्रीलिंग उकारांत 'धेनु' शब्द

**उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप प्रायः 'साधु' शब्द के समान होते हैं। केवल दो विभिन्नताएँ हैं--**

| | **एकवचन** | **ब० व०** |
|---|---|---|
| **द्वि०--** | × | गायों को<br>**धेनूः** ('धेनून्' नहीं) |
| **तृ०--** | गाय के द्वारा<br>**धेन्वा** ('धेनुना' नहीं) | × |

**चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी तथा सप्तमी एकवचन के वैकल्पिक रूपों के लिए उपक्रमणिका देखिए।**

### शब्द-कोष

| | |
|---|---|
| **स्नायु**--रग | **चञ्चु**--चोंच |
| **तनु**--शरीर | **उडु**†--तारा |
| **रेणु***--धूलि | **रज्जु**--रस्सी |

### अनुवाद

**धेनुः चरति**--धेनु चरती है। **उडवः भान्ति**--सितारे चमकते हैं।
**काकः चञ्च्वा जलं पिबति**--कौआ चोंच से पानी पीता है।
**छत्रं तनुं रक्षति**--छाता शरीर को बचाता है।
**गोपः रज्ज्वा वत्सं बध्नाति**--ग्वाला रस्सी से बछड़े को बाँधता है।



* पुं० रेणु साधुवत्। † नपुं० उडु मधुवत्।

धेनु का बछड़ा दूध पीता है--**धेनोः वत्सः दुग्धं पिबति।**
भिखमंगे के शरीर पर वस्त्र नहीं है--**भिक्षोः तनौ वस्त्रं नास्ति।**
आँखों में धूलि पड़ती है--**नेत्रयोः रेणुः पतति।**
बगुले की चोंच में मछली है--**बकस्य चञ्चौ मत्स्यः अस्ति।**
रस्सी में साँप का भ्रम होता है--**रज्जौ सर्पस्य भ्रमः भवति।**

### अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

गाय का बछड़ा दौड़ता है। कौए की चोंच में रस्सी है। उसके शरीर पर धूलि है। दो सितारे चमकते हैं। दो गायें आती हैं। लोग गाय का दूध पीते हैं।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

. धेनू चरतः। कृषकः रज्जुम् आनयति। उडूनां पङ्क्तयः भान्ति। रेणौ मणिः अस्ति। बालकः छुरिकया रज्जुं छिनत्ति (काटता है)।

***

# नवमः पाठः

## अन्य स्वरांत शब्द

ऋकारांत आदि शब्दों के रूप जो व्याकरण की पुस्तक में दिए गए हैं, भलीभाँति हृदयंगम कर पूर्वोक्त रीति से वाक्य-रचना का अभ्यास बढ़ाना चाहिए। यहाँ कुछ ऋकारांतादि शब्द और उनके प्रयोग दिखलाए जाते हैं।

### ऋकारान्त शब्द (पुं०)

पितृ--बाप, पिता
भ्रातृ--भाई, भ्राता
जामातृ--दामाद, जामाता
देवृ--देवर, देवा
नृ--मनुष्य, ना
नप्तृ--नाती, नप्ता
भर्त्तृ--स्वामी, भर्त्ता

रक्षितृ--रक्षिता, बचानेवाला
दातृ--दाता, देनेवाला
नेतृ--नेता, ले चलनेवाला
भोक्तृ--खानेवाला, भोक्ता
जेतृ--जीतनेवाला, जेता
कर्त्तृ--करनेवाला, कर्त्ता
वक्तृ--बोलनेवाला वक्ता

## ऋकारांत शब्द (स्त्री०)

**मातृ**--माँ, माता
**स्वसृ**--बहन, स्वसा, भगिनी
**दुहितृ**--बेटी, दुहिता, आत्मजा
**ननान्दृ**--ननद, ननान्दा
**यातृ**--गोतिन, याता
**विमातृ**--सौतेली माँ, विमाता

## अनुवाद

मेरे पिता आए--**मम पिता आगतवान्।**
उसके चार भाई हैं--**तस्य चत्वारः भ्रातरः सन्ति।**
उसके दामाद को देखो--**तस्य जामातरं पश्य।**
वह अपने देवर को पढ़ाती है--**सा स्वकीयं देवरं पाठयति।**
मैं आपका नाती हूँ--**अहं भवतः नप्ता अस्मि।**
वह स्वामी के साथ जंगल को गई--**सा भर्त्रा सह वनं गता।**
बगीचे का रक्षक कौन है?--**वाटिकायाः रक्षिता को वर्त्तते?**
यहाँ एक मनुष्य है--**अत्र एको ना वर्त्तते।**
आपलोग दाता हैं--**भवन्तो दातारः सन्ति।**
इस दल का नेता कौन है?--**कोऽस्य पक्षस्य नेता?**
यहाँ सबके-सब वक्ता हैं--**अत्र सर्वे वक्तारः।**
खानेवाले ब्राह्मणों को बुलाओ--**भोक्तॄन् ब्राह्मणान् आमन्त्रयस्व।**
जहाँ श्रोता ही नहीं है वहाँ वक्ता लोग क्या करेंगे--
**"वक्तारः किं करिष्यन्ति, यत्र श्रोता न विद्यते"।**
माता का स्नेह कैसा होता है?--**मातुः स्नेहः कीदृशो भवति?**
वह बहन को रुलाता है--**स स्वसारं क्रन्दयति।**
माँ लड़कियों को प्यार करती है--**माता दुहितृषु स्निह्यति।**
भौजाई ननद से हँसी करती है--**भ्रातृजाया ननान्द्रा सह परिहासं करोति।**
गोतिनों में झगड़ा नहीं होता है--**यातृषु कलहो न भवति।**
वह मेरी सौतेली माँ है--**सा मे विमाता विद्यते।**

## कुछ अन्य स्वरान्त शब्द

**रै** (स्त्री०)--धन
**गो** (पुं०) बैल (स्त्री०)--गाय
**नौ** (स्त्री०)--नाव
**ग्लौ** (पुं०)--चंद्रमा

नाव पर बहुत-सा धन है--**नावि प्रचुराः रायः सन्ति।**
मुझे तीन गायें हैं--**मम तिस्रः गावः सन्ति।**

अँधेरे पख में चंद्रमा घटता है--**कृष्णे पक्षे ग्लौः क्षयति।**

### अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

उसका (तस्य) बाप आता है। भाइयों में मेल (ऐक्यम्) है। उसका दामाद बड़ा ही शरमीला (लज्जालुः) है। स्त्री अपने (निजं) देवर से पूछती है। सबके रक्षक राम हैं। वह अपने स्वामी के आगे (अग्रे) ननद की शिकायत (निन्दा) करती है। इन (एतेषां) मनुष्यों का (नृणाम्) नेता कौन है? बोलनेवाले बहुत हैं, करनेवाले कम। वह खानेवालों के लिए परोसती है। उसकी माँ बहुत बूढ़ी हो गई है। गणेश की बहन स्कूल में पढ़ती है। बूढ़े ने अपनी लड़कियों को बुलाया। ननद भौजाई से डाह नहीं रखती है (ईर्ष्यति)। मूर्ख गोतिनें आपस में (परस्परं) खूब लड़ती हैं (कलहायन्ते)। दुष्ट सौतेली माँ लड़की को दुख देती है (पीडयति)। मल्लाह नाव खेता है (चालयति)। जीतनेवाले का झंडा (पताका) फहराता है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

पितरं प्रणम। तस्य मातापितरौ निर्धनौ स्तः। सा भर्तारं कथयति। पितुः भ्राता पितृव्यः (चाचा) कथ्यते (कहा जाता है)। भ्रातुः पुत्रः भ्रातृजः (भतीजा) भवति। तव जामातुर्भ्राता मे श्यालः (साला) वर्त्तते। तस्य नप्ता मम पौत्रः (पोता) वर्त्तते। अयं ना (मनुष्य) तस्याः ननान्दृपतिः। मूर्खाः यातरः भ्रातृषु वैमनस्यम् (मनमुटाव) उत्पादयन्ति (पैदा करती हैं)। सर्वेषां रक्षिता रामचन्द्रः। कोषे विपुलाः रायः सञ्चिताः वर्त्तन्ते। दाता विप्राय गां ददाति। ग्लावि कलङ्को वर्त्तते।

***

# दशमः पाठः

## व्यंजनांत शब्द

**भिन्न-भिन्न व्यंजनान्त शब्दों के रूप कैसे चलते हैं, यह व्याकरण की पुस्तक में देख लेना चाहिए। इन पाठों में कुछ व्यंजनान्त शब्द और उनके प्रयोग दिखलाए जाते हैं।**

### चकारांत शब्द

| | |
|---|---|
| जलमुच् (पु०)—मेघ। | शुच् (स्त्री०)—शोक। |
| वाच् (स्त्री०)—[illegible], बोली, वाणी। | रुच् (स्त्री०)—चमक, दीप्ति। |
| त्वच् (स्त्री०)—त्वचा, छाल, चमड़ा। | ऋच् (स्त्री)—ऋग्वेद का मंत्र। |

## जकारांत शब्द

वणिज् (पुँ०)—व्यापारी।
भिषज् (पुँ०)—वैद्य।
बलिभुज् (पुँ०)—कौआ, काक।
हुतभुज् (पुँ०)—अग्नि, अनल।

सम्राज् (पुँ०)—सम्राट्।
भूभुज् (पुँ०)—राजा।
स्रज् (स्त्री०)—माला।
रुज् (स्त्री०)—रोग।

## तकारांत शब्द

भूभृत् (पुँ०)—पहाड़, पर्वत, राजा।
मरुत् (पुँ०)—हवा, पवन, वायु।
दिनकृत् (पुँ०)—सूर्य।
शशभृत् (पुँ०)—चंद्रमा, चंद्र।
परभृत् (पुँ०)—कौआ।

विद्युत् (स्त्री०)—बिजली।
तडित् (स्त्री०)—बिजली।
चित् (स्त्री०)—चित्त।
सरित् (स्त्री०)—नदी।
योषित् (स्त्री०)—स्त्री।

## तकारांत विशेषण

(१) सामान्य—

महत्—बड़ा, महान्।
बृहत्—बड़ा।

हरित्—हरा, हरित, दिशा।
विपश्चित्—पंडित, विद्वान।

(२) 'शतृ' प्रत्ययांत—

गच्छत्—जाता हुआ।

पश्यत्—देखता हुआ।

(३) 'तवत्' प्रत्ययांत—

गतवत्—गया हुआ, गया।

कृतवत्—कर चुका हुआ, किया।

(४) 'वत्' वा 'मत्' प्रत्ययांत—

भगवत्—भगवान्, छह ऐश्वर्योंवाला।
विद्यावत्—विद्यावान्, विद्यावाला।

श्रीमत्—श्रीमान् (श्रीवाला)।
हनूमत्—हनूमान् (हनूवाला)।

## दकारांत शब्द

सुहृद् (पुँ०)—मित्र।
सभासद् (पुँ०)—सभासद् (सभा में बैठनेवाला)
कलाविद् (पुँ०)—कला जाननेवाला।
दिविषद् (पुँ०)—देवता (स्वर्ग में बैठनेवाला)

गोत्रभिद् (पुँ०)—इंद्र (पर्वत भेदन करनेवाला)
सम्पद् (स्त्री०)—संपत्ति।
विपद्, आपद् (स्त्री०)—विपत्ति।
शरद् (स्त्री०)—शरद्ऋतु।
मृद् (स्त्री०)—मिट्टी, मृत्तिका।
परिषद् (स्त्री०)—सभा।

## धकारांत शब्द

**समिध्** (स्त्री०)—लकड़ी, होमीय काष्ठविशेष।
**वीरुध्** (स्त्री०)—लता।

**युध्** (स्त्री०)—लड़ाई, युद्ध।
**क्षुध्** (स्त्री०)—भूख, क्षुधा।

## नकारांत शब्द

### (१) पुँल्लिग—

**राजन्**—राजा, नृप, भूप।
**युवन्**—जवान, युवक, तरुण।
**मूर्द्धन्**—मस्तक।
**मघवन्**—इंद्र, मघवा।
**लघिमन्**—हलकापन, लघिमा।
**गरिमन्**—भारीपन, गरिमा।
**महिमन्**—बड़प्पन, महिमा।
**नीलिमन्**—नीलापन, नीलिमा।

**आत्मन्**—आत्मा।
**अध्वन्**—रास्ता, अध्वा।
**ऊष्मन्**—गर्मी, ऊष्मा।
**ब्रह्मन्**—ब्रह्मा।
**अश्मन्**—पत्थर, अश्मा।
**श्वन्**—कुत्ता, श्वा।
**पथिन्**—रास्ता, पंथा।
**कालिमन्**—कालापन, कालिमा।

### (२) नपुंसक लिंग—

**नामन्**—नाम।
**जन्मन्**—जन्म।
**कर्मन्**—कर्म।
**धामन्**—तेज, धाम, स्थान, गृह।
**वेश्मन्**—घर, वेश्म।
**पर्वन्**—त्योहार, पर्व।
**अहन्**—दिन।

**प्रेमन्**—प्रेम।
**हेमन्**—हेम, सुवर्ण, सोना।
**भस्मन्**—राख, भस्म।
**चर्मन्**—चर्म, चमड़ा।
**व्योमन्**—व्योम, आकाश।
**रोमन्**—रोम, रोआँ।
**शर्मन्**—सुख, शर्म।

### (३) 'इन्' भागांत विशेषण—

**गुणिन्**—गुणवाला, गुणी।
**धनिन्**—धनवाला, धनी।
**प्राणिन्**—जीव, प्राणवाला, प्राणी।
**रोगिन्**—रोगी।
**दोषिन्**—दोषी।
**पक्षिन्**—चिड़िया, खग, पक्षी।
**द्वीपिन्**—बाघ, द्वीपी, व्याघ्र।
**हस्तिन्**—हाथी, हस्ती, करी।
**केसरिन्**—सिंह, केसरी।

**साक्षिन्**—साक्षी, गवाह।
**मन्त्रिन्**—मंत्री।
**एकाकिन्**—अकेला।
**वैरिन्**—शत्रु, बैरी।
**योगिन्**—योगी।
**सन्यासिन्**—संन्यासी।
**तपस्विन्**—तपस्वी।
**स्वामिन्**—मालिक, प्रभु।
**विद्यार्थिन्**—विद्यार्थी, विद्या चाहनेवाला।

## शकारांत शब्द

दिश् (स्त्री०)--दिशा।
दृश् (स्त्री०)--दृष्टि।
ईदृश् (पुँ०)--ईदृश, ऐसा।
तादृश् (पुँ०)--तादृश, वैसा।

## सकारांत शब्द

(१) पुँल्लिग--

वेधस्--ब्रह्मा, वेधाः।
चन्द्रमस्--चंद्रमा, चंद्र।
दिवौकस्--देवता ( दिव्+ओकस् जिसका वह)
विद्वस्--विद्वान्।
लघीयस्--अधिक हल्का, लघुतर।
पुंस्--पुरुष, पुमान्।

(२) स्त्रीलिंग (बहुव०)

अप्सरस्--अप्सरा।

(३) नपुंसकलिंग--

तपस्--तपस्या।
वयस्--अवस्था, पक्षी।
चेतस्--चित्त।
उरस्--छाती।
वक्षस्--छाती।
तमस्--अँधेरा, अंधकार।
तेजस्--तेज।
नभस्--आकाश।
पयस्--जल, दूध, दुग्ध।
यशस्--यश, कीर्त्ति।
सुमनस्--फूल, पुष्प।
शिरस्--सिर, मस्तक।
चक्षुस्--आँख, नेत्र, नयन।
वासस्--वस्त्र, वसन, कपड़ा।
रजस्--धूलि।
सरस्--सरोवर।
मनस्--मन।
वचस्--वचन।
सर्पिस्--घी, घृत।
धनुस्--धनुष।
वपुस्--शरीर।

**टिप्पणी**--अस्मद् (**मैं**), युष्मत्, (**तुम**), तत् (**वह**), भवत् (**आप**) आदि सर्वनामों के रूप व्याकरण की पुस्तक में देखकर कंठस्थ कर लेना चाहिए।

## अनुवाद

बिजली चमकती है--**विद्युत् (तडित्) द्योतते।**
मेघ बरसते हैं--**जलमुचः वर्षन्ति।**

पहाड़ से नदी निकलती है--**भूभृतः सरित् निःसरति।**
हवा के जोर से लताएँ हिलती हैं--**मरुतः वेगात् वीरुधः वेपन्ते।**

वैद्य रोगों को दूर करता है—**भिषक् रुजः निवारयति।**
सम्राट् राजाओं से कर लेता है—**सम्राट् भूभृग्भ्यः करं गृह्णाति।**
व्यापारी लोग धनी होते हैं—**वणिजः धनिनो भवन्ति।**
वह सिर पर माला रखता है—**सः शिरसि स्रजं धारयति।**
चित्त में शोक मत करो—**चेतसि शुचं न कुरु।**
सम्पत्ति में बहुत से मित्र हो जाते हैं—**सम्पदि बहवः सुहृदः जायन्ते।**
रास्ते में एक कुत्ता है—**पथि एकः श्वा वर्त्तते।**
शरद् ऋतु में सरोवरों के जल साफ हो जाते हैं—**शरदि सरसां पयांसि निर्मलानि भवन्ति।**
राजा के घर में सोने के फूल हैं—**राज्ञः वेश्मनि हेम्नः सुमनांसि वर्त्तन्ते।**
सभा में विद्वान् सभासद् मौजूद हैं—**सदसि विद्वांसः सभासदः उपस्थिताः सन्ति।**
उस पुरुष का नाम क्या है?—**तस्य पुंसः किं नाम वर्त्तते?**
त्योहार के दिन में सुंदर वस्त्र पहनना चाहिए—**पर्वणः अहनि सुन्दरं वासः परिधातव्यम्।**
पुरुष कर्मों से बड़े होते हैं न कि जन्म से—**पुमांसः कर्मभिः महान्तः भवन्ति न तु जन्मना।**
**नभसि चन्द्रमसं पश्यामः**—(हमलोग) आकाश में चंद्रमा को देखते हैं।
**संन्यासी मूर्ध्नि भस्म लिम्पति**—संन्यासी सिर में भस्म लेपता है।
**परभृतानां मधुराः वाचः भवन्ति**—कोयलों की कूकें मीठी होती हैं।
**बलिभुजः कर्कशं वचः**—कौए की बोली कड़ी होती है।
**तपस्विनां कृते विद्यार्थिनः समिधः आनयन्ति**—तपस्वियों के लिए विद्यार्थी यज्ञ की लकड़ियाँ लाते हैं।
**मघोनः सदसि अप्सरसः नृत्यन्ति**—इंद्र की सभा में अप्सराएँ नाचती हैं।
**वेधाः सर्वेभ्यः प्राणिभ्यः जन्मानि ददाति**—ब्रह्मा सब प्राणियों को जन्म देते हैं।
**श्वानः केशरिणः चर्म दृष्ट्वा पलायन्ते**—कुत्ते सिंह का चमड़ा देखकर भागते हैं।
**योगिनः मनसा वाचा कर्मणा शुद्धाः भवन्ति**—योगी लोग मन, वचन और कर्म से शुद्ध होते हैं।
**विपश्चितः विपदि शुचं न कुर्वन्ति**—पंडितगण विपत्ति में सोच नहीं करते हैं।
**महात्मानः वैरिणामपि हृदयं प्रेम्णा जयन्ति**—महात्मा लोग शत्रुओं के भी हृदय को प्रेम से जीत लेते हैं।
**मृदः अश्मा गरीयान् भवति**—मिट्टी से पत्थर भारी (गुरुतर) होता है।

**अस्य सम्राजः यशः चतसृषु दिक्षु व्याप्तम्**—इस सम्राट् का यश चारों ओर फैल गया है।

**जीर्णानि वासांसि परित्यज**--पुराने कपड़ों को छोड़ो।
**यादृशं कर्म तादृशं फलं भवति**--जैसा कर्म वैसा फल होता है।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु**--

विद्यार्थी का नाम क्या है? संन्यासियों के घर नहीं होते हैं। तपस्विगण तपस्या के द्वारा आत्मा को शुद्ध करते हैं (शोधयन्ति)। ये लोग (एते जनाः) अपराधी के गवाह हैं। राजा का मंत्री बड़ा बुद्धिमान् है। चिड़िया घोंसलों को (नीडान्) जाती है। हाथी सूँड़ से (शुण्डेन) पानी लेकर (गृहीत्वा) सिर पर छिड़कता है (सिञ्चति)। वह धनुष लेकर लड़ाई में जाता है। सौदागर का लड़का जवान है। तुम्हारी त्वचा पर रोएँ नहीं हैं। देवताओं की बड़ी महत्ता होती है। धूलि से कपड़े गंदे हो जाते हैं। क्षत्रिय लोग ब्रह्मा की बाँहों से निकले (अजायन्त)। संपत्ति में शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु**---

व्योम्नि नीलिमा वर्त्तते। शशभृत् तमः नाशयति। दिनकृत् प्राच्यां दिशि (पूर्व दिशा में) तेजः विस्तारयति। दिविषदां परिषदि अप्सरसः गायन्ति। गर्दभः द्वीपिनश्चर्मणा वपुः आच्छादितवान् (ढँक लिया)। पयसा सर्पिः निष्पद्यते (बनता है)। योषितः सरिति स्नान्ति। विद्वांसः ऋचः गायन्ति। हनूमान् मरुतः पुत्रः आसीत् (थे)। हुतभुक् हविषा (हवन-सामग्री से) तृप्यति (तृप्त होता है)। महात्मानः सत्यं वचः भाषन्ते। अध्वनि अश्मानः वर्त्तन्ते। अहनि ऊष्मा वर्त्तते। विद्वांसः एव कलाविदो भवन्ति। श्रीमताम् आपदो न भवन्ति। गहना कर्मणो गतिः।

***

# द्वितीय भाग | उद्देश्य के विशेषण

## प्रथमः पाठः

### गुणवाचक विशेषण

काला कुत्ता। काली गाय।

हिंदी में विशेषण का लिंग विशेष्य के अनुसार होता है। संस्कृत में भी यही बात है। निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

कृष्णः कुक्कुरः---काला कुत्ता।
कृष्णा गौः---काली गाय।
कृष्णं चर्म---काला चमड़ा।

काला कुत्ता दौड़ता है। काले कुत्ते दौड़ते हैं।

हिंदी में विशेषण का वचन विशेष्य के अनुसार होता है। संस्कृत में भी यही बात है। जैसे,

कृष्णः कुक्कुरः धावति---काला कुत्ता दौड़ता है।
कृष्णाः कुक्कुराः धावन्ति---काले कुत्ते दौड़ते हैं।

संस्कृत में जो विभक्ति विशेष्य में लगती है वही विशेषण में भी जोड़ी जाती है। जैसे,

अच्छा लड़का=उत्तमः बालकः।
अच्छे लड़के को=उत्तमं बालकम्।
अच्छे लड़के के द्वारा=उत्तमेन बालकेन।
अच्छे लड़के के लिए=उत्तमाय बालकाय।
अच्छे लड़के से=उत्तमात् बालकात्।
अच्छे लड़के का=उत्तमस्य बालकस्य।
अच्छे लड़के में=उत्तमे बालके।

#### शब्द-कोष

मीठा=मधुर | पुराना=पुरातन, पुराण, प्राचीन
तीता=तिक्त | उजला=उज्ज्वल, श्वेत, सित

खट्टा=अम्ल
ठंढा=शीतल
गर्म=उष्ण
बड़ा=दीर्घ, विशाल
छोटा=क्षुद्र
साफ=स्वच्छ, निर्मल
गंदा=मलिन
नया=नव, नवीन, नूतन

काला=कृष्ण, काल
नीला=नील
पीला=पीत
हरा=हरित
लाल=रक्त
पका=पक्व
सूखा=शुष्क
सुंदर=सुंदर, रम्य, शोभन

इन विशेषणों के रूप पुँल्लिग में 'बालक' शब्द के समान, नपुंसक लिंग में 'फल' शब्द के सदृश और स्त्रीलिंग में आकारांत 'लता' शब्द के समान चलेंगे।

## अनुवाद

मीठा सन्देश=**मधुरः सन्देशः।**
मीठी बात=**मधुरा वार्त्ता।**
मीठे आम=**मधुराणि आम्राणि।**

हरा पेड़=**हरितः वृक्षः।**
हरी दूब=**हरिता दूर्वा।**
हरा अन्न=**हरितम् अन्नम्।**

**रम्यः वृक्षः**=सुंदर पेड़।
**रम्या वाटिका**=सुंदर फुलवारी।
**रम्यं सरः**=सुंदर सरोवर।

**नीलः शृगालः**=नीला गीदड़।
**नीला शाटी**=नीली साड़ी
**नील कमलम्**=नीला कमल।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

ठंढा पानी। ठंढी हवा। ठंढी बर्फ (हिमम्)। सूखा तालाब (तडागः)। सूखी नदी। सूखे पत्ते। पके आम। साफ पानी। साफ वस्त्र। बड़ा साँप। बड़ी नदी। बड़ी आँखें। छोटी किताब। छोटी नदियाँ। पीला चंदन। पीले फूल। नीला आकाश। उजली साड़ी। उजले सितारे। गर्म दूध। खट्टी इमली (चिञ्चा)। खट्टे अंगूर (द्राक्षाः)। तीती दवा। सुंदर लड़के। सुंदर फुलवाड़ी।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

नवं वस्त्रम्। नवं छत्रम्। नवा स्त्री। अम्लानि फलानि। दीर्घाणि पुस्तकानि। विशालः मत्स्यः। शीतलं जलम्। शुष्कं पात्रम्। शुष्कः वृक्षः। रम्याणि पुष्पाणि। मलिनं वस्त्रम्। पीतम् अम्बरम् (वस्त्र)। नीलः अश्वः। दीर्घः केशः। उज्ज्वलः दन्तः। कृष्णा भ्रूः। अम्ल दधि। पक्वानि फलानि। नवम् अन्नम्। मधुरं पयः। पुरातनी रीतिः।



***

# द्वितीयः पाठ.

## सार्वनामिक विशेषण

यह लड़का। यह लड़की।

हिंदी में सार्वनामिक विशेषण पुँल्लिग और स्त्रीलिंग दोनो ही में एक-से आए हैं। किंतु संस्कृत में इनका लिंग-भेद से रूपांतर हो जाएगा। जैसे,

**अयं बालकः। इयं बालिका।**

निम्नलिखित वाक्यों से यह बात प्रकट हो जाएगी--

यह=**इदम्।**
यह लड़का=**अयं बालकः।** यह लड़की=**इयं बालिका।**
यह किताब=**इदं पुस्तकम्।**

यह=एतत्।
यह विद्यार्थी=एषः छात्रः। यह स्त्री=एषा नारी। यह फूल=एतत् पुष्पम्।

वह=**अदस्।**
वह पहाड़=**असौ गिरिः।** वह नदी=**असौ नदी।** वह फल=**अदः फलम्।**

वह=**तद्।**
वह हाथी=**सः गजः।** वह गाय=**सा धेनुः।** वह मित्र=**तत् मित्रम्।**

| | | ए० व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|---|
| | | (यह) | (ये दोनों) | (ये) |
| यह= | पुँ० | अयम् | इमौ | इमे |
| | | एषः | एतौ | एते |
| | स्त्री० | इयम् | इमे | इमाः |
| | | एषा | एते | एताः |
| | न० | इदम् | इमे | इमानि |
| | | एतत् | एते | एतानि |
| | | (वह) | (वे दोनों) | (वे) |
| वह= | पुँ० | असौ | अमू | अमी |
| | | सः | तौ | ते |
| | स्त्री० | असौ | अमू | अमूः |
| | | सा | ते | ताः |
| | न० | अदः | अमू | अमूनि |
| | | तत् | ते | तानि |

टिप्पणी—शेष विभक्तियों के रूप किसी व्याकरण की पुस्तक से रट लेना चाहिए।

### अनुवाद

यह धूप=एषः धूपः।
ये दोनों छात्र=एतौ छात्रौ।
ये फूल=एतानि पुष्पाणि।
वे पेड़=अमी वृक्षाः।
वे दोनों पक्षी=अमू पक्षिणौ।
वह राजा=स राजा।
वे दोनों राक्षस=तौ राक्षसौ।
वे बानर=ते कपयः।

### अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

यह पहाड़। यह नदी। यह किताब। ये दोनों फूल। ये दोनों लड़कियाँ। ये दोनों आदमी। वह लड़का। वह रानी (राज्ञी)। वह मकान। वे दोनों नौकर। वे दोनों बहनें। वे दोनों मित्र। यह कपड़ा। ये रुपए (मुद्राः)। ये बर्तन (पात्राणि)। ये कुत्ते। वे घोड़े। वे गायें। वे पत्ते। वे दोनों आदमी।

### अनुवाद

**अमुं छात्रम्**=उस लड़के को।
**एतस्मै बालकाय**=इस लड़के के लिए।
**तेन राज्ञा**=उस राजा के द्वारा।
**तस्मात् स्थानात्**=उस स्थान से।
**तस्मिन् ग्रामे**=इस गाँव में।
**तस्य मनुष्यस्य**=उस आदमी का।
**तस्याः स्त्रियः**=उस स्त्री का।
**एतेषां बालकानाम्**=इन लड़कों का।
**एतासां बालिकानाम्**=इन लड़कियों का।

### अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

अमून् वृक्षान्। अमूः लताः। अमुं पशुम्। अमुं धेनुम्। इमं पुरुषम्। इमां नारीम्। इदं मित्रम्। अस्मै देवाय। अस्यै देव्यै। अस्मात् ग्रामात्। एतस्मात् कारणात्। तस्य राज्ञः। तेषां ब्राह्मणानाम्। तस्मिन् दिने। एतस्मात् कारणात्। तस्य राज्ञः। तेषां ब्राह्मणानाम्। तस्मिन् दिने। तस्यां रात्रौ। एतस्य विप्रस्य। तयोः भ्रात्रोः। तेषां पुत्राणाम्। तेन मन्त्रिणा। एतेन बाणेन। एषां पुस्तकानाम्। अस्मिन् गृहे। आसु नदीषु।

### शब्द-कोष

चालाक=चतुरः
बेवकूफ=बुद्धिहीनः, मूर्खः
अन्धा=अन्धः
बहरा=बधिरः

धनी=धनिकः, धनी
गरीब=दरिद्रः, निर्धनः
खूबसूरत=सुरूपः, सुन्दरः
बदसूरत=कुरूपः
सुशील=सुशीलः
दुष्ट=दुष्टः
पढ़ा-लिखा=शिक्षितः
मूर्ख=मूर्खः
गूँगा=मूकः
लँगड़ा=खञ्जः
मोटा=स्थूलः
दुबला=कृशः, दुर्बलः
मजबूत=दृढः, सबलः, बलवान्
कमजोर=निर्बलः
तेज=तीक्ष्णः
भोथा=मन्दः

## अनुवाद

यह लड़का सुशील है=**अयं बालकः सुशीलः अस्ति।**
यह लड़का चालाक है=**इयं बालिका चतुरा अस्ति।**
ये लोग धनी हैं=**एते जनाः धनिकाः सन्ति।**
ये दोनों पण्डित हैं=**इमौ पण्डितौ स्तः।**
वह चाकू तेज है=**असौ छुरिका तीक्ष्णा अस्ति।**
वे घोड़े दुबले हैं=**अमी अश्वाः कृशाः सन्ति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

यह लड़का चालाक है। वह नौकर बेवकूफ है। ये दोनों धनी हैं। ये लड़के गरीब हैं। वह लड़की सुंदरी है। वह जानवर बदसूरत है। ये विद्यार्थी सुशील हैं। वे लड़के दुष्ट हैं। वह आदमी पढ़ा-लिखा है। वह स्त्री पढ़ी-लिखी है। वे दोनों लड़के मूर्ख हैं। वह आदमी गूँगा है। वह भिखमंगा लँगड़ा है। वह बूढ़ी (वृद्धा) अंधी है। यह बकरा मोटा है। वे बंदर बेवकूफ हैं। ये दोनों लड़के मजबूत हैं। यह रस्सी मजबूत है। यह चाकू भोथा है।

## अनुवाद

**अस्य बालकस्य बुद्धिः तीक्ष्णा वर्त्तते**=इस लड़के की बुद्धि तेज है।
**केशवस्य उभौ पुत्रौ मूर्खौ वर्त्तते**=केशव के दोनों लड़के मूर्ख हैं।
**श्यामस्य कन्याः शिक्षिताः वर्त्तन्ते**=श्याम की लड़कियाँ पढ़ी-लिखी हैं।

**अमुष्य वृक्षस्य फलानि पक्वानि वर्त्तन्ते**=उस पेड़ के फल पके हैं।
**तस्य राज्ञः पुत्राः बुद्धिहीनाः सन्ति**=उस राजा के लड़के बेवकूफ हैं।

### अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

अस्य तडागस्य जलं स्वच्छं वर्त्तते। अस्याः पाठशालायाः छात्राः सुशीलाः सन्ति। गोविन्दस्य भगिनी सुरूपा वर्त्तते। अमू मनुष्यौ स्थूलौ वर्त्तेते। अस्य वृक्षस्य पत्राणि शुष्काणि वर्त्तन्ते। तस्य ग्रामस्य जनाः चतुराः सन्ति। असौ भिक्षुः अन्धः वर्त्तते। गोपालस्य पत्नी चतुरा वर्त्तते। एतस्य बालकस्य भ्राता रुग्णः (बीमार) अस्ति। तस्याः बालिकायाः मातुलः (मामा) बधिरः अस्ति। रामस्य कन्ये पण्डिते स्तः। अस्य मनुष्यस्य पुत्राः सबलाः सन्ति।

***

# तृतीयः पाठ

## संख्यावाचक विशेषण

**दो लड़के।** **दो लड़कियाँ।**

**इंदी में संख्यावाचक विशेषण दोनों लिंगों में एक-से आए हैं। किंतु संस्कृत में लिंग-भेद से इनके रूपों में अंतर हो जाता है। निम्नलिखित रूपों को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए--**

| | | |
|---|---|---|
| **एक लड़का** | **एक लड़की** | **एक मित्र** |
| एकः बालकः | एका बालिका | एकं मित्रम् |
| **दो हाथ** | **दो उँगलियाँ** | **दो आँखें** |
| द्वौ हस्तौ | द्वे अंगुली | द्वे नेत्रे |
| **तीन घोड़े** | **तीन गायें** | **तीन किताबें** |
| त्रयः अश्वाः | तिस्रः गावः | त्रीणि पुस्तकानि |
| **चार पेड़** | **चार लताएँ** | **चार फल** |
| चत्वारः वृक्षाः | चतस्रः लताः | चत्वारि फलानि |
| **बहुत विद्यार्थी** | **बहुत नदियाँ** | **बहुत फल** |
| बहवः छात्राः | बह्वयः नद्यः | बहूनि पुष्पाणि |
| **सब आदमी** | **सब स्त्रियाँ** | **सब घर** |
| सर्वे मनुष्याः | सर्वाः स्त्रियः | सर्वाणि गृहाणि |

टिप्पणी--(१) **चार के बाद की संख्याएँ प्रायः तीनों लिंगों में एक समान आती हैं। उनके रूप व्याकरण की किसी पुस्तक में देखकर छात्र कंठस्थ कर लें।**

(२) ऊपर केवल प्रथमा विभक्ति के उदाहरण दिखाए गए हैं। शेष विभक्तियों के रूप व्याकरण की पुस्तक में देखकर मुखस्थ कर लिए जाएँ।

## अनुवाद

इस जंगल में एक सिंह रहता है=**अस्मिन् वने एकः सिंहः निवसति।**
उस खेत में दो बकरियाँ चरती हैं=**तस्मिन् क्षेत्रे द्वे अजे चरतः।**
इस गाँव में तीन वैद्य हैं=**अस्मिन् ग्रामे त्रयः वैद्याः सन्ति।**
इस पेड़ में चार फल हैं=**अस्मिन् वृक्षे चत्वारि फलानि सन्ति।**
इस स्कूल में बहुत विद्यार्थी हैं=**अस्यां पाठशालायां बहवः छात्राः सन्ति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

इस पोखरे में बहुत मछलियाँ हैं। इस गाँव में बहुत आदमी हैं। इस लता में बहुत फूल हैं। उस शहर में एक सेठ (श्रेष्ठी) है। उस देश में एक विचित्र रीति है। उस थाली में दो लड्डू (लड्डूकौ) हैं। दो स्त्रियाँ नदी में नहाती हैं (स्नातः)। उनके बदन पर (शरीरे) तीन गहने (आभूषणानि) हैं। इस मकान में तीन नौकर हैं। इस प्रांत में (प्रान्ते) तीन नदियाँ हैं। उस जेल में (कारायां) चार चोर हैं। बथान में (गोशालायाम्) चार गायें हैं। इस गाड़ी में (शकटे) चार पहिए (चक्राणि) हैं। सब पुस्तकें नई हैं। सब आम पके हैं। सब रुपए अच्छे हैं।

## अनुवाद

**एकस्मिन् हस्ते पञ्च अङ्गुलयः भवन्ति**=एक हाथ में पाँच उँगलियाँ होती हैं।
**अयं पण्डितः षट् शास्त्राणि जानाति**=यह पण्डित छः शास्त्र जानता है।
**एकस्मिन् सप्ताहे सप्त अहानि (दिनानि) भवन्ति**=एक हफ्ते में सात दिन होते हैं।
**एकस्मिन् वर्षे द्वादश मासाः भवन्ति**=एक वर्ष में बारह महीने होते हैं।
**अयं पञ्चदशानां वर्षाणां बालकः विद्यते**=यह लड़का पंद्रह वर्ष का है।

## अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

चत्वारः वेदाः सन्ति। पञ्च पितरः भवन्ति। षट् रसाः वर्त्तन्ते। सप्त द्वीपानि सन्ति। अष्टौ धातवः विद्यन्ते। नवग्रहाः सन्ति। द्वयोः हस्तयोः दश अङ्गुलयः भवन्ति। एकादश रुद्राः सन्ति। सूर्यस्य द्वादश कलाः भवन्ति। अस्यां पङ्क्तौ त्रयोदश ब्राह्मणाः सन्ति। चतुर्दश भुवनानि सन्ति। एकस्मिन्

पक्षे पञ्चदश तिथयः भवन्ति । अयं षोडशानां वर्षाणां बालकः विद्यते । इयं सप्तदशानां वर्षाणां कन्या विद्यते । अष्टादश पुराणानि सन्ति ।

### शब्द-कोष

| | |
|---|---|
| बीस=**विंशतिः।** | हजार **सहस्रम् ।** |
| तीस=**त्रिंशत् ।** | दस हजार=**अयुतम् ।** |
| चालीस=**चत्वारिंशत् ।** | लाख=**लक्षम् ।** |
| पचास=**पञ्चाशत् ।** | दस लाख = **नियुतम् ।** |
| साठ=**षष्टिः ।** | करोड़=**कोटिः ।** |
| सत्तर=**सप्ततिः ।** | दो सौ=**द्विशतम् ।** |
| अस्सी=**अशीतिः ।** | तीन हजार=**त्रिसहस्रम् ।** |
| नब्बे=**नवतिः।** | चार लाख=**चतुर्लक्षम् ।** |
| सौ=**शतम् ।** | पाँच करोड़=**पञ्चकोटिः ।** |

टिप्पणी--(१) उपर्युक्त विशेषण सभी लिंगों के साथ एक समान रहेंगे। जैसे—

**विंशतिः पुरुषाः**--बीस पुरुष। **विंशतिः स्त्रियः**=बीस स्त्रियाँ।
**विंशतिः फलानि**=बीस फल।

(२) 'विंशति' (बीस) से लेकर 'नवति' (नब्बे) तक की संख्याओं के पूर्व एक, द्वा, चतुः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टा और नव जोड़कर आगे की संख्या बनाई जाती है। जैसे--

**एकविंशतिः छात्राः**=इक्कीस विद्यार्थी।
**द्वात्रिंशत् दन्ताः**=बत्तीस दाँत।
**त्रयश्चत्वारिंशत् वृक्षाः**=तैंतालीस पेड़।
**चतुःपञ्चाशत् रौप्यकाणि**=चौवन रुपए।
**पञ्चषष्टिः धेनवः**=पैंसठ गायें।
**षट्सप्ततिः पुस्तकानि**=छिहत्तर पुस्तकें।
**सप्ताशीति फलानि**=सतासी फल।
**अष्टनवतिः पृष्ठानि**=अंठानबे पृष्ठ।

(३) 'शतम्' (सौ) से ऊपर की संख्या बनाने के लिए 'एकोत्तर', 'एकाधिक', 'द्व्यधिक' 'त्र्यधिक', 'चतुरधिक' शब्द जोड़ देने चाहिए। जैसे--एकोत्तरशतं रूप्याणि वा
**एकाधिकशतं रौप्यकाणि**=एक सौ एक रुपए।

अष्टोत्तरशतं वा अष्टाधिकशतं गावः=एक सौ आठ गायें।
पञ्चविंशत्यधिकशतं ब्राह्मणाः=एक सौ पचीस ब्राह्मण।
पञ्चशताधिकद्विसहस्रं वत्सराः=२५०० वर्ष।

### अनुवाद

दस आने=दश आणकाः। पचीस रुपए=पञ्चविंशतिः रौप्यकाणि।
इस बारात में २५० ब्राह्मण हैं=अस्यां वरयात्रायां पञ्चाशदधिकद्विशतं ब्राह्मणाः सन्ति।
उस लड़ाई में पाँच लाख सिपाही हैं=तस्मिन् युद्धे पञ्चलक्षं सैनिकाः सन्ति।
इस संदूक में १५०००) रुपए हैं=अस्मिन् बासके पञ्चसहस्राधिकायुतं रौप्यकाणि सन्ति।
उस पेटी में ७९५) रुपए हैं=तस्यां पेट्यां पञ्चनवत्यधिकसप्तशतं रौप्यकाणि सन्ति।

### अभ्यास

संस्कृतेऽनुवादं कुरु—

तीस बैल। पचपन घोड़े। सत्तर हाथी। एक सौ लड़के। पाँच सौ रुपए। इस गाँव में एक हजार आदमी रहते हैं। उस बारात में सात सौ मनुष्य हैं। खजाने में पचास लाख रुपए हैं। भारतवर्ष में तैंतीस करोड़ मनुष्य रहते हैं। इस पुस्तक में एक सौ पैंतालीस पृष्ठ हैं। वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। इस बाग में चौंसठ पेड़ हैं। उस लाइब्रेरी में (पुस्तकालये) ८९० पुस्तकें हैं।

***

# चतुर्थः पाठ

## तुलनात्मक विशेषण

राम से कृष्ण अधिक तेज है।
हाथी सब जंतुओं में बड़ा होता है।

उपर्युक्त वाक्यों का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में विशेषण के बाद 'तर' और 'तम' प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जहाँ दो में तुलना की जाती है और एक का उत्कर्ष जाना जाता है, वहाँ 'तर' का प्रयोग किया जाता है। जहाँ सबसे अधिक उत्कर्ष जाना जाता है, वहाँ 'तम' का प्रयोग किया जाता है। जैसे



रामात् कृष्णः तीव्रतरः। हस्ती सर्वेषु जन्तुषु बृहत्तमः।

जहाँ दो में तुलना (Comparison) होती है, वहाँ कम गुणवाले में पञ्चमी विभक्ति लगती है। जहाँ सबमें तुलना होती है, वहाँ सप्तमी या षष्ठी विभक्ति लगती है।

कुछ विशेषण ऐसे हैं जिनमें 'तर' के बदले 'ईयस्' * और 'तम' के बदले 'इष्ठ' प्रत्यय जोड़कर भी काम चला सकते हैं। ऐसे विशेषणों के रूप निम्न-लिखित उदाहरणों से मालूम हो जाएँगे।

स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'तर', 'तम' और 'इष्ठ' के बाद 'आ' और 'ईयस्' के बाद 'ई' जोड़ते हैं।

### अनुवाद

मैं हिसाब में उससे ज्यादा पक्का हूँ=**अहं गणिते तस्मात् पटुतरः (पटीयान्)।**
तुम मुझसे छोटे हो=**त्वं मत्तः कनीयान्।**
छोटा लड़का सबसे ज्यादा प्यारा होता है=**कनिष्ठः पुत्रः प्रियतमः (प्रेष्ठः) भवति।**
नदियों में गंगा श्रेष्ठ है=**नदीषु (नदीनां) गङ्गा श्रेष्ठा।**
पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है=**गिरिषु हिमालयः उच्चतमः।**
इस गाँव में वह सबसे बूढ़ा है=**अस्मिन् ग्रामे स वृद्धतमः (वर्षिष्ठः)।**
यह बोझा दोनों में ज्यादा भारी है=**अयं भारो द्वयोः गुरुतरः (गरीयान्)।**
मेरा घर उस जगह से अधिक दूर है=**मम गृहं तस्मात् स्थानात् दूरतरम् (दवीयः)।**
सबसे नजदीक गाँव को चलो=**निकटतमं (नेदिष्ठं) ग्रामं चल।**
मेरे दाँत ज्यादे मजबूत हैं=**मम दन्ताः दृढतराः (द्रढीयांसः)।**
यमुना गंगा से अधिक तेज है=**यमुना गङ्गायाः क्षिप्रतरा (क्षेपीयसी)।**
उसकी लड़की दुबली है=**तस्य कन्या कृशतमा (क्रशिष्ठा)।**
अजगर सब साँपों में बड़ा होता है=**अजगर सर्पेषु (सर्पाणाम्) दीर्घतमः (द्राघिष्ठः) भवति।**
तुम्हारा बछड़ा ज्यादे जवान है=**तव वत्सो यवीयान्।**
यह रास्ता सबसे अच्छा है=**अयं मार्गः साधिष्ठः।**
इस तालाब में सबसे ज्यादे पानी है=**अस्मिन् तडागे भूयिष्ठं जलं वर्त्तते।**

---

* ईयस् प्रत्ययवाले शब्दों के रूप रूपावली की पुस्तक में देखें।

### अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

याचकः तूलादपि लघुतरो भवति। नराणां नापितो धूर्त्तः। पक्षिणां वायसश्चतुरतमः। पशूनां शृगालो धूर्त्ततमः। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः। स मे कनिष्ठो भ्राता। तस्य पुत्राणां गोपाल एव ज्येष्ठः। सतीषु सीता श्रेष्ठा। पापस्य मार्गः प्रेयान्। पुण्यस्य मार्गः श्रेयान्।

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

पशुओं में सिंह सबसे बलवान है। चीनी से शहद ज्यादे मीठा (मिष्टतरम्) होता है। हीरा सबसे ज्यादे बेशकीमती चीज है। चाँदी से सोना भारी होता है। वह गाँव भर में सबसे लंबा आदमी है। यह पुस्तक उससे अच्छी है। सब इंद्रियों में आँखें सुकोमल (कोमलतमे, म्रदिष्ठे) होती हैं। बिल्ली के नाखून ज्यादे तेज (तीक्ष्णतराः) होते हैं। सब जानवरों में गधा बेवकूफ होता है। तुम सबसे ज्यादे होशियार हो। यह कुआँ उससे ज्यादे गहरा है। तुम परीक्षा में सबसे ज्यादा नम्बर (अङ्कम्) लाते हो।

***

# पञ्चमः पाठः

## कृदन्त विशेषण

### (१) शतृ-शानच् प्रत्ययांत

**दौड़ता लड़का गिर पड़ा।**

**बोलता हुआ सुग्गा उड़ गया।**

**उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित पद वर्त्तमानकाल की क्रिया का बोध कराते हैं और साथ ही साथ विशेषण का काम भी करते हैं। इन्हें वर्त्तमानकालिक कृदंत विशेषण कहते हैं।**

**जिस तरह हिंदी में धातु के बाद 'ता' (हुआ) जोड़कर कृदंत विशेषण बनाया जाता है उसी तरह संस्कृत में धातु के बाद 'त्' जोड़कर कृदंत विशेषण बनाया जाता है।**

टिप्पणी--(१) 'त' जोड़ने के पहले धातु का रूप यही हो जाता है जो 'न्ति' जोड़ने के पहले होता है। जैसे,

गम्--गच्छ+त्=गच्छत्। दृश्--पश्य+त्=पश्यत्।

(२) इस 'त्' प्रत्यय को व्याकरण में शतृ प्रत्यय कहते हैं।

पुँल्लिग में शतृ प्रत्ययांत शब्द का प्रथमा एकवचनांत रूप बनाने के लिए 'त्' के स्थान में 'न्' कर देना चाहिए। शेष रूप 'भवत्' (आप) शब्द की तरह चलेंगे।

उदाहरण--

दौड़ता हुआ लड़का=**धावन् बालकः।**
बोलता हुआ सुग्गा=**वदन् शुकः।**
पढ़ता हुआ विद्यार्थी=**पठन् छात्रः।**
रोता हुआ बच्चा=**रुदन् शिशुः।**
नाचते हुए मयूर=**नृत्यन्तौ मयूरौ।**
गाते हुए ब्राह्मण=**गायन्तः विप्राः।**

नपुंसक लिंग में शतृप्रत्ययांत शब्द के रूप 'जगत्' शब्द की तरह चलते हैं। जैसे,

चलती हुई गाड़ी=**चलत् शकटम्।**
घूमता हुआ पहिया=**भ्राम्यत् चक्रम्।**
फड़कती हुई आँखें=**स्फुरन्ती नेत्रे।**
गिरते हुए पत्ते=**पतन्ति पत्राणि।**
सूखते हुए कपड़े=**शुष्यन्ति वस्त्राणि।**

स्त्रीलिंग में शतृप्रत्ययांत शब्द के रूप ईकारांत 'नदी' शब्द की तरह चलते हैं। जैसे,

रोती हुई लड़की=**रुदती बालिका।**
गाय दूहती हुई ग्वालिन=**गां दुहती गोपी।**
फूल चुनती हुई मालिन=**पुष्पं चिन्वती मालिनी।**
कथा सुनती हुई राजकुमारी=**कथां शृण्वती राजकन्या।**
दान देती हुई रानी=**दानं ददती राज्ञी।**
काम करती हुई नौकरानी=**कार्यं कुर्वती दासी।**

भ्वादि, दिवादि और चुरादिगण के धातुओं में 'त्' के पहले 'न्' जोड़कर स्त्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे,



जाती हुई लड़की=**गच्छन्ती बालिका।**

हँसती हुई स्त्री=हसन्ती स्त्री।
बहती हुई नदी=वहन्ती नदी।
चरती हुई गायें=चरन्त्यः गावः।
टूटती हुई माला=त्रुट्यन्ती माला।
प्यार करती हुई माँ=स्निह्यन्ती माता।
सोचती हुई बहन=चिन्तयन्ती भगिनी।
पूजा करती हुई स्त्रियाँ=पूज्यन्त्यः स्त्रियः।

आत्मनेपदी धातुओं में शतृ ('त्') के बदले शानच् प्रत्यय लगता है। भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादिगणीय धातुओं में 'मान' जोड़ा जाता है। जैसे,

भागता हुआ चोर=पलायमानः चौरः।
उड़ता हुआ पक्षी=उड्डीयमानः पक्षी।
यज्ञ करता हुआ ब्राह्मण=यजमानः ब्राह्मणः।
सेवा करता हुआ नौकर=सेवमानः भृत्यः।
काँपते हुए ओठ=कम्पमानौ ओष्ठौ।
लड़ते हुए सिपाही=युध्यमानाः सैनिकाः।
लटकती हुई रस्सी=लम्बमाना रज्जुः।
चमकते हुए नक्षत्र=दीप्यमानानि नक्षत्राणि।
लजाती हुई स्त्रियाँ=लज्जमानाः स्त्रियः।

शेष गणों में 'मान' के बदले 'आन' जोड़ा जाता है। जैसे,

भुञ्जानः बालकः=खाता हुआ लड़का।
शयानः शिशुः=सोता हुआ बच्चा।
अधीयानः छात्रः=पढ़ता हुआ विद्यार्थी।
टिप्पणी—आस् (बैठना) के बाद 'ईन' जोड़ा जाता है। जैसे,
आसीनः योगी=बैठा हुआ योगी।
आसीनं मित्रम्=बैठा हुआ मित्र।
आसीना बाला=बैठी हुई लड़की।

## अनुवाद

बोलता हुआ सुग्गा उड़ा जाता है=वदन्, शुकः उड्डीयते।
जाड़े से काँपता हुआ बुड्ढा आग तापता है=शीतेन कम्पमानः वृद्धः अग्निम् सेवते।

दौड़ता हुआ सवार गिर पड़ा=धावन् अश्वचारः अपतत्।
फलते हुए पेड़ को मत काटो=फलन्तं वृक्षं मा छिन्धि।
बढ़ते हुए सोते में हाथ धो लो=वहति स्रोतसि हस्तं प्रक्षालय।
बहते हुए को तिनके का सहारा=निमज्जन् पुरुषः तृणम् अवलम्बते।
मरता क्या न करता=म्रियमाणः किं न करोति।

लड़की मुस्कुराती हुई चली गई=बालिका स्मयमाना अगच्छत्।
वह रोता हुआ मेरे पास आया=सः रुदन् मम समीपे आगच्छत्।
शिकारी हाँफता हुआ पेड़ पर चढ गया=मृगयार्थी वेगेन श्वसन् तरुम् आरोहत्।

बाघ गरजता हुआ दौड़ा=व्याघ्रः गर्जन् अधावत्।
मैं डरता हुआ जंगल की ओर चला=अहं बिभ्यत् जङ्गलं प्रति अचलम्।
वह लजाती हुई यहाँ आती है=सा लज्जमाना अत्र आगच्छति।
वह पीढ़े पर बैठा हुआ है=सः पीठे आसीनः अस्ति।
मरीज चारपाई पर सोया हुआ है=रोगी खट्वायां शयानः अस्ति।
घर में सींक टँगी है=गृहे शिक्यं लम्बमानं वर्त्तते।

उसने रोते-रोते पूछा=स रुदन् अपृच्छत्।
वह हँसते-हँसते बोली=सा हसन्ती अवदत्।
मैंने जाते-जाते कहा=अहं गच्छन् अकथयम्।
उसने खाते-खाते पानी माँगा=सः खादन जलम् अयाचत।
ऊँघते-ऊँघते मत पढ़ो=तन्द्रायमाणः मा पठ।

मैंने तुम्हें जाते देखा=अहं त्वां गच्छन्तम् अपश्यम्।
हमलोगों ने उसे गाते सुना=वयं तं गायन्तम् अशृणुम।
कोतवाल ने चोर को सेंध देते पकड़ा=कोटपालः चौरं गृहे सुषिरं कुर्वन्तम् अधरत्।

तुमलोगों ने इस बच्चे को जीता पाया=यूयम् अमुं शिशुं जीवन्तम् अलभध्वम्।

वह खेलते-खेलते रसोईघर में गई=सा खेलन्ती महानसे अगच्छत्।
जब मैं स्कूल से आ रहा था तब उसने मुझे देखा=पाठशालायाः प्रत्यागच्छन्तं मां सः अपश्यत्।

जब तुम जोर से हँस रहे थे तब मैंने तुम्हें पुकारा=उच्चैः हसन्तं त्वाम् अहम् आह्वयम्।

जब वह फूल तोड़ रही थी, तब उसकी उँगली में काँटा चुभ गया=**पुष्पं चिन्वत्याः तस्याः अङ्गुली कण्टकेन विद्धा।**

नदी में नहाते वक्त उसकी अँगूठी गिर पड़ी=**नद्यां स्नान्त्याः तस्याः अङ्गुलीयकं निपतितम्।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

यह जलती हुई आग है। यह चमकता हुआ सोना है। वह हँसते-हँसते मेरे पास आया। मैंने उसकी पीठ सहलाते हुए कहा। वह सिसकते-सिसकते बोली। रोगी खाँसते-खाँसते चारपाई पर गिर पड़ा। सोते हुए को जगाना आसान है, पर जागते हुए को जगाना मुश्किल है। वह पलंग पर लेटी हुई है। लटकते हुए साँप को देखो। चलती हुई गाड़ी में मत चढ़ो। वह चलती गाड़ी से कूद पड़ा। मेरी डूबती नाव को कौन पार लगावेगा? बहता पानी साफ होता है। मैंने उसको भागते देखा। वह गाते-गाते पढ़ता है। लेटे-लेटे मत लिखो। उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। मैंने चिट्ठी देते-देते कहा। जब नौकरानी घर लीप रही थी तब एकाएक साँप देखकर चिल्ला उठी। जब वह जलावन ला रहा था तब रास्ते में एक चवन्नी मिली। उसने सिर खुजलाते हुए (कण्डूयमानः) कहा। वह कुछ सोचती हुई आ रही है। चहकती हुई (कूजतः) चिड़ियों को देखो। वह गुनगुनाती हुई कहाँ जा रही है? मेघ को बरसते देखकर मयूर नाचने लगता है। बिजली को चमकते देखकर तुम डर जाते हो।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

धर्मं कुर्वन्तः सुखं लभन्ते। शास्त्राणि जानन्तः पुरुषाः अपि मूर्खाः भवन्ति। कष्टं सहमानाः छात्राः विद्यां लभन्ते। शयानं पथिकं जागरय। स हरिं स्मरन् कार्यम् आरभते। युध्यमानौ शूरौ भूमौ निपतितौ। प्लवमानं वानरं पश्य। पततः करकान् (ओले) चिनु। ज्वलत् लौहं सः घनेन (हथौड़े से) ताडयति। द्रवद्भिः हिमैः नदी सञ्जायते। वस्त्राणि प्रक्षालयन्ती रजकी जले प्रविशति। पत्रं लिखन्ती सा दासीम् आह्वयत्। पशून् घ्नतः वधिकात् सर्वे जन्तवः पलायन्ते। दयमानस्य साधोः समीपे कोऽपि प्राणी न बिभेति। सुखम् इच्छन्तः जनाः उद्योगं कुर्वन्ति। अयं भृत्यः भारं वहन् अश्राम्यत्। वस्त्रं सीव्यन्त्याः तस्याः अङ्गुल्यां सूची प्रविष्टा। वर्षासु धावन् स पिच्छिले पथि अपतत्। अहं ते कौशलम् अशृणवम्। औषधं पिबतः तस्य वमनं

जातम्। स्फुटत् वा सन्तपत् (खौलता हुआ) दुग्धं दर्व्या (कलछी से) चालय। फेनायमाने जले मा स्नाहि। छात्राः पाठं स्मरन्तः गुरोः समीपं यान्ति। सा शिशुम् भोजयन्ती अत्रैव आगच्छति। भण्डः (भाँड़) दर्शकान् हासयन् मुद्रां लभते।

***

# षष्ठः पाठः

## कृदन्त विशेषण

### (२) क्त प्रत्ययांत

गिरा हुआ पेड़। झुकी हुई लता।

**रेखांकित पद भूतकालिक कृदंत विशेषण हैं। इनका अनुवाद करने के लिए संस्कृत में धातु के बाद क्त (त) प्रत्यय जोड़ा जाता है।**

टिप्पणी--'क्त' **प्रत्यय जोड़ने की विधि व्याकरण में देखें। नीचे प्रयोग दिखलाए जाते हैं--**

गिरा हुआ पेड़=**पतितः वृक्षः।**
झुकी हुई लता=**नता लता।**
पका हुआ फल=**पक्वं फलम्।**
टूटा हुआ आईना=**भग्नः दर्पणः।**
जली हुई रोटी=**दग्धा रोटिका।**
मथा हुआ दही=**मथितं दधि।**
भूँजा हुआ चना=**भृष्टं चणकः।**
पीसा हुआ नमक=**पिष्टं लवणम्।**
छिपा हुआ शत्रु=**गुप्तः शत्रुः, लुक्कायितः रिपुः।**
पाला हुआ साँप=**पालितः सर्पः।**
लिखी हुई चिट्ठी=**लिखितं पत्रम्।**
सिला हुआ कपड़ा=**स्यूतं वस्त्रम्।**
नापी हुई जमीन=**मिता भूमिः।**
पढ़ा हुआ शास्त्र=**पठितं शास्त्रम्।**
जानी हुई बात=**ज्ञाता वार्त्ता।**

थका हुआ मुसाफिर=**श्रान्तः पथिकः।**
सोया हुआ बच्चा=**सुप्तः शिशुः।**
जागा हुआ शेर=**जागरितः सिंहः।**
मरा हुआ जानवर=**मृतः पशुः।**
कटा हुआ सिर=**छिन्नं मस्तकम्।**
फटा हुआ कागज=**शीर्णं कर्गलम्।**
सूखा हुआ पोखरा=**शुष्कः तडागः।**
भरी हुई नदी=**पूर्णा नदी।**
चीरी हुई लकड़ी=**विदीर्णं काष्ठम्।**
भागा हुआ शत्रु=**पलायितः शत्रुः।**
जीता हुआ देश=**विजितः देशः।**
छोड़ा हुआ गाँव **त्यक्तः ग्रामः।**
उगा हुआ चंद्रमा=**उदितः चन्द्रः।**
फैला हुआ अँधेरा=**व्याप्तः अन्धकारः।**
गया हुआ समय=**गतः समयः।**
आई हुई विपत्ति=**आगता विपत्।**

किया हुआ काम=कृतं कर्म।
देखा हुआ तमाशा=दृष्टं कौतुकम्।
सुना हुआ किस्सा=श्रुता कथा।
सूँघा हुआ फूल=घ्रातं पुष्पम्।
खाई हुई खीर=भुक्तं पायसम्।
नहाया हुआ शरीर=स्नातं शरीरम्।
मुरझाया हुआ चेहरा=म्लानं वदनम्।
खरीदा हुआ घोड़ा=क्रीतः अश्वः।
बेचा हुआ हाथी=विक्रीतः हस्ती।
बिछा हुआ कंबल=विस्तीर्णः कम्बलः
ढँका हुआ चेहरा=अवगुण्ठितं मुखम्।
मूँदी हुई आँख=निमीलितम् नयनम्।
खुली आँखें=उन्मीलिते नेत्रे।
खतम किया हुआ काम=समाप्तं कार्यम्।

### अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

खिला हुआ (फुल्लं) फूल। सूखा हुआ पेड़। जोती हुई (कृष्टा) जमीन। कटी हुई लता। राँधा हुआ भात। परोसा हुआ भोजन। डूबा हुआ (मग्नः) जहाज। भूँजा हुआ चावल। पाली हुई बकरी। सींचा हुआ पेड़। फैला हुआ जंगल। उगे हुए सितारे। भरा हुआ लोटा। फटी हुई धोती। रँगा हुआ (रञ्जितः) मुरेठा (उष्णीषः)। फूटी हाँड़ी। चाटा हुआ (लीढः) गुड़। फेंका हुआ हथियार। बिंधा हुआ (विद्धः) कलेजा। सजा हुआ (सज्जितः) मकान। टूटा हुआ पुल (सेतुः)। पहनी हुई माला। घिसा हुआ (घृष्टं) चन्दन। पूछा हुआ (पृष्टः) सवाल। देखा हुआ शहर। पड़ी हुई किताब। चौपेती हुई शतरंजी।

**हिंदीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

सेवितः गुरुः। पूजितः देवः। स्मृतः पाठः। जातः (पैदा हुआ) शिशुः। उच्छिष्टं (जूठा हुआ) भोजनम्। विस्तीर्णं यशः। गूढः विषयः। निहितं (छिपा हुआ) तत्त्वम्। मेघैः आच्छादितं नभः। पूर्णः कलशः। शुष्कं वस्त्रम्। भग्नः काचः। जीर्णानि वस्त्राणि। रञ्जिता शाटी। बद्धः अञ्जलिः। दत्तं धनम्। गृहीतः उत्कोचः (घूस)। परिणीता (ब्याही) वधूः। स्वीकृतः (मंजूर किया हुआ) उपहारः। मथितः समुद्रः। निर्मितं गृहम्। विस्मृता (भूली हुई) प्रतिज्ञा। अस्तङ्गतः (डूबा हुआ) सूर्यः।

***

# तृतीय भाग | विधेय के भिन्न-भिन्न रूप

## प्रथमः पाठः

## क्रिया

### वर्त्तमानकाल

### भ्वादिगणीय धातु

( १ )

| | ए० व० | ब० व० |
|---|---|---|
| प्र० पु० | वह पढ़ता है<br>सः पठति | वे पढ़ते हैं<br>ते पठन्ति |
| म० पु० | तू पढ़ता है<br>त्वं पठसि | तुमलोग पढ़ते हो<br>यूयं पठथ |
| उ० पु० | मैं पढ़ता हूँ<br>अहं पठामि | हमलोग पढ़ते हैं<br>वयं पठामः |

द्विवचन के रूप—

प्र० पु० वे दोनों पढ़ते हैं=तौ पठतः।
म० पु० तुम दोनों पढ़ते हो=युवां पठथः।
उ० पु० हम दोनों पढ़ते हैं=आवां पठावः।

स्त्रीलिंग—

स्त्रीलिंग में भी वे ही क्रियाएँ लगती हैं जो पुँल्लिग में। जैसे,

प्र० पु० { वह पढ़ती है=सा पठति।
वे पढ़ती हैं=ताः पठन्ति।

म० पु० { तुम पढ़ती हो=त्वं पठसि।
तुमसब पढ़ती हो=यूयं पठथ।

उ० पु० { मैं पढ़ती हूँ=अहं पठामि।
हमसब पढ़ती हैं=वयं पठामः।

हिन्दी में जैसे 'आप' के साथ प्रथमपुरुष की क्रिया लगती है, वैसे ही संस्कृत में 'भवत्' शब्द के साथ। यथा--

आप जाते हैं=भवान् गच्छति।
आप दोनों जाते हैं=भवन्तौ गच्छतः।
आपलोग जाते हैं=भवन्तः गच्छन्ति।

टिप्पणी--'भवत्' शब्द के रूप भिन्न-भिन्न कारकों में जानने के लिए व्याकरण देखें। स्त्रीलिंग में 'भवती' हो जाता है और उसके रूप ईकारांत 'नदी' की तरह चलते हैं। 'तत्' (वह), युष्मत् (तुम), अस्मद् (मैं) आदि सर्वनामों के भिन्न-भिन्न रूपों को भी कंठस्थ कर लेना चाहिए।

धातुओं के वर्त्तमानकालिक रूप स्मरण रखने के लिए ये विभक्तियाँ मुखस्थ कर ली जाएँ--

| | ए० व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | ति | तः | अन्ति |
| म० पु० | सि | थः | थ |
| उ० पु० | आमि | आवः | आमः |

टिप्पणी--जिन विभक्तियों के आदि में व्यंजन वर्ण हैं, उन्हें धातु में जोड़ने के पहले धातु के हल् को उड़ा देना चाहिए। जैसे--

पठ्+ति=पठ+ति=पठति।

## भ्वादिगणीय धातु

वद्=बोलना
नम्=झुकना, प्रणाम करना
वस्=रहना
खाद्=खाना
खेल्, क्रीड्=खेलना
हस्=हँसना
क्रन्द्=रोना
त्यज्=छोड़ना
गर्ज्=गरजना
चल्=चलना
पत्=गिरना
जीव्=जीना
धाव्=दौड़ना, साफ करना
पच्=पकाना
रक्ष्=रक्षा करना, बचाना
दह्=जलाना
वह्=बहाना, ढो ले जाना
फल्=फलना
चर्=चरना, चलना, करना

## अनुवाद

मैं बोलता हूँ=**अहं वदामि।**
तुम हँसते हो=**त्वं हससि।**
वह रोता है=**सः क्रन्दति।**
तुम रसोई बनाती हो=**त्वं पचसि।**
वह खेलती है=**सा खेलति।**
हमलोग चलते हैं=**वयं चलामः।**
तुमलोग दौड़ते हो=**यूयं धावथ।**
वे लोग गिरते हैं=**ते पतन्ति।**
मैं भात खाता हूँ=**अहं भक्तं खादामि।**
वह गुरु को प्रणाम करता है=**सः गुरुं नमति वा प्रणमति।**
हम दोनों गांव में रहते हैं=**आवां ग्रामे वसावः।**
आप कहाँ रहते हैं? =**भवान् कुत्र वसति ?**

**अहं सत्यं वदामि**=मैं सच बोलता हूँ।
**आवां चलावः**=हम दोनों चलते हैं।
**आवां भवन्तं नमामः वा प्रणमामः**=हमलोग आपको प्रणाम करते हैं।
**त्वं पुस्तकानि पठसि**=तुम पुस्तकें पढ़ते हो।
**भवान् पुस्तकं पठति**=आप किताब पढ़ते हैं।
**यूयं खेलथ**=तुमलोग खेलते हो।
**सः हसति**=वह हँसता है।
**सा क्रन्दति**=वह रोती है।
**तौ सक्तून् खादतः**=वे दोनों सत्तू खाते हैं।
**ते खिच्चटिकां खादतः**=वे दोनों खिचड़ी खाती हैं।
**ते पाटलिपुत्रे वसन्ति**=वे पटने में रहते हैं।
**ताः काश्यां वसन्ति**=वे काशी में रहती हैं।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

मैं हँसता हूँ। तुम रोती हो। आप बोलती हैं। वे खेलती हैं। तुम दोनों पढ़ते हो। वह जीती है। वे लोग चलते हैं। वे रोती हैं। हमलोग प्रयाग में रहते हैं। वह घर छोड़ता है। तुम दोनों रसोई बनाती हो। हमलोग खाते हैं। वह कुएँ में गिरती है। नदियाँ बहती हैं। पेड़ फलते हैं। आग सब कुछ (सर्वं) जलाती है। ईश्वर सबको (सर्वान्) बचाते हैं। वे दोनों खेलते हैं। वे दोनों पढ़ती हैं। आप दोनों पढ़ते हैं। आपलोग चलते हैं।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

हरिणाः चरन्ति। मेघः गर्जति। सिंहौ गर्जतः। अग्निः काष्ठानि दहति। पाचकः अन्नं पचति। आवां भक्तं खादावः। यूयं पुस्तकानि पठथ। तौ वदतः। ते हसतः। भवन्तः हसन्ति। ताः जीवन्ति। नदी वहति। वायुः वहति। व्याघ्रः गर्जति। महिषौ चरतः। अजाः चरन्ति। वृक्षौ फलतः। मनुष्याः ईश्वरं नमन्ति। सः मां पश्यति। अहं युष्मान् नमामि। भवान् सत्यं वदति।

( २ )

**वर्तमानकालिक विभक्तियाँ लगाने के पूर्व बहुत-से धातुओं के अंतिम स्वर, उपधा लघु स्वर का गुण* हो जाता है। जैसे--**

भू (होना) =**भवति**।
जि (जीतना) =**जयति**।
क्षि (घटना) =**क्षयति**।
नी (ले जाना) =**नयति**।
धृ (पकड़ना) =**धरति**।
सृ (जाना) =**सरति**।

**स्मृ** (याद करना)--**स्मरति**।
**हृ** (लेना, छीनना)--**हरति**।
**द्रु** (गलना, पिघलना)--**द्रवति**।
**स्रु** (चूना, टपकना)--**स्रवति**।
**तृ** (पार करना, तैरना)--**तरति**।
**शुच्** (शोक करना)--**शोचति**।
**बुध्** (समझना)--**बोधति**।
**रुह्** (उगना, चढ़ना)--**रोहति**।
**पुष्** (पालना)--**पोषति**।
**क्रुश्** (चिल्लाना)--**क्रोशति**।
**कृष्** (खींचना)--**कर्षति**।
**वृष्** (बरसना)--**वर्षति**।
**घृष्** (घिसना)--**घर्षति**।
**सृप्** (रेंगना)--**सर्पति**।

## अनुवाद

तमाशा होता है=**कौतुकः भवति**। धर्म जीतता है=**धर्मः जयति**।
गङ्गास्नान से पाप घटता है=**गङ्गास्नानेन पापं क्षयति**।
ग्वालिन दूध ले जाती है=**गोपी दुग्धं नयति**।
बिल्ली मूसे को पकड़ती है=**बिडाली मूषिकं धरति**।
चींटियाँ बिल से जाती हैं=**पिपीलिकाः बिलात् सरन्ति**।
मैं ईश्वर को याद करता हूँ=**अहम् ईश्वरं स्मरामि**।
चोर धन ले जाता है=**चौरः धनं हरति**।
बर्फ गलती है=**हिमं द्रवति**।
घाव से खून टपकता है=**व्रणात् शोणितं स्रवति**।
मल्लाह नदी पार करता है=**नाविकः नदीं तरति**।
आप क्यों शोक करते हैं?=**भवान् कथं शोचति?**
तुम यह नहीं समझते हो=**त्वम् इदं न बोधसि**।
बीज से अंकुर उगता है=**बीजात् अङ्कुरः रोहति**।
बुढ़िया बकरी पोसती है=**वृद्धा अजां पोषति**।

---

* गुण होने पर इ के स्थान में ए; उ के स्थान में ओ; और ऋ के स्थान में अर् हो जाता है। जैसे भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=भव्+अ+ति=भवति। इसी तरह और रूप जानना चाहिए।

बच्चा जोर से चिल्लाता है=**शिशुः उच्चैः क्रोशति।**
किसान खेत जोतता है=**कृषकः क्षेत्रं कर्षति।**
मेघ बरसता है=**मेघः वर्षति।**
ब्राह्मण चंदन घिसते हैं=**विप्राः चन्दनं घर्षन्ति।**
कीड़े दीवाल पर रेंगते हैं=**कीटाः भित्तौ सर्पन्ति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

यज्ञ से वृष्टि होती है। शत्रु को लोग जीतते हैं। कृष्णपक्ष में चंद्रमा घटता है। नौकर चिट्ठी (पत्रम्) ले जाता है। नेवला साँप को पकड़ता है। चिड़ियाँ घोंसले में (नीडे) जाती हैं। विद्यार्थी पाठ याद करते हैं। डाकू रुपया छीनता है। पत्थर नहीं पसीजता है। नाक से कफ (कफः) चूता है। वह एक उपाय सोचता है। मैं यह जानता हूँ। इन खेतों में (क्षेत्रेषु) धान उपजते हैं। मैं एक गाय पोसता हूँ। बीमार (रोगी) चिल्लाता है। दो घोड़े गाड़ी को (शकटम्) खींचते हैं। उसकी आँखों से आँसू (अश्रूणि) बरसते हैं। बुढ़िया आँजन (अञ्जनम्) घिसती है। छिपकिली (पल्ली) दीवाल पर रेंगती है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

नगरे उत्सवः भवति। अयं राजा जयति। पापिनः धनं क्षयति। अधर्मेण आयुः क्षयति। तैलिकः तैलं नयति। कृषकः वृषौ नयति। मयूरः सर्पं धरति। हंसाः सरोवरं गच्छन्ति। वर्त्तकौ तडागं तरतः। अहं मित्रं स्मरामि। दस्यवः धनं हरन्ति। बन्धूनां दुःखेन तस्य हृदयं द्रवति। विद्वांसः गतं (गए हुए को) न शोचन्ति। मूर्खाः शास्त्रं न बोधन्ति। यवनाः कुक्कुटान् (मुर्गे) पोषन्ति। मत्ताः (पागल) क्रोशन्ति। पृथ्वी सर्वाणि वस्तूनि आकर्षति। समुद्रे मेघाः वर्षन्ति। वैद्यः पारदं (पारा) घर्षति। कच्छपः सर्पति। जलयानं (जहाज) समुद्रं तरति।

**अब तक जो धातु बतलाए गए हैं, वे भ्वादिगणीय कहलाते हैं, क्योंकि इनके रूप भू धातु की तरह चलते हैं।**

**नीचे कुछ और भ्वादिगणीय धातु बतलाए जाते हैं—**

**जीव्** (जीना)—**जीवति।**
**क्रीड्** (खेलना)—**क्रीडति।**
**खेल्** (खेलना)—**खेलति।**
**निन्द्** (निंदा करना)—**निन्दति।**

**गै** (गाना)—**गायति।**
**ध्यै** (ध्यान करना)—**ध्यायति।**
**म्लै** (मुरझाना)—**म्लायति।**
**ग्लै** (सुस्त होना)—**ग्लायति।**

प्र+शंस् (प्रशंसा करना)—**प्रशंसति।**
फुल्ल् (खिलना)—**फुल्लति।**
नि+मील् (बन्द करना)—**निमीलति।**
उन्+मील (खोलना)—**उन्मीलति।**
आ+ह्वे (पुकारना)—**आह्वयति।**
तर्ज् (डाँटना)—**तर्जति।**
अर्ज् (कमाना)—**अर्जति।**
अर्ह् (योग्य होना)—**अर्हति।**

### अनुवाद

लड़की खेलती है=**बालिका क्रीडति (खेलति)।**
माँ तुम्हें पुकारती है=**माता त्वाम् आह्वयति वा आकारयति।**
तुम मेरी प्रशंसा करते हो=**त्वं मां प्रशंससि।**
मैं किसी की निंदा नहीं करता=**अहं कमपि न निन्दामि।**
वह इनाम के योग्य है=**सः पुरस्कारम् अर्हति।**

### अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

लड़का खेलता है। लड़कियाँ गाती हैं। मुनिगण ध्यान करते हैं। कमल खिलते हैं। फूल मुरझाता है। मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। तुम मेरी निंदा करते हो। शिक्षक विद्यार्थियों को डाँटता है। वह बहुत रुपए कमाता है। आप किसको पुकारते हैं? वह आँख मूँदती है (निमीलति)। मैं आँखें खोलता हूँ। तुम सुस्त होते हो। आप इस पद के योग्य हैं।

***

# द्वितीयः पाठः

## तुदादिगणीय धातु

कुछ धातु ऐसे भी हैं जिनमें भ्वादि की तरह स्वर का गुण आदेश नहीं होता, किंतु विभक्तियाँ सब उसी तरह लगती हैं। जैसे—

तुद् (दुःख देना)—**तुदति।**
क्षिप् (फेंकना)—**क्षिपति।**
लिख् (लिखना)—**लिखति।**
मिल् (मिलना)—**मिलति।**
स्पृश् (छूना)—**स्पृशति।**
प्र+विश (प्रवेश करना)—**प्रविशति।**
आङ+दिश् (आज्ञा देना)—**आदिशति।**
कृ (बिखेरना)—**किरति।**
गृ (निगलना)—**गिरति।**
स्फुर् (फड़कना)—**स्फुरति।**
लुठ् (लोटना)—**लुठति।**
स्फुट् (फूटना)—**स्फुटति।**
सृज (बनाना, सृष्टि करना)—**सृजति।**
धू (हिलाना)—**धुवति।**



टिप्पणी—ऐसे धातुओं को तुदादिगणीय कहते हैं।

## अनुवाद

**दुष्टः सर्वान् तुदति**=दुष्ट सबको दुःख देता है।
**धीवरः जालं क्षिपति**=मछुआ जाल फेंकता है।
**अहम् उत्तरं लिखामि**=मैं उत्तर लिखता हूँ।
**भाग्येन साधवः मिलन्ति**=भाग्य से साधु मिलते हैं।
**सः गुरोः पादौ स्पृशति**=वह गुरु के पाँव छूता है।
**सा मन्दिरं प्रविशति**=वह मंदिर में प्रवेश करती है।
**राजा मन्त्रिणम् आदिशति**=राजा मंत्री को आज्ञा देता है।
**कृषकः अन्नानि किरति**=किसान अनाजों को बिखेरता है।
**अजगरः अजं गिरति**=अजगर बकरे को निगलता है।
**मम अक्षिणी स्फुरतः**=मेरी आँखें फड़कती हैं।
**मणिः लुठति पादाग्रे**=मणि पाँव के आगे लोटती है।
**काचस्य भाण्डं स्फुटति**=काँच का बर्तन फूटता है।
**विधिः संसारं सृजति**=ब्रह्मा संसार को रचता है।
**कपयः वृक्षं धुवति**=बन्दर पेड़ को हिलाते हैं।

## अभ्यासः

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

साधवः कमपि न तुदन्ति। कपयः प्रस्तरखण्डान् (पत्थर के टुकड़े) क्षिपन्ति। बालकाः लेखं लिखन्ति। गिरीणां कन्दरासु योगिनः मिलन्ति। शिशुः मातरं स्पृशति। सिंहः वने प्रविशति। भवान् माम् आदिशति। राजकन्या कपोतेभ्यः शस्यानि किरति। मार्जारः मूषिकं गिरति। तस्याः दक्षिणं नयनं स्फुरति। समुद्रस्य तले रत्नानि लुठन्ति। पादस्य प्रहारेण सक्तूनां भाण्डं स्फुटति। मर्कटी जालं सृजति। बालकौ दोलां (हिंडोले को) धुवतः।

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

तुम मुझे दुःख देते हो। लड़के मिट्टी के ढेले (लोष्ठानि) फेंकते हैं। मैं चिट्ठी लिखता हूँ। समुद्र में मोती (मौक्तिकानि) मिलते हैं। मैं आपके पैर छूता हूँ। साँप बिल में प्रवेश करता है। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ। बच्चा फूलों को बिखेरता है। साँप मेढ़क को निगलता है। तुम्हारी बाईं भुजा (वामः भुजः) फड़कती है। बच्चा धूल में लोटता है। मिट्टी के बर्तन फूटते हैं। कुम्हार घड़ा बनाता है। हवा पत्तों को हिलाती है।



***

# तृतीयः पाठः

## दिवादिगणीय धातु

कुछ धातुओं के बाद 'य' जोड़कर विभक्तियाँ बनाई जाती हैं। नीचे कुछ ऐसे ही धातु दिए जाते हैं। जैसे--

नृत् (नाचना)--नृत्यति।
अस् (फेंकना)--अस्यति।
शुष् (सूखना)--शुष्यति।
कुप् (क्रोध करना)--कुप्यति।
क्रुध् (क्रोध करना)--क्रुध्यति।
त्रस् (डरना)--त्रस्यति।
द्रुह् (वैर करना)--द्रुह्यति।
त्रुट् (टूटना)--त्रुट्यति।
तृप् (तृप्त होना)--तृप्यति।
तुष् (संतुष्ट होना)--तुष्यति।

स्निह् (प्रेम करना)--स्निह्यति।
लुभ् (लोभ करना)--लुभ्यति।
मुह् (मुग्ध होना)--मुह्यति।
हृष् (प्रसन्न होना)--हृष्यति।
कृश् (दुबला होना)--कृश्यति।
जॄ (पुराना होना)--जीर्यति।
क्षुभ् (घबराना)--क्षुभ्यति।
नश् (नष्ट होना)--नश्यति।
सिध् (सिद्ध होना)--सिध्यति।
शुध् (शुद्ध होना)--शुध्यति।

कुछ धातुओं में 'य' जोड़ने के पहले स्वर दीर्घ कर दिया जाता है। जैसे--

दिव् (चमकना)--दीव्यति।
सिव् (सीना)--सीव्यति।
मद् (मत्त होना)--माद्यति।

भ्रम् (घूमना)--भ्राम्यति।
क्रम् (चलना)--क्राम्यति।
शम् (शांत होना)--शाम्यति।

टिप्पणी--इस तरह के धातुओं को दिवादिगणीय कहते हैं।

### अनुवाद

मयूर नाचता है=मयूरः नृत्यति।
तालाब सूखता है=तडागः शुष्यति।
लड़का ढेला फेंकता है=बालकः लोष्ठम् अस्यति वा क्षिपति।
तुम क्रोध करते हो=त्वं कुप्यसि वा क्रुध्यसि।
माँ क्रोध करती हैं=माता क्रुध्यति वा कुप्यति।
शत्रु डरते हैं=शत्रवः त्रस्यन्ति वा बिभ्यति।
वे दोनों वैर करते हैं=तौ द्रुह्यतः।
मेरे दाँत टूटते हैं=मम दन्ताः त्रुट्यन्ति।
पितर लोग तृप्त होते हैं=पितरः तृप्यन्ति।
लोग संतुष्ट होते हैं=जनाः तुष्यन्ति।

माँ स्नेह करती है=माता स्निह्यति।
दायाद लोग लोभ करते हैं=दायादाः लुभ्यन्ति।

सभी देखनेवाले मुग्ध होते हैं=**सर्वे दर्शकाः मुह्यन्ति।**
साधु लोग प्रसन्न होते हैं=**साधवः हृष्यन्ति वा प्रसीदन्ति।**
यह बच्चा दुबला होता है=**अयं शिशुः कृश्यति।**
पेड़ के पत्ते पुराने होते हैं=**वृक्षस्य पत्राणि जीर्यन्ति।**
तुम क्यों क्षुब्ध होते हो?=**त्वं किं क्षुभ्यसि?**

**पुण्येन सर्वाणि दुःखानि नश्यन्ति**=पुण्य से सब दुःख नष्ट होते हैं।
**उद्योगेन सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति**=उद्योग से सब काम सिद्ध होते हैं।
**प्रायश्चित्तेन पापी शुध्यति**=प्रायश्चित्त से पापी शुद्ध होता है।
**शस्त्राणि दीव्यन्ति**=हथियार चमकते हैं।
**बालिका वस्त्रं सीव्यति**=लड़की कपड़ा सीती है।
**मद्यपाः माद्यन्ति**=शराबी मत्त होते हैं।
**वणिजः भ्राम्यन्ति**=व्यापारी लोग घूमते हैं।
**सैनिकौ क्राम्यतः**=(दो) सिपाही चलते हैं वा टहलते हैं।
**युद्धं शाम्यति**=लड़ाई शांत होती है।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

जंगल में मयूर नाचते हैं। शिकारी (मृगयार्थी) भाला (प्रासः) फेंकता है। धूप में (आतपे) कपड़े सूखते हैं। मालिक क्रोध करता है। नौकर डरते हैं। सिपाही लोग द्रोह करते हैं। पेड़ से फल टूटते हैं। अतिथि संतुष्ट होते हैं। बहनें स्नेह करती हैं। यह पंडा (देवलः) लोभ करता है। मैं मुग्ध होता हूँ। हमलोग प्रसन्न होते हैं। राम के लड़के दुबले होते हैं। यह कपड़ा पुराना है। आप घबराते हैं। विपत्ति के समय में बुद्धि नष्ट होती है। भाग्यवान् के मनोरथ सिद्ध होते हैं। स्नान से लोग शुद्ध होते हैं। उसका ललाट चमकता है। दर्जी टोपी (शिरोवस्त्रं) सीता है। धन से लोग मत्त हो जाते हैं। वे लोग शहर में घूमते हैं। बुढ़ापे में (वृद्धावस्थायां) लोग शांत होते हैं।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

नर्त्तकः (नटुआ) नृत्यति। बालकः शिङ्घाणम् (नेंटा) अस्यति। ग्रीष्मे (गर्मी में) सरांसि शुष्यन्ति। गण्डकः (गैंड़ा) क्रुध्यति। वीराः कुप्यन्ति। कातराः (डरपोक) त्रस्यन्ति। भ्रातरौ द्रुह्यतः। मालायाः सूत्रं (सूत) नह्यति। देवताः स्तोत्रैः तुष्यन्ति। ब्राह्मणाः मिष्टान्नैः तृप्यन्ति।

विमाता (सौतेली माँ) न स्निह्यति। असौ पुरोहितः लुभ्यति।

सङ्गीतेन जनाः मुह्यन्ति। पाठशालायाः छात्राः हृष्यन्ति। तस्य अश्वः कृश्यति। इदं गृहं जीर्यति। रोगिणः क्षुभ्यन्ति। दिवास्वापेन (दिन के सोने से) आयुः नश्यति। उद्यमेन कार्याणि सिध्यन्ति। ईश्वरस्य स्मरणेन सर्वासु अवस्थासु जनाः शुध्यन्ति। स्वर्णस्य भूषणानि दीव्यन्ति। चर्मकाराः उपानहौ सीव्यन्ति। धत्तूरेण (धतूरे से) जनाः माद्यन्ति। योगिनः वनेषु भ्राम्यन्ति। वृद्धः लगुडस्य साहाय्येन (लाठी के सहारे) क्राम्यति। प्रलये जगत् शाम्यति।

***

# चतुर्थः पाठः

## चुरादिगणीय धातु

कुछ धातु ऐसे होते हैं जिनमें 'अय' जोड़कर विभक्तियाँ लगाई जाती हैं। ऐसे धातुओं को चुरादिगणीय कहते हैं। जसे--

चुर् (चुराना)--चोरयति।
कथ् (कहना)--कथयति।
गण् (गिनना)--गणयति।
चिन्त् (सोचना)--चिन्तयति।
तर्क (तर्क करना)--तर्कयति।
चूर्ण (बुकनी करना)--चूर्णयति।
रच् (बनाना)--रचयति।
सूच् (खबर देना)--सूचयति।
तुल् (तौलना)--तोलयति।
भक्ष् (खाना)--भक्षयति।
वण्ट् (बाँटना)--वण्टयति।

पूर् (भरना)—पूरयति।
पूज् (पूजा करना)--पूजयति।
पाल् (पालना)--पालयति।
भूष् (सजाना)—भूषयति।
मण्ड् (सँवारना)--मण्डयति।
धार् (धारण करना)--धारयति।
पीड् (दुःख देना)--पीडयति।
तड् (पीटना)—ताडयति।
स्पृह् (खूब चाहना)--स्पृहयति।
छद् (ढाँकना)--छादयति।
क्षल् (धोना)--क्षालयति।

### अनुवाद

चोर धन चुराता है=चौरः धनं चोरयति वा मुष्णाति।
शास्त्र कहते हैं=शास्त्राणि कथयन्ति।
मैं फलों को गिनता हूँ=अहं फलानि गणयामि।
वह सोचती है=सा चिन्तयति।

हमलोग यह विचारते हैं=वयम् एतत् तर्कयामः।
वैद्य दवा को बूकता है=वैद्यः औषधं चूर्णयति।

सुनार गहने बनाता है=**स्वर्णकारः भूषणानि रचयति।**
वह मुझको खबर देता है=**स मां सूचयति।**
बनिया चावल तौलता है=**वणिक् तण्डुलं तोलयति।**
लड़का लड्डू खाता है=**बालकः लड्डुकं भक्षयति।**
पुरोहित पेट भरता है=**पुरोहितः उदरं पूरयति।**
दायाद लोग जायदाद बाँटते हैं=**दायादाः सम्पत्तिं वण्टयन्ति।**
हिन्दू देवताओं को पूजते हैं=**आर्याः देवान् पूजयन्ति, अर्चयन्ति।**
वह एक कुत्ता पालता है=**सः एकं कुक्कुरं पालयति।**
हमलोग मंडप सजाते हैं=**वयं मण्डपं भूषयामः।**
वह चोटी सँवारती है=**सा कबरीं मण्डयति वा प्रसाधयति।**
संन्यासी लँगोटा पहनता है=**संन्यासी कौपीनं धारयति।**
दुर्जन दूसरों को दुःख देते हैं=**दुर्जनाः परान् पीडयन्ति।**
नौकर चोर को पीटता है=**भृत्यः चौरं ताडयति वा प्रहरति।**
वह संतान की इच्छा करता है=**स सन्तानाय स्पृहयति।**
माता बच्चे को कम्बल से ढाँकती है=**माता शिशुं कम्बलेन छादयति।**
मैं पाँव धोता हूँ=**अहं पादौ क्षालयामि।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

सुनार सोना चुराता है। हमलोग कहते हैं। ड्रिलमास्टर (व्यायाम-शिक्षकः) लड़कों को गिनता है। मैं एक बात सोचता हूँ। वे लोग यह नहीं विचारते हैं। वह नमक बूकती है। कारीगर (कारुः) मूर्त्ति बनाता है। मैं उसको खबर देता हूँ। किसान गुड़ तौलता है। मैं पूड़ी (शष्कुलीम्) खाता हूँ। किसान भूसे से (बुसैः) बखारी (खारिं) भरता है। वह जाड़े में (शिशिरे) कम्बल (कम्बलान्) बाँटता है। तुम शिव को पूजते हो। वह एक अनाथ को पालता है। वे लोग घर को सजाते हैं। शौकीन लोग (विलासिनः) बालों को सँवारते हैं। वह स्त्री रेशमी साड़ी (कौशेयां शाटीम्) पहनती है। अत्याचारी साधुओं को दुःख देते हैं। गाड़ीवान (शाकटिकः) बैलों को पीटता है। लड़का खिलौने की (क्रीडनकाय) इच्छा करता है। रसोइया ढँकने से (शरावेण) हाँड़ी को (हण्डिकाम्) ढँकता है। हमलोग हाथ धोते हैं।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**



अयं भृत्यः तण्डुलं [illegible]। मुनयः [illegible]। सः [illegible]। साधवः ईश्वरं चिन्तयन्ति। विद्वांसः तर्कयन्ति। वैद्यस्य भृत्याः औषधानि

चूर्णयन्ति। कवयः काव्यानि रचयन्ति। दूताः राजानं सूचयन्ति। वणिजः कार्पासं (रुई) तोलयन्ति। भिक्षुकः सक्तून् भक्षयति। वैतनिकाः (मजदूर) गर्त्तं (गढ़ा) पूरयन्ति। लुण्टाकाः (लुटेरे) अंशान् (हिस्से) वण्टयन्ति। यूयं विष्णुं पूजयथ। असौ विप्रः एकां धेनुं पालयति। कमलानि सरः भूषयन्ति। राजकन्या चित्रैः भित्तिपटं मण्डयति। राजा हस्ते न्यायस्य दण्डं धारयति। राज्ञः कर्मचारिणः प्रजाः पीडयन्ति। गुरुः वेत्रस्य यष्ट्या (बेंत की छड़ी से) भारतस्य मानचित्रं दर्शयति।

***

# पञ्चमः पाठः

## विशेष रूपवाले धातु

**वर्तमानकालिक विभक्तियाँ लगने के पहले कई धातुओं के विशेष रूप हो जाते हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक स्मरण रखना चाहिए।**

### धातु-कोष

**गम्--गच्छ्** =जाना।
**आ+गम्--आगच्छ** =आना।
**दृश्--पश्य्** =देखना।
**स्था--तिष्ठ्** =ठहरना।
**पा-पिब्** =पीना।
**दाण्--यच्छ्** =देना।
**ध्मा--धम्** =फूँकना।
**प्रच्छ्--पृच्छ्** =पूछना।
**इष्--इच्छ्** =चाहना।
**दंश्--दश्** =डँसना।
**मुच्--मुञ्च्** =छोड़ना।
**लिप्--लिम्प्** =लीपना।
**सिच्--सिञ्च्** =सींचना।
**मस्ज्--मज्ज्** =डूबना।
**भ्रस्ज्--भृज्ज्** =भूँजना।
**सस्ज्--सज्ज्** =तैयार होना।
**रज्--रञ्ज्** =रँगना।
**गुफ्--गुम्फ्** =गूँथना।
**गुह्--गूह्** =छिपाना।
**ष्ठिव्--ष्ठीव्** =थूकना।
**सद्--सीद्** =कष्ट पाना।
**कृत्--कृन्त्** =काटना।

### अनुवाद

मैं घर जाता हूँ--**अहं गृहं गच्छामि।**
वे कालेज से आते हैं--**ते महाविद्यालयात् आगच्छन्ति।**
हमलोग चंद्रमा को देखते हैं--**वयं चन्द्रं पश्यामः।**

वह होटल में ठहरता है--**स भोजनालये तिष्ठति।**
वह शराब पीती है--**सा मद्यं पिबति।**

यजमान दक्षिणा देता है--**यजमानः दक्षिणां यच्छति वा ददाति।**
पुरोहित शंख फूँकता है--**पुरोहितः शंखं धमति।**
विद्यार्थी गुरु को पूछता है--**विद्यार्थी गुरुं पृच्छति, जिज्ञासते, अनुयुनक्ति।**
तुम क्या चाहते हो?--**त्वं किम् इच्छसि?**
इस जगह मच्छर काटते हैं--**अस्मिन् स्थाने मशकाः दशन्ति।**
नौकर दरवाजा खोलता है--**भृत्यः द्वारम् उद्घाटयति।**
नौकरानी आँगन लीपती है--**दासी अङ्गनं लिम्पति।**
माली क्यारियों को सींचता है--**माली केदारान् सिञ्चति।**
जहाज समुद्र में डूबता है--**जलयानं समुद्रे मज्जति।**
बुढ़िया चना भूँजती है--**वृद्धा चणकान् भृज्जति।**
हमलोग तैयार होते हैं--**वयं सज्जामहे।**
लड़की साड़ी रँगती है--**बालिका शाटीं रञ्जयति।**
मेरी बहन माला गूँथती है--**मम भगिनी मालां गुम्फति।**
कंजूस धन छिपाता है--**कृपणः धनं गूहति।**
तुम अलीन पर थूकते हो--**त्वम् अलिन्दे ष्ठीवसि।**
पापीगण कष्ट पाते हैं--**पापिनः सीदन्ति।**
मूसा रस्सी को काटता है--**मूषकः रज्जुं कृन्तति वा छिनत्ति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

हमलोग स्कूल जाते हैं। वह गाँव से आता है। लड़के नकशा (मानचित्रं) देखते हैं। मैं होटल में (छात्रावासे) ठहरता हूँ। वह ऊख का (इक्षोः) रस पीती है। यह लड़का गाली (गालीम्) देता है। रसोइया चूल्हे की (चुल्लेः) आग फूँकता है। मैं आपको पूछता हूँ। वह एक किताब चाहता है। बिच्छू (वृश्चिकः) पूँछ से (पुच्छेन) डँसता है। मैं यह गाँठ (ग्रन्थिम्) खोलता हूँ। वह ओसारे को (उपशालम्) गोबर से (गोमयेन) लीपती है। किसान कूँड़े से (कण्डोलः) खेत में पानी पटाता है। बूढ़ा भाड़ में (भ्राष्ट्रेण) चिउड़ा (चिपिटकं) भूँजता है। लड़की पानी में नहीं डूबती। तुमलोग खेल के लिए तैयार होते हो। स्त्री महावर से (लाक्षया) पाँव रँगती है। वह अपनी (निजां) चोटी (कबरीं) गूँथती है। तुम यह बात छिपाते हो। वह दहलीज पर (देहल्याम्) थूकता है। अपराधी जल में (कारागारे) कष्ट पाते हैं। नाई कैंची से (कर्त्तन्या) सिर के बाल काटता है।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

सः श्वशुरालयं (ससुराल) [illegible]

ग्रामीणाः (देहाती) जनाः नृत्यं पश्यन्ति। ते धर्मशालायां तिष्ठन्ति। रोगी भोजनस्य अन्ते तक्रं (मट्ठा) पिबति। मुनिः शापं यच्छति। गायकः शङ्खं धमति। शिष्याः गुरुं प्रश्नं पृच्छन्ति। निर्धनाः धनम् इच्छन्ति। मधु-मक्षिका (मधुमक्खी) शूकेन (सूँग से) दशति। सर्पः कञ्चुकं (केंचुली) मुञ्चति। सा महानसं (रसोईघर) लिम्पति। माली वृक्षस्य आलवालं (थाला) सिञ्चति। नौः नद्यां मज्जति। सा लाजाः (लावा) भृज्जति। ते यात्रायै सज्जन्ते। रङ्गाजीवः (रँगरेज) पटान् रञ्जयति। बालिका वेणीं (चोटी) गुम्फति। त्वं मित्रस्य दोषं गूहसि। ते प्रतिग्राहे (उगालदान में) ष्ठीवन्ति। मम गात्राणि (अंग) सीदन्ति। मूषकः सिंहस्य बन्धनानि कृन्तति।

***

# षष्ठः पाठः

## भूतकाल

### सामान्य धातु

भूतकाल के लिए संस्कृत में तीन लकार हैं--(१) लङ्, (२) लुङ् और (३) लिट्। लङ्लकार के रूप सबसे अधिक सुगम होते हैं। अतएव इन्हीं के द्वारा भूतकाल का अनुवाद करना यहाँ दिखलाया जाता है।

लङ्लकार बनाने के लिए पूर्वोक्त धातुओं में निम्नलिखित विभक्तियाँ जोड़नी चाहिए।

| | ए० व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | त् | ताम् | न् |
| म० पु० | : | तम् | त |
| उ० पु० | म् | आव | आम |

टिप्पणी--इन विभक्तियों को जोड़ने के पहले (१) धातु के पूर्व एक 'अ' जोड़ देना चाहिए। (२) धातु का वह रूप बना लेना चाहिए जो 'ति' (वर्त्तमानकालिक) जोड़ने के पूर्व हो जाता है।

उदाहरण--पठ्+त्=(लङ्)=अ+पठ+त्=अपठत् (पढ़ा)। गम+त् (लङ्)=अ+गच्छ+त्=अगच्छत् (गया)। इसी तरह, अवदत् (बोला), अपश्यत् (देखा), अबोधत् (जाना), अनयत् (ले गया), अलिखत् (लिखा), अनृत्यत् (नाचा), अचोरयत (चुराया), इत्यादि।

नीचे 'गम्' (जाना) धातु के साथ उपर्युक्त विभक्तियाँ लगाकर दिखलाई जाती हैं—

| | ए० व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वह गया<br>सः अगच्छत् | वे दोनों गए<br>तौ अगच्छताम् | वे सब गए<br>ते अगच्छन् |
| म० पु० | तुम गए<br>त्वम् अगच्छः | तुम दोनों गए<br>युवाम् अगच्छतम् | तुमलोग गए<br>यूयम् अगच्छत |
| उ० पु० | मैं गया<br>अहम् अगच्छम् | हम दोनों गए<br>आवाम् अगच्छाव | हमलोग गए<br>वयम् अगच्छाम |

अनुवाद

वह घर गया=**स गृहम् अगच्छत्।**
तुमने कहा=**त्वम् अकथयः।**
मैंने पुस्तक पढ़ी=**अहं पुस्तकम् अपठम्।**
हमलोगों ने उसको देखा=**वयं तम् अपश्याम।**
तुमलोगों ने चिट्ठी लिखी=**यूयं पत्रम् अलिखत।**
उनलोगों ने कुशल पूछा=**ते कुशलम् अपृच्छन्।**
आपने आशीर्वाद दिया=**भवान् आशिषः अयच्छत्।**
तुम दोनों ने सोचा=**आवाम् अचिन्तयाव।**
तुम दोनों खुश हो गए=**युवाम् अहृष्यतम्।**
उन दोनों ने दरवान को पीटा=**तौ द्वारपालम् अताडयताम्।**

अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

उसने पूछा। मैंने कहा। उन्होंने सोचा। वह रोई। आप हँसे। हमलोगों ने तमाशा देखा। उस लड़की ने रसोई बनाई। वे लोग बोले। राजकन्या ने मुनि को प्रणाम किया। मैंने रात में रोटी खाई। रेलगाड़ी (वाष्पयानम्) चली। मुसाफिर (पथिकाः, यात्रिणः) दौड़े। घंटी बजी। छुट्टी (अवकाशः) हुई। लड़के अपने घर गए। कारीगर (कारुः) मकान की छत से (छदेः) गिरा। माँ ने बच्चे को पोसा। उसने शरबत (शर्करोदकम्, मिष्टपानकम्) पिया। उसने डाकू को पकड़ा। दो लड़के नदी में तैरे। उसने मुझे पुकारा। मास्टर ने (शिक्षकः) लड़कों को कहा। आईना (दर्पणः) फूट गया। कंघी (कङ्कतिका) टूट गई। लड़के डर गए। बाघ गरजा। तालाब सूख

गया। मैं प्रसन्न हुआ। दर्जी ने (सूचीकारः) कुर्त्ता (कञ्चुकम्, कूर्पासकम्) सीया। उसने बेंत की छड़ी से शराबी को (मद्यपम्) पीटा। मास्टर ने ब्लैकबोर्ड पर (कृष्णपट्टे, श्यामफलके) सवाल (प्रश्नं) लिखा। लड़कों ने स्लेट पर (पाषाणपट्टिकायाम्) अक्षर (अक्षराणि) लिखे। हेडमास्टर ने (प्रधानाध्यापकः) क्लास के (कक्षायाः) लड़कों को गिना। तमोली ने पान के (ताम्बूलस्य) बीड़े (बीटयः) लगाए। हमलोगों ने जलेबियाँ (कुण्डलिकाः, कुण्डलिनीः) खाईं। बनिये ने तराजू पर (तुलायाम्) तीसी (अतसीम्) तौली। आपने पाँव धोए। हमलोगों ने नाव का भाड़ा (आतरम्) दिया।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु––**

वृष्टिः अभवत्। मेघः अगर्जत्। मयूराः अनृत्यन्। क्षेत्रे शस्यानि अरोहन्। कृषकः अहृष्यत्। बालकाः अक्रीडन्। अहं पत्रम् अलिखम्। त्वं व्याकरणम् अपठः। सा गीतम् अगायत्। वयम् ईश्वरम् अध्यायाम। एते वीराः अजयन्। लुण्टाकः (लुटेरा) वत्सम् (बछड़ा) अहरत्। वयम् इमां वार्ताम् अबोधाम। मकरः (घड़ियाल) मत्स्यम् अगिरत्। कन्या लाजाः अकिरत्। ब्राह्मणः उपवीतम् (जनेऊ) अस्पृशत्। राजा अकुप्यत्। मन्त्रिणः अत्रस्यन्। उष्णीषः (मुरेठा) अपतत्। इमौ अश्वौ भूमिम् अकृष्यताम्। कलहः (झगड़ा) अशाम्यत्। राजकन्या देवीम् अपूजयत्। शिक्षकः छात्रान् गणितस्य प्रश्नम् (हिसाब का सवाल) अपृच्छत्। बालिका चोलिम् (चोली) असीव्यत्। प्रसूतिका लप्सिकाम् (हलुआ) अभक्षयत्। वणिक् समितम् (मैदा) अतोलयत्। वयम् अतर्कयाम। आधोरणः (महावत) लौहस्य शृङ्खलाम् (सीकड़) अनयत्। वयं सत्यम् अकथयाम। राजा अवदत्। भृत्याः अधावन्। आवाम् अपश्याव। अहम् अपृच्छम्। तौ अगच्छताम्।

***

# सप्तमः पाठः

## उपसर्गयुक्त धातु

जिन धातुओं के आदि में स्वर रहता है, उनके साथ भूतकालिक 'अ' की संधि हो जाती है।

नीचे कुछ ऐसे ही धातु और उनके प्रथमपुरुष एकवचन के रूप दिए जाते हैं।

| धातु | अर्थ | लङ का रूप | धातु | अर्थ | लङ का रूप |
|---|---|---|---|---|---|
| अट् | घूमना | आटत् | इष् | चाहना | ऐच्छत् |
| अर्च् | पूजना | आर्चत् | ऋ | जाना | आर्च्छत् |
| अर्ज् | कमाना | आर्जत् | इ | जाना | आयत् |

जिन धातुओं के साथ उपसर्ग रहता है, उनमें भूतकाल का 'अ' उपसर्ग के बाद जोड़ा जाता है। जैसे--

आ + गम् = आ + अगच्छत् = आगच्छत् = आया।
प्र + विश् = प्र + अविशत् = प्राविशत् = घुसा।
प्र + नम् = प्र + अनमत् = प्राणमत् = प्रणाम किया।
नि + मस्ज् = नि + अमज्जत् = न्यमज्जत् = डूबा
उप + विश् = उप + अविशत् = उपाविशत् = बैठा।
उद् + स्था = उद् + अतिष्ठत् = उदतिष्ठत् = उठा।
उप + दिश् = उप + अदिशत् = उपादिशत् = उपदेश दिया।
आ + रुह् = आ + अरोहत् = आरोहत् = चढ़ा।
अव + तृ = अव + अतरत् = अवातरत् = उतरा।
अनु + तप् = अनु + अतपत् = अन्वतपत् = अफसोस किया।
प्र + शंस् = प्र + अशंसत् = प्राशंसत् = प्रशंसा की।
आ + नी = आ + अनयत् = आनयत् = लाया।
नि + मील् = नि + अमीलत् = न्यमीलत् = बन्द किया।
उद् + मील् = उद् + अमीलत् = उदमीलत् = खोला।

### अनुवाद

स वनेषु आटत् = वह जंगलों में घूमा।
राजकन्या आर्चत् = राजकन्या ने पूजा की।
पुत्रः धनम् आर्जत् = लड़के ने धन कमाया।
ताः अगच्छन् = वे सब गईं।

**मुनयः तीर्थम् आयन्**=मुनि तीर्थ को गए।
**वयम् ऐच्छाम**=हमलोगों ने चाहा।
**स गृहम् आगच्छत्**=वह घर आया।
**अहं पीठे उपाविशम्**=मैं पीढ़े पर बैठा।
**भवान् प्राणमत्**=आपने प्रणाम किया।
**बालकाः उदतिष्ठन्**=लड़के उठे।
**गुरुः उपादिशत्**=गुरु ने उपदेश दिया।
**ते सोपानम् आरोहन्**=वे लोग सीढ़ी पर चढ़े।
**सः वायुयानात् अवातरत्**=वह हवाई जहाज से उतरा।
**जलयानं न्यमज्जत्**=स्टीमर डूब गई।
**सेना दुर्गे प्राविशत्**=फौज किले में घुस गई।
**राजा अन्वतपत्**=राजा ने अफसोस किया।
**पत्रवाहकः पत्राणि आनयत्**=डाकप्यादा चिट्ठियाँ लाया।
**शिक्षकः बालकं प्राशंसत्**=मास्टर ने लड़के की प्रशंसा की।
**बालकः चक्षुषी न्यमीलत्**=लड़के ने आँखें बन्द कीं।
**तपस्वी नेत्रे उदमीलत्**=तपस्वी ने आँखें खोलीं।

## अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

मद्यपः (शराबी) विशिखासु (गलियों में) आटत्। पुरोहितः धत्तूरैः (धतूरों से) शिवम् आर्चत्। स शतं रौप्यकाणि आर्जत्। तौ हट्टम् (हाट) आयताम्। अहं आपणम् (दूकान) आर्च्छम्। स देहल्याम् उपाविशत्। साधवः धर्मम् उपादिशन्। कपिः वृक्षम् आरोहत्। योगी पर्वतात् अवातरत्। छात्रः मसिपात्रम् (दावात) आनयत्। बालकौ नद्यां न्यमज्जताम्। राज्ञी मन्दिरं प्राविशत्। व्याधाः (हत्यारे) अन्वतपन्। वयं राजानं प्राशंसाम। सा चक्षुः न्यमीलत्। व्याघ्रः नयने उदमीलत्। सेनाशिविरे (छावनी में) प्राविशत्।

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

वह चौकी पर (चतुष्किकायाम्) बैठा। लड़के क्लास में (कक्षायाम्) आए। राजा ने मुनि को प्रणाम किया। गुरु ने चेलों को उपदेश दिया। सिंह ने आँखें खोलीं। मुसाफिर (पान्थः) उठा। पहलवान ने (मल्लः) इनाम (पुरस्कारम्) चाहा। वे लोग गाड़ी पर (शकटम्) चढ़े। चींटियाँ बिल में घुसीं। गगरी (गर्गरी) नदी में डूब गई। तुमने एक कौड़ी (कपर्दिकम्)

नहीं कमाई। नौकर जलावन (इन्धनम्) लाया। मैं छाता (छत्रं) नहीं लाया। कवियों ने राजदरबार की (राजसभाम्) प्रशंसा की। बच्चे ने आँखें मूँदीं। उसने कर्जा (ऋणम्) चाहा। सारथी (सारथिः) रथ से उतरा। कसूरी ने (अपराधी) अफसोस किया। वह दियासलाई (दीपशलाकाम्) लाई।

***

# अष्टमः पाठः

## भविष्यत् काल (लृट्)

### सामान्य रूप

धातुओं से भविष्यत् काल बनाने के लिए इन नियमों को स्मरण रखना चाहिए—

(१) धातु के अंत्य स्वर और उपधा लघु स्वर का गुण हो जाता है।

(२) धातु के बाद 'इष्य्' जोड़ा जाता है।

(३) तब धातु के अनंतर वर्त्तमानकाल की-सी विभक्तियाँ लगाई जाती हैं।

जैसे, 'भू' धातु से प्रथमपुरुष एकवचन में [ (१) भो, (२) भो+इष्य्, (३) भो+इष्य्+ति] 'भविष्यति' रूप बनेगा। 'लिख्' धातु से [ (१) लेख, (२) लेख्+इष्य्, (३) लेख्+इष्य्+ति ] 'लेखिष्यति' रूप बनेगा।

टिप्पणी—भविष्यत् काल में—

(१) सब धातुओं के रूप प्रायः एक ही समान बनते हैं। गण-भेद से रूप-भेद नहीं होता। केवल चुरादिगण में धातु के बाद अय् जोड़ा जाता है। जैसे, चुर्—चोरयिष्यति।

(२) लट् (लोट्, विधिलिङ् और लङ्) में जिन धातुओं के रूप बदल जाते हैं, लृट् (और बाकी लकारों) में उन धातुओं के रूप प्रायः नहीं बदलते। जैसे, गम्—गमिष्यति।

### गम् (जाना) लृट्

| | ए० व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु० | वह जाएगा<br>स गमिष्यति | वे दोनों जाएँगे<br>तौ गमिष्यतः | वे लोग जाएँगे<br>ते गमिष्यन्ति |

| | एक व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|
| म० पु० | तुम जाओगे | तुम दोनों जाओगे | तुमलोग जाओगे |
| | त्वं गमिष्यसि | युवां गमिष्यथः | यूयं गमिष्यथ |
| उ० पु० | मैं जाऊँगा | हम दोनों जाएँगे | हमलोग जाएँगे |
| | अहं गमिष्यामि | आवां गमिष्यावः | वयं गमिष्यामः |

## अनुवाद

वह पटना जाएगा=स पाटलिपुत्रं गमिष्यति।
मैं वह किताब पढ़ूँगा=अहम् इदं पुस्तकं पठिष्यामि।
गवाह सच बोलेगा=साक्षी सत्यं वदिष्यति।
मेघ बरसेगा=मेघः वर्षिष्यति।
आप चिट्ठी लिखेंगे=भवान् पत्रं लेखिष्यति।
मैं बाट पर मिलूँगा=अहं मार्गे मेलिष्यामि।
वह मकान गिरेगा=अदः गृहं पतिष्यति।
वे लोग गढ़ा खोदेंगे=एते जनाः गर्त्तं खनिष्यन्ति।
वह तुम्हें याद करेगी=सा त्वां स्मरिष्यति।
वह पेड़ फलेगा=अयं वृक्षः फलिष्यति।
वह बच्चा रोएगा=एष शिशुः क्रन्दिष्यति।
तुमलोग हँसोगे=यूयं हसिष्यथ।
हमलोग खेलेंगे=वयं खेलिष्यामः।
दो लड़के दौड़ेंगे=द्वौ बालकौ धाविष्यतः।
वह कहानी कहेगी=सा कथां कथयिष्यति।
मैं खीर खाऊँगा=अहं पायसं खादिष्यामि।
वे लोग सत्तू खाएँगे=ते सक्तून् भक्षयिष्यन्ति।
पिताजी मुझे पीटेंगे=पिता मां ताडयिष्यति।
हमलोग चलेंगे=वयं चलिष्यामः।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

वह कचहरी (न्यायालयं) जाएगा। मैं घर आऊँगा। तुम कलेऊ (कल्यावर्तम्) खाओगे। हमलोग पाठ याद करेंगे। वह हँसेगी। तुम रोओगे। मैं झूठ (असत्यम्) नहीं बोलूँगा। सवार (अश्वारोही) घोड़े से गिरेगा। कुत्ते दौड़ेंगे। बारात के लोग चलेंगे। मैं दही खाऊँगा। हमलोग पान खाएँगे। वह सुपारी (पूगीफलम्) चबाएगा (चर्विष्यति)। मैं मुँह धोऊँगा। माँ लड़के को डाँटेगी। वह चिट्ठी पढ़ेगी। लड़के लेख लिखेंगे। आँधी में

(वात्यायाम्) आप गिरेंगे। रात में ओस (अवश्याय:) गिरेगी। वह जूठा (उच्छिष्टं) नहीं खाएगा।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

गाव: चरिष्यन्ति। अश्वा: धाविष्यन्ति। ओषधि: रोगं हरिष्यति। जना: हसिष्यन्ति। स्त्रिय: क्रन्दिष्यन्ति। आवां पठिष्याव:। वयं लेखिष्याम:। अहं चलिष्यामि। पिच्छिले पथि (पिच्छल रास्ते में) पथिका: पतिष्यन्ति। रात्रि: गमिष्यति (रात बीत जाएगी)। प्रभातं (सुबह) भविष्यति। दुर्भिक्षम् (अकाल) आगमिष्यति। अहं त्वां ताडयिष्यामि। स पादौ क्षालयिष्यति। त्वं शिक्यं (सीका) रचयिष्यसि। रात्रौ तुषार: (पाला) पतिष्यति।

***

# नवम: पाठ:

## भविष्यत् काल

### विशेष रूप

कुछ धातुओं में 'इष्य' की जगह केवल 'स्य' जोड़ा जाता है। 'स्य' के संयोग से कुछ धातुओं के रूप भी थोड़े बहुत परिवर्तित हो जाते हैं। नीचे ऐसे ही धातु दिए जाते हैं। इनके भविष्यत् कालिक रूप अच्छी तरह स्मरण रखने चाहिए--

| धातु | लृट् | धातु | लृट् |
|---|---|---|---|
| दा-- | दास्यति। | भ्रस्ज्-- | भ्रक्ष्यति। |
| स्था-- | स्थास्यति। | क्षिप् | क्षेप्स्यति। |
| पा-- | पास्यति। | लिप्-- | लेप्स्यति। |
| धा-- | धास्यति। | तृप्-- | तप्स्र्यति। |
| ध्मा-- | ध्मास्यति। | खिद्-- | खेत्स्यति। |
| गै-- | गास्यति। | क्रुध्-- | क्रोत्स्यति। |
| ध्यै-- | ध्यास्यति। | नम्-- | नंस्यति। |
| ग्लै-- | ग्लास्यति। | दंश्-- | दंक्ष्यति। |
| म्लै-- | म्लास्यति। | दृश्-- | द्रक्ष्यति। |
| जि-- | जेष्यति। | स्पृश्-- | स्पर्क्ष्यति। |
| क्षि-- | क्षेष्यति। | क्रुश्-- | क्रोक्ष्यति। |
| इ-- | एष्यति। | नश-- | नङ्क्ष्यति। |
| नी-- | नेष्यति। | शुष्-- | शोक्ष्यति। |

| धातु | लृट् | धातु | लृट् |
| --- | --- | --- | --- |
| पच्-- | पक्ष्यति। | तुष्-- | तोक्ष्यति। |
| मुच्-- | मोक्ष्यति। | पुष्-- | पोक्ष्यति। |
| सिच्-- | सेक्ष्यति। | दुष्-- | दोक्ष्यति। |
| प्रच्छ-- | प्रक्ष्यति। | वस्-- | वत्स्यति। |
| त्यज्-- | त्यक्ष्यति। | वह्-- | वक्ष्यति। |
| रज्-- | रङक्ष्यति। | दह्-- | धक्ष्यति। |
| मस्ज्-- | मङक्ष्यति। | रुह्-- | रोक्ष्यति। |

## अनुवाद

वह इस खेमे में ठहरेगा=सः **अस्मिन् वस्त्रकुट्टिमे (शिविरे) स्थास्यति।**
मैं फीस दूँगा=**अहं शुल्कं दास्यामि।**
रोगी मूँग का झोल पिएगा=**रोगी मुद्गस्य यूषं पास्यति।**
तुम इत्र सूँघोगे=**त्वं पुष्पसारं घ्रास्यति।**
वह गीत गाएगी=**सा गीतं गास्यति।**
मैं एक बात पूछूँगा=**अहम् एकां वार्तां प्रक्ष्यामि।**
हमलोग थियेटर देखेंगे=**वयम् अभिनयं द्रक्ष्यामः।**
नौकर सौदा लाएगा=**भृत्यः पण्यम् आनेष्यति।**
तुम बाजी जीतोगे=**त्वं ग्लहं जेष्यसि।**
वह घाव पर मलहम लगाएगी=**सा व्रणे उपनाहं लेप्स्यति।**

**सः क्रोत्स्यति**=वह क्रोधित होगा।
**भवान् तोक्ष्यति**=आप प्रसन्न होंगे।
**त्वं खेत्स्यसे**=तुम दुःखी होगे।
**अहं तप्स्यामि**=मैं तृप्त होऊँगा।
**पुष्करिणी शोक्ष्यति**=पोखरी सूखेगी।
**कुमुदिन्यः नङक्ष्यन्ति**=भेंट के फूल नष्ट होंगे।
**पोतः मङक्ष्यन्ति**=जहाज डूबेगा।
**कण्टकानि रोक्ष्यति**=काँटे उपजेंगे।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

मैं एक पहेली (प्रहेलिकाम्) पूछूँगा। वह मोटा (पोटम्) ढोएगा। (वक्ष्यति)। बेड़ा (वहित्रम्) डूब जाएगा। वह गेरू से (गैरिकेण) कपड़ा रँगेगा। वह गोइठा (गोविष्ठेन्धनं, गोग्रन्थिम्) जलाएगी। वह खपड़ी में

(कन्दौ) चना भूंजेगी। मैं इस से कुंजी (कुञ्चिकया) ताला (तालकम्) खोलूँगा। पानी के बुलबुले (बुद्बुदाः) नष्ट हो जाएँगे। वह प्याले में (चषके) शराब (मद्यम्) पिएगा। फकीर (भिक्षुः) गाँजा (गञ्जिकाम्) फूँकेगा। बाढ़ में (जलप्लावने) गाछ (गच्छाः) बहेंगे। गायक (कथकः) गीत गाएगा। कुम्भी (कुम्भिका) सूख जाएगी। मैं इस कथड़ी को (कन्थाम्) फेंक दूँगा। वह फूलों का गुच्छा (गुच्छकम्) सूँघेगी। वे लोग गाय की पूँछ छुएँगे। तुम्हें बिढ़नी डँस लेगी। हमलोग उन्हें प्रणाम करेंगे। राज दीवाल में चूना (चूर्णम्) पोतेगा। इस जगह पौधे उपजेंगे। वह चपाती (चपटीम्) पकाएगी। वह भेड़ों को (मेषान्) हाट में (हट्टे) ले जाएगा। बुढ़िया बकरा (अजम्) पोसेगी। हमलोग इस देश में बसेंगे।

**हिंदीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

सा पित्रालये (नैहर) स्थास्यति। अहं घटिकायाः (घड़ी का) मूल्यं (दाम) दास्यामि। वाप्याः शैवालं (सेंवार) शुष्यति। सा करीषं (करसी) धक्ष्यति। सः अधिरोहिणीम् (सीढ़ी) रोक्ष्यति (चढ़ेगा)। कर्णिकारस्य पुष्पाणि (कनेर के फूल) म्लास्यन्ति। कृष्णपक्षे शशी ग्लास्यति। असौ राजा बहून देशान् जेष्यति। शिशवः क्रोक्ष्यन्ति। माली लघुपादपान् (पौधों को) सेक्ष्यति। शरीराणि नङक्ष्यन्ति। अस्य कूपस्य पानीयं (पानी) शोक्ष्यति। तीर्थे पापानि क्षेष्यन्ति। स क्वथिकां (कढ़ी) पास्यति। किं भोक्ष्यति? युद्धे कोऽपि न शक्ष्यति।

***

## दशमः पाठः

## अन्यगणीय धातु

अबतक जो धातु बतलाए गए हैं, उनसे भिन्न-भिन्न काल के रूप बनाना सहज है। किंतु बहुत-से धातु ऐसे हैं जो पूर्वोक्त गणों (classes) में नहीं आते। उनके खास अलग-अलग गण (groups) हैं, और हर-एक गण से धातु-रूप में कुछ अपनी विशेषता रहती है। इन गणों की बारीकियाँ और उनसे होनेवाले रूप-भेद बताना व्याकरण का काम है। यहाँ हम ऐसे ही गणों के कुछ मुख्य-मुख्य धातु चुनकर देते हैं, जिनका जानना अनुवाद करने के लिए नितांत आवश्यक है।

| धातु | वर्त्तमान (लट्) | भूत (लङ्) | भविष्यत् (लृट्) |
| --- | --- | --- | --- |
| अस् | (होना)——अस्ति (है) | आसीत् (था) | भविष्यति (होगा) |
| स्वप् | (सोना)——स्वपिति | अस्वपीत् | स्वप्स्यति |
| जागृ | (जागना)——जागर्ति | अजागः | जागरिष्यति |
| ब्रु | (बोलना)——ब्रवीति | अब्रवीत् | वक्ष्यति |
| दुह् | (दूहना)——दोग्धि | अधोक् | धोक्ष्यति |
| लिह् | (चाटना)——लेढि | अलेट् | लेक्ष्यति |
| हन् | (मारना)——हन्ति | अहन् | हनिष्यति |
| आप् | (पाना)——आप्नोति | आप्नोत् | आप्स्यति |
| शक् | (सकना)——शक्नोति | अशक्नोत् | शक्ष्यति |
| श्रु | (सुनना)——शृणोति | अशृणोत् | श्रोष्यति |
| चि | (चुनना)——चिनोति | अचिनोत् | चेष्यति |
| दा | (देना)——ददाति | अददात् | दास्यति |
| भी | (डरना)——बिभेति | अबिभेत् | भेष्यति |
| कृ | (करना)——करोति | अकरोत् | करिष्यति |
| ज्ञा | (जानना)——जानाति | अजानात् | ज्ञास्यति |
| ग्रह् | (लेना)——गृह्णाति | अगृह्णात् | ग्रहीष्यति |
| क्री | (खरीदना)——क्रीणाति | अक्रीणात् | क्रेष्यति |
| बन्ध् | (बाँधना)——बध्नाति | अबध्नात् | भन्त्स्यति |
| मन्थ् | (मथना)——मथ्नाति | अमथ्नात् | मथिष्यति |
| स्तृ | (बिछाना)——स्तृणाति | अस्तृणात् | स्तरिष्यति |
| छिद् | (काटना)——छिनत्ति | अच्छिनत् | छेत्स्यति |
| भञ्ज् | (तोड़ना)——भनक्ति | अभनक् | भङ्क्ष्यति |
| युज् | (जोड़ना)——युनक्ति | अयुनक् | योक्ष्यति |

टिप्पणी——उपर्युक्त धातुओं के रूप केवल प्रथमपुरुष एकवचन में दिखलाए गए हैं। शेष रूपों को व्याकरण की पुस्तक में देखकर कंठस्थ कर लेना चाहिए।

## अनुवाद

वह कंजूस है——स कृपणः अस्ति।
मेरे दो भाई हैं——मम द्वौ भ्रातरौ स्तः।
तुम्हारे घर में कौन कौन हैं?——तव गृहे के के सन्ति?
यह स्त्री रोती है——सा स्त्री रोदिति।

बच्चे जाग जाएँगे--शिशवः जागरिष्यन्ति।
तुम क्या जानते हो?--त्वं किं जानासि (वा वेत्सि)?
वह घूस लेता है--सः उत्कोचं गृह्णाति (वा लाति)
मैं जूता खरीदता हूँ--अहम् उपानहं क्रीणामि।
वे लोग क्या कर रहे हैं?--ते किं कुर्वन्ति (ते किं कुर्वन्तः सन्ति)?
वह महुआ चुनती है--सा मधूकफलानि चिनोति।
ग्वाला गाय दूहता है--गोपः गां दोग्धि।
बछड़ा फेन चाटता है--वत्सः फेनं लेढि।
ग्वालिन दही मथती है--गोपी दधि मथ्नाति (मन्थति)।
मैं कम्बल बिछाता हूँ--अहं कम्बलं स्तृणामि। (विस्तारयामि, विच्छादयामि)।
बढ़ई लकड़ी काटता है--वार्द्धकिः काष्ठं छिनत्ति।
राम ने धनुष तोड़ा--रामः धनुः अभनक्।
मैं ताले की कुंजी लूँगा--अहं तालकस्य कुञ्चिकां ग्रहीष्यामि।
वह सेरभर तेल खरीदती है--सा सेटकमात्रं तैलं क्रीणाति।
पावभर दही ले लो--कुडवमात्रं दधि गृहाण।
मैं मेले में कलम खरीदूँगा--अहं मेलायां लेखनीं क्रेष्यामि।
किसान खलिहान में पुआल बिछाता है--कृषकः खले पलालं स्तृणाति।
वह नाड़े से बाल बाँधती है--सा कवरेण बालान् (केशान्) बध्नाति।
राज ओसारे पर पलस्तर देता है--लेपकः उपशाले पुस्तं ददाति।
वह फटे हुए पन्ने को गोंद से जोड़ता है--स शीर्णं पत्रं निर्यासेन युनक्ति।
झटपट यह काम करो--झटिति इदं कार्यं कुरु।

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु --**

वह क्या करती है? वह फूल चुनती है। तुम क्या करते हो? मैं घास (घासम्) काटता हूँ। वह झूठ (मिथ्या) बोलता है। मैं सच (सत्यम्) बोलता हूँ। वह पलंग पर (पर्यङ्के) सोता है। मैं चटाई पर (कटे) सोता हूँ। वह कहानी सुनती है। मैं यह बात सुनूँगा। तुमने क्या सुना? कैदी ने जेल की दीवाल तोड़ डाली। मैं इस टूटे हुए शीशे को (भग्नं काचम्) जोड़ूँगा। वह बकरी दूहता है। लड़का मधु चाटता है। मैं तुमको (तुभ्यम्) बीस रुपए दूँगा। वह मेरी कलम (लेखनी) नहीं देता है। तुमने किसके हाथ में चिट्ठी दी? अँधेरे में उतरता है। भेड़िया (वृकः) खरगोश को (शशम्) मारता है। उसको चीते ने (चित्रकः) मार डाला। वह घोड़ा खरीदता है। मैं एक घड़ी (घटिकाम्) खरीदूँगा।

तुमने यह छड़ी (यष्टिम्) किस दूकान से खरीदी? वह बाजार में (पण्य-वीथिकायाम्) पेटी (पेटिकाम्) खरीदता है। मैं यह बात जानता हूँ। तुम कुछ नहीं (किमपि न) जानते। एक बार देवताओं ने समुद्र मथा। वह क्यों रोती है? तुम क्या बोले? मैं अब सोऊँगा। वह जाग गया। तुम क्या लोगे? मैं एक अशर्फी (स्वर्णमुद्राम्) लूँगा। हमलोग खेत में आड़ी (आलीम्) बाँधेंगे। मैं इस बबूल के पेड़ को (बब्बूलवृक्षं) काट डालूँगा। हमलोग अब अपने (स्वकीयानि ) काम करें।

## अनुवाद

**एकं नगरम् आसीत्**—एक शहर था।
**तत्र द्वौ श्रेष्ठिनौ आस्ताम्**—वहाँ दो सेठ थे।
**राज्ञः त्रयः पुत्राः आसन्**—राजा के तीन लड़के थे।
**साधुः अब्रवीत्**—साधु बोला।
**अहं दरिद्रः अस्मि**—मैं गरीब हूँ।
**ते धनिनः सन्ति**—वे लोग धनी हैं।
**स धर्मशास्त्रं जानाति**—वह धर्मशास्त्र जानता है।
**वयं सत्यं ब्रूमः**—हमलोग सत्य बोलते हैं।
**सा क्रीडनकं क्रीणाति**—वह खिलौना खरीदती है।
**स तृणं स्तृणाति**—वह घास बिछाता है।
**वासकस्य कुञ्चिकां देहि**—संदूक की चाभी दो।
**एतत् व्यजनं गृहाण**—यह पंखा लो।
**मत्कुणं नूनं जहि**—खटमल अवश्य मारो।
**कुक्कुरः उच्छिष्टं लेढि**—कुत्ता जूठा चाटता है।
**जम्बूफलानि चिनु**—जामुन के फल चुनो।
**दर्पणं कः अभनक्?**—आईने को किसने तोड़ा?
**रामः समुद्रम् अबध्नात्**—राम ने समुद्र को बाँधा।
**इमां वार्तां शृणु**—यह बात सुनो।
**मूषिकः शिक्यस्य रज्जुम् अच्छिनत्**—चूहे ने सींक की रस्सी काट डाली।
**व्रणे पट्टिकां बधान**—घाव पर पट्टी बाँधो।
**एरण्डवृक्षं छिन्धि**—रेंड़ के पेड़ को काट डालो।
**रामः रावणम् जघान**—राम ने रावण को मारा।

## अभ्यास



**हिन्दीवाक्यानाम् अनुवादं कुरु**—

गान्धारम् (कन्दहार) नाम एकं नगरम् अस्ति। तत्र एकः राजा आसीत्।

तस्य द्वे राज्यौ आस्ताम्। तस्य चत्वारः पुत्रा अपि आसन्। एकदा राज्ञः पुरोहितः अब्रवीत्—"भो राजन्! यज्ञं कुरु।" तदा राजा यज्ञम् अकरोत्। पुत्राः समिधम् अचिन्वन्! राज्ञ्यौ आसनानि अस्तृणीताम्। भृत्याः बहून् मेषान् बर्करान् अघ्नन्। ब्राह्मणाः अब्रुवन्—"भो राजन्! कुशं हस्ते गृहाण।" तदा राजा हस्ते कुशम् अगृह्णात्। सर्वेभ्यः बहूनि धनानि अददात्। विप्राः आशिषः अददुः—"भो राजन्! त्वं सर्वाणि सुखानि आप्स्यति।" ततः ते अशृण्वन्। एकः संन्यासी ब्रवीति—"हा हन्त! (अफसोस) यूयम् एतान् पशुन् हथ। यूयम् धर्मस्य तत्त्वं न जानीथ। शृणुत, ये पापात् बिभ्यति ते पशून् न घ्नन्ति। ये निरीहाणां जीवानां वधं कुर्वन्ति ते अवश्यं दण्डं प्राप्नुवन्ति। अतः यूयं जीवान् न हत।"

***

# एकादशः पाठः

## आत्मनेपदी धातु

**संस्कृत में दो प्रकार के धातु होते हैं—**

**(१) परस्मैपदी।**

**(२) आत्मनेपदी।**

**अभी तक जो धातु बतलाए गए हैं वे पहले प्रकार के हैं। इनमें 'ति, तः, अन्ति' आदि विभक्तियाँ लगती हैं। आत्मनेपदी धातुओं में 'ते, आते, अन्ते' आदि विभक्तियाँ लगती हैं। इस पाठ में कुछ धातु दिए जाते हैं।**

| धातु | वर्त्तमान (लट्) | भूत (लङ्) | भविष्यत् (लृट्) |
|---|---|---|---|
| **वृत्** (होना) | **वर्त्तते** | **अवर्त्तत** | **वर्तिष्यते, वर्त्स्यति** |
| **शिक्ष्** (सीखना) | **शिक्षते** | **अशिक्षत** | **शिक्षिष्यते** |
| **सेव्** (सेवा) | **सेवते** | **असेवत** | **सेविष्यते** |
| **सह्** (सहना) | **सहते** | **असहत** | **सहिष्यते** |
| **वन्द्** (प्रणाम करना) | **वन्दते** | **अवन्दत** | **वन्दिष्यते** |
| **लभ्** (पाना) | **लभते** | **अलभत** | **लप्स्यते** |
| **यत्** (यत्न करना) | **यतते** | **अयतत** | **यतिष्यते** |
| **कम्प्** (काँपना) | **कम्पते** | **अकम्पत** | **कम्पिष्यते** |
| **लज्ज्** (लजाना) | **लज्जते** | **अलज्जत** | **लज्जिष्यते** |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| *रभ् | (शुरू करना) | रभते | अरभत | रप्स्यते |
| †डी | (उड़ना) | डयते | अडयत | डयिष्यते |
| दय् | (दया करना) | दयते | अदयत | दयिष्यते |
| क्षम् | (क्षमा करना) | क्षमते | अक्षमत | क्षमिष्यते |
| शुभ् | (शोभा देना) | शोभते | अशोभत | शोभिष्यते |
| द्युत् | (चमकना) | द्योतते | अद्योतत | द्योतिष्यते |
| वृध् | (बढ़ना) | वर्द्धते | अवर्द्धत | वर्द्धिष्यते |
| याच् | (माँगना) | याचते | अयाचत | याचिष्यते |
| ईक्ष | (देखना) | ईक्षते | ऐक्षत | ईक्षिष्यते |
| जन् | (उत्पन्न होना) | जायते | अजायत | जनिष्यते |
| ‡मृ | (मरना) | म्रियते | अम्रियत | मरिष्यति |
| यज् | (यज्ञ करना) | यजते | अयजत | यक्ष्यते |
| वप् | (बोना, गर्भाधान करना, काटना) | वपते | अवपत | वप्स्यते |
| प्लु | (तैरना) | प्लवते | अप्लवत | प्लोष्यते |
| कूर्द | (कूदना) | कूर्दते | अकूर्दत | कूर्दिष्यते |
| युध् | (लड़ना) | युध्यते | अयुध्यत | योत्स्यते |
| खिद् | (खेद करना) | खिद्यते | अखिद्यत | खेत्स्यते |
| मन् | (मानना) | मन्यते | अमन्यत | मंस्यते |
| विद् | (होना) | विद्यते | अविद्यत | वेत्स्यते |
| शी | (सोना) | शेते | अशेत | शयिष्यते |

## अनुवाद

असौ कः वर्त्तते ?—यह कौन है ?
अयं छात्रः विद्यते—यह विद्यार्थी हैं।
अहं भवन्तं वन्दे—मैं आपको प्रणाम करता हूँ।
सा मातरं सेवते—वह माँ की सेवा करती है।
सरसि कमलानि राजन्ते—सरोवर में कमल शोभता है।
पिञ्जरात् शुकः उड्डीयते—पिंजड़े से सुग्गा उड़ता है।

* रभ् धातु का व्यवहार 'आ' उपसर्ग के साथ देखने में आता है। जैसे—आरभते (प्र और आ के साथ प्रारभते)।

† डी धातु का व्यवहार 'उत्' उपसर्ग के साथ देखने में आता है। जैसे—उड्डयते, उड्डीयते रूप भी होता है।



‡ मृ धातु के लट् में परस्मैपद का रूप होता है।

**ईश्वरः सर्वेषां दयते**--ईश्वर सबपर दया करता है।
**परेषां अपराधान् क्षमस्व**--दूसरों के कसूर क्षमा करो।
**मह्यं नर्म न रोचते**--मुझे दिल्लगी पसंद नहीं पड़ती।
**राकायां चन्द्रः शोभते**--पूर्णिमा में चंद्रमा शोभता है।
**अद्य अमायां तिमिरं विद्यते**--आज अमावस को अँधेरा है।
**वयम् इदं मन्यामहे**--हमलोग यह मानते हैं।
**ते प्राङ्गणे शेरते**--वे लोग आँगन में सोते हैं।
**राजा वरम् अयाचत**--राजा ने वर माँगा।
**बीजात् अङ्कुरः जायते**--बीज से अंकुर होता है।
**वर्षासु कीटाः जायन्ते**--बरसात में कीड़े पैदा होते हैं।
**सर्वे जनाः मरिष्यन्ति**--सभी लोग मरेंगे।
**अहं रात्रौ निद्रां न अलभे**--मैंने रात में नींद नहीं पाई।
**स महात्मनः गवेषयते**--वह महात्माओं को खोजता है।
**वयं किमपि न याचामहे**--हमलोग कुछ नहीं माँगते।

## अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु**--

अहं अनुवादं प्रारभे। ईश्वरं वन्दे। स्वर्णस्य अङ्गुलीयकम् (अँगूठी) राजते। मम गात्रं (शरीर) कम्पते। शुक्लपक्षस्य चन्द्रमाः वर्द्धते। शाकेन रोगाः वर्द्धन्ते। भिक्षुकः भिक्षां (भीख) याचते। त्वं किं मन्यसे? अहं सप्तहस्तमात्रं कूर्दे। पल्वले (तलैया में) भेकाः प्लवन्ते। रणाङ्गणे (लड़ाई के मैदान में) सैनिकाः युध्यन्ते। युवां व्यर्थं खिद्येथे। स सर्षपस्य बीजानि वपते। भवान् किं गवेषयते? नित्यं प्राणिनः जायन्ते। वर्षासु कर्दमः (कीचड़) जायते। भूमिः पिच्छिला (पिच्छड़) वर्त्तते। पद्यासु (पगडंडियों पर) हरिताः घासाः जायन्ते। तैले खली (तेल में खली) विद्यते। पर्वते धूमः (धुआँ) विद्यते। काकस्य शावकः (कौए का बच्चा) नीडात् (घोंसले से) उड्डयिष्यते। साधवः स्वर्गं लभन्ते। दुराचारिणः नरकस्य यन्त्रणाः (तकलीफें) प्राप्नुवन्ति। प्रातः मा शेथाः। सर्वे जन्तवः म्रियन्ते। सा काश्याम् अम्रियत। बालकाः वायुयानम् (हवाई जहाज) ईक्षन्ते। ताः कन्याः पाठशालायाम् अधीयते।

## अनुवाद

चिड़िया उड़ती है--**पक्षी उड्डीयते (उड्डयते)।**
बंदर कूदते हैं--**वानराः कूर्दन्ते।**
दो तीतर लड़ते हैं--**तित्तिरौ युध्येते।**

तुम क्यों खिन्न होते हो?—त्वं कथं खिद्यसे ?
आँधी में नावें हिलती हैं—वात्यायां नावः कम्पन्ते।
मल्लाह लोग तैरते हैं—धीवराः प्लवन्ते (सन्तरन्ति)।
वह खटिया पर सोता है—स खट्वायां शेते (संविशति, स्वपिति)।
किसानों ने बीज बोए—कृषकाः बीजानि अवपन्त।
कोंहड़े की लता बढ़ रही है—कूष्माण्डस्य लता वर्द्धते (एधते)।
वह हिसाब सीखता है—स गणितं शिक्षते।
लड़कों को लड्डू अच्छे लगते हैं—बालकेभ्यः लड्डुकाः रोचन्ते (स्वदन्ते)।
यह खिड़की से मुझे देखता है—स गवाक्षात् माम् ईक्षते (पश्यति)।
भिखमंगा चिथड़ा माँगता है—भिक्षुकः कन्था याचते (भिक्षते)।
महाजन ने सूद पाया—उत्तमर्णः कुसीदम् अलभत।
मैं जरूर कोशिश करूँगा—अहं नूनं यतिष्ये, चेष्टिष्ये।
उसने गाली-गुफ्ता शुरू किया—स गालिप्रदानम् आरभत।
वह देर से तुमको खोजता है—स चिरात् त्वां गवेषयते। (मार्गयति, अन्वेषयति)
मैंने आपकी बात मानी—अहं भवतः वचनम् अमन्ये।
उसे एक लड़की हुई—तस्य एका कन्या अजायत।
उसका नाना मर गया—तस्य मातामहः अम्रियत।

### अभ्यास

संस्कृतेऽनुवादं कुरु—

वह आराम (आरामं) पाता है। तुम बड़ी तकलीफ (कष्टं) सहते हो। महाजन का सूद रोज-रोज (प्रतिदिनं) बढ़ता है। तुम क्यों लजाते हो? वह क्या सीखता है? मैं यह बात मानता हूँ। धाई (धात्री) बच्चे की सेवा करती है। क्रोध से उसके होंठ काँपते हैं। दो कबूतर (कपोतौ) उड़ते हैं। हीरे का नग चमकता है। वह इस खेत में कपास का (कार्पासस्य) बीज बोता है। वह मकान की छत से (छदेः) कूद पड़ा। वे लोग आपस में लड़ेंगे। तुम कहाँ सोओगे? दूकानदार (आपणिकः) सौदे का (पणायितस्य) दाम माँगता है। उसे दिल्लगी अच्छी लगती है। उसके पाँव में बिमाई (दारी) है। दो लोमड़ियाँ (खिखिरौ) आपस में लड़ती हैं। बिल्ली (बिडाली) छप्पर पर से (चालात्) कूद पड़ी। तराजू में बटखरे (तलघटाः) हैं। तुम्हारी चादर में (आवेष्टने) झालर (दशा) है। अपनी चाची को प्रणाम करो। तुम आलमारी में क्या खोजते हो? इस कटोरे में (कंसे) रावड़ी (सन्तानिका) नहीं है। दूध में खोआ बनता है (जायते)।

# द्वादशः पाठः

## हिंदी के काल और उनके संस्कृत रूप

### १. वर्त्तमानकाल

**(१) सामान्य वर्त्तमान—**

| | |
|---|---|
| वह जाता है<br>**स: गच्छति** | वे जाते हैं<br>**ते गच्छन्ति** |
| तू जाता है<br>**त्वं गच्छसि** | तुमलोग जाते हो<br>**यूयं गच्छथ** |
| मैं जाता हूँ<br>**अहं गच्छामि** | हम जाते हैं<br>**वयं गच्छाम:** |

**(२) तात्कालिक वर्त्तमान—**

| | |
|---|---|
| वह जा रहा है<br>**स: गच्छन् अस्ति** | वे जा रहे हैं<br>**ते गच्छन्त: सन्ति** |
| तू जा रहा है<br>**त्वं गच्छन् असि** | तुमलोग जा रहे हो<br>**यूयं गच्छन्त: स्थ** |
| मैं जा रहा हूँ<br>**अहं गच्छन् अस्मि** | हम जा रहे हैं<br>**वयं गच्छन्त: स्म** |

गच्छत् =जाता हुआ। **पुं०—गच्छन् गच्छन्तौ गच्छन्त:**
गच्छन्ती =जाती हुई। **स्त्री०—गच्छन्ती गच्छन्त्यौ गच्छन्त्य:**

**(३) सन्दिग्ध वर्त्तमान—**

| | |
|---|---|
| वह जाता होगा<br>**स गच्छन् भवेत्** | वे जाते होंगे<br>**ते गच्छन्त: भवेयु:** |
| तू जाता होगा<br>**त्वं गच्छन् भवे:** | तुमलोग जाते होगे<br>**यूयं गच्छन्त: भवेत** |
| मैं जाता हूँगा<br>**अहम् गच्छन् भवेयम्** | हम जाते होंगे<br>**वयं गच्छन्त: भवेम** |

### २. भूतकाल

**(१) सामान्यभूत—**

| | |
|---|---|
| वह गया<br>**स: अगच्छत (गतवान्)** | वे गए<br>**ते अगच्छन (गतवन्त:)** |

| | |
|---|---|
| तू गया<br>त्वम् अगच्छः (गतवान्) | तुमलोग गए<br>यूयम् अगच्छत (गतवन्तः) |
| मैं गया<br>अहम् अगच्छम् (") | हम गए<br>यूयम् अगच्छाम (गतवन्तः) |

(२) आसन्नभूत--

| | |
|---|---|
| वह गया है<br>सः गतवान् अस्ति | वे गए हैं<br>ते गतवन्तः सन्ति |
| तू गया है<br>त्वं गतवान् असि | तुमलोग गए हो<br>यूयं गतवन्तः स्थ |
| मैं गया हूँ<br>अहं गतवान् अस्मि | हम गए हैं<br>वयं गतवन्तः स्म |

गतवत् के रूप पुँल्लिग में--गतवान् गतवन्तौ गतवन्तः।
स्त्रीलिंग में-- गतवती गतवत्यौ गतवत्यः। नदीवत्
नपुं० में-- गतवत् गतवती गतवन्ति। जगत् के समान।

(३) पूर्णभूत--

| | |
|---|---|
| वह गया था<br>सः गतवान् आसीत् | वे गए थे<br>ते गतवन्तः आसन् |
| तू गया था<br>त्वं गतवान् आसीः | तुमलोग गए थे<br>यूयं गतवन्तः आस्त |
| मैं गया था<br>अहं गतवान् आसम् | हम गए थे<br>वयं गतवन्तः आस्म |

(४) अपूर्णभूत--

| | |
|---|---|
| वह जाता था<br>सः गच्छन् आसीत् | वे जाते थे<br>ते गच्छन्तः आसन् |
| तू जाता था<br>त्वं गच्छन् आसीः | तुमलोग जाते थे<br>यूयं गच्छन्तः आस्त |
| मैं जाता था<br>अहम् गच्छन् आसम् | हम जाते थे<br>वयं गच्छन्तः आस्म |

वर्तमानकालिक क्रियाओं में 'स्म' जोड़कर भी अपूर्णभूत का अनुवाद कर सकते हैं। जैसे--

**स गच्छति स्म** = वह जाता था।
**एको राजा प्रतिवसति स्म** = एक राजा रहता था।

**(५) संदिग्धभूत--**

| | |
|---|---|
| मैं गया हूँगा<br>**अहं गतवान् भवेयम्** | हम गए होंगे<br>**वयं गतवन्तः भवेम** |
| वह गया होगा<br>**सः गतवान् भवेत्** | वे गए होंगे<br>**ते गतवन्तः भवेयुः** |
| तू गया होगा<br>**त्वं गतवान् भवेः** | तुम गए होगे<br>**यूयं गतवन्तः भवेत** |

**(६) हेतुहेतुमद्भूत--**

| | |
|---|---|
| वह जाता<br>**सः अगमिष्यत्** | वे जाते<br>**ते अगमिष्यन्** |
| तू जाता<br>**त्वम् अगमिष्यः** | तुम जाते<br>**यूयं अगमिष्यत** |
| मैं जाता<br>**अहं अगमिष्यम्** | हम जाते<br>**वयं अगमिष्याम** |

## ३. भविष्यत्काल

**(१) सामान्यभविष्यत्--**

| | |
|---|---|
| वह जाएगा<br>**स गमिष्यति** | वे जाएँगे<br>**ते गमिष्यन्ति** |
| तू जाएगा<br>**त्वं गमिष्यसि** | तुम जाओगे<br>**यूयं गमिष्यथ** |
| मैं जाऊँगा<br>**अहं गमिष्यामि** | हम जाएँगे<br>**वयं गमिष्यामः** |

**(२) सम्भाव्यभविष्यत्--**

| | |
|---|---|
| वह जाए<br>**सः गच्छेत्** | वे जाएँ<br>**ते गच्छेयुः** |
| तू जाए<br>**त्वं गच्छेः** | तुम जाओ<br>**यूयं गच्छेत** |
| मैं जाऊँ<br>**अहं गच्छेयम्** | हम जाएँ<br>**वयं गच्छेम** |

टिप्पणी—(१) 'आप जाते हैं', 'आप जा रहे हैं' आदि का अनुवाद करने के लिए 'भवान्' के साथ प्रथमपुरुष की ही क्रिया जोड़ी जाती है, जैसे—
आप जाते हैं=भवान् गच्छति।
आपलोग जा रहे हैं=भवन्तः गच्छन्तः सन्ति।

(२) 'आओ', 'जाओ' आदि आदेशार्थक क्रियाओं का अनुवाद लोट् लकार से होता है (जिसका वर्णन अन्यत्र मिलेगा) जैसे—
तुम जाओ=त्वं गच्छ।
तुमलोग आओ=यूयम् आगच्छत।
आप जाइए=भवान् आगच्छतु।
आपलोग आवें=भवन्तः आगच्छन्तु।

(३) 'जाना चाहिए', 'खाना चाहिए' आदि क्रियाओं का अनुवाद 'तव्य' वा 'अनीय' प्रत्यय से करना चाहिए। जैसे—

उसे जाना चाहिए
तेन गन्तव्यम्, गमनीयम्

उन लोगों को जाना चाहिए
तः गन्तव्यम्, गमनीयम्

तुझे जाना चाहिए
त्वया गन्तव्यम्, गमनीयम्

तुमलोगों को जाना चाहिए
युष्माभिः गन्तव्यम्, गमनीयम्

मुझे जाना चाहिए
मया गन्तव्यम्, गमनीयम्

हमलोगों को जाना चाहिए
अस्माभिः गन्तव्यम्, गमनीयम्

टिप्पणी—(१) स्त्रीलिंग में 'तेन' के बदले 'तया' और 'तैः' के स्थान में 'ताभिः' कर देना चाहिए।

(२) 'आप' के साथ 'चाहिए' का अनुवाद इस प्रकार होगा—

आपको जाना चाहिए
पुँ०—भवता गन्तव्यम्
स्त्री०—भवत्या गन्तव्यम्

आपलोगों को जाना चाहिए
पुँ०—भवद्भिः गन्तव्यम्
स्त्री०—भवतीभिः गन्तव्यम्

## अभ्यास

संस्कृतेऽनुवादं कुरु—

मैं पढ़ता हूँ। वह खाता होगा। उसने गाया था (गीतवान् आसीत्)। वह लिखती थी। तुमको पढ़ना चाहिए। हमलोग आ रहे हैं। आप बैठें

(उपविशतु)। मैं कह रहा हूँ। तुम सुनो। मैंने देखा है। वह खेलती

होगी। तुमलोग सोए (सुप्तवन्तः) थे। मैं जगा (जागरितवान्) था। तुमलोग हँस रहे हो। वे लोग रो रहे हैं। तू गया होगा। वे लोग आवें। तू दौड़ता था। वह पानी पी रहा था। तुमलोग चिल्ला रहे हो। आपलोगों को समझना चाहिए (बोधितव्यम्)। मैं सोचता हूँ (विचारयामि)। वह कुछ कहती है। मैं कुछ नहीं जानता। लोग सब सुखी होते। किसीको (केनचित्) झूठ नहीं बोलना चाहिए। हमें सदा सचाई की राह पर (सत्यमार्गः) चलना चाहिए (अनुसरणीयः)।

***

# त्रयोदशः पाठः

## कर्मवाच्य और भाववाच्य

( १ )

राम ग्रंथ को पढ़ता है।

राम से ग्रंथ पढ़ा जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में पहला कर्तृवाच्य और दूसरा कर्मवाच्य है। पहले से दूसरे में क्या अन्तर है?

(१) जो कर्त्ता था, उसमें तृतीया विभक्ति लगाई गई है।
(२) जो कर्म था, उसमें प्रथमा विभक्ति लगाई गई है।
(३) क्रिया का रूप बदल दिया गया है।

संस्कृत में भी कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए ये ही नियम लागू होते हैं। जैसे—

रामः ग्रन्थम् पठति—(कर्तृवाच्य)।
रामेण ग्रन्थः पठ्यते—(कर्मवाच्य)।

संस्कृत में कर्मवाच्य तथा भाववाच्य की क्रिया बनाने के लिए—

(१) धातु के अंत में 'य' * जोड़ दिया जाता है और 'य' के बाद आत्मनेपद की विभक्तियाँ लगती हैं।

* यह 'य' लट्, लोट्, लङ और विधिलिङ लकार में जोड़ा जाता है। जोड़ने के बाद उपर्युक्त लकारों के [illegible] होते हैं।

**विशेष--**

**(१) 'य' जोड़ने के समय बहुत-से आकारांत धातुओं के अन्तिम 'आ' के स्थान में 'ई' हो जाता है। जैसे—**

| | |
|---|---|
| दा--दीयते। | पा--पीयते। |
| स्था--स्थीयते। | धा--धीयते। |

**(२) बहुत-से इकारांत और उकारांत धातुओं का अंतिम स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे--**

| | |
|---|---|
| जि--जीयते। | श्रु--श्रूयते। |
| चि--चीयते। | स्तु--स्तूयते। |

**निम्नलिखित धातुओं के कर्मवाच्यवाले रूप कुछ विलक्षण होते हैं। उन्हें मुखस्थ कर लेना चाहिए।**

| | |
|---|---|
| वद्--उद्यते। | ग्रह्--गृह्यते। |
| वच्--उच्यते। | प्रच्छ्--पृच्छ्यते। |
| वस्--उष्यते। | बन्ध्--बध्यते। |
| वह्--उह्यते। | व्यध्--विध्यते। |
| वप्--उप्यते। | ह्वे--हूयते। |
| स्वप्--सुप्यते। | गै--गीयते। |

**भाववाच्य में भी वे ही क्रियाएँ लगती हैं। भेद इतना ही है कि कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार क्रिया का पुरुष-वचन होता है, किन्तु भाववाच्य में कर्म नहीं होता, उसमें सदा प्रथमपुरुष एकवचनान्त क्रिया लगती है। जैसे--**

उससे गाया जाता है=**तेन गीयते।**
मुझसे सोया नहीं जाता=**मया न सुप्यते।**

## अनुवाद

इस कलम से लिखा जाता है=**अनेन कलमेन लिख्यते।**
गंधक से क्या किया जाता है? =**गन्धकेन किं क्रियते?**
साबुन से कपड़ा धोया जाता है=**सर्जिवट्या वस्त्रं प्रक्षाल्यते।**
आँखों से देखा जाता है=**अक्षिभ्यां दृश्यते।**
कानों से सुना जाता है=**कर्णाभ्यां श्रूयते।**
नाक से सूँघा जाता है=**नासिकया घ्रायते।**
जीभ से चखा जाता है=**जिह्वया आस्वाद्यते।**

त्वचा से छूआ जाता है=**त्वचया स्पृश्यते।**

मुझसे चला नहीं जाता=**मया न चल्यते।**
वहाँ क्या देख पड़ता है?=**तत्र किं दृश्यते?**
यहाँ चक्की का शब्द सुन पड़ता है=**तत्र पट्टस्य शब्दः श्रूयते।**
तुमसे खाया क्यों नहीं जाता?=**त्वया कथं न भुज्यते?**
मुजरिम पुकारा जाता है=**अपराधी हूयते।**
सीकड़ से हाथी बाँधा जाता है=**शृङ्खलया हस्ती बध्यते।**
मुझसे यहाँ नहीं रहा जाता=**मया अत्र न स्थीयते।**
कचहरी से दस्तावेज दिया जाता है=**न्यायालयेन पणबन्धपत्रं दीयते।**
ईमानदार हाकिम से घूस नहीं लिया जाता=**निष्पक्षेण विचारपतिना उत्कोचो न गृह्यते।**
बहुत से सवाल पूछ जाते हैं=**बहवः प्रश्नाः पृच्छ्यन्ते।**
यहाँ आया जाय=**अत्र आगम्यताम्।**
आसन पर बैठा जाय=**आसने उपविश्यताम्।**
भात पकाया गया=**ओदनः अपच्यत।**
दो बाघ मारे गए=**द्वौ व्याघ्रौ अहन्येताम्।**
खान में हीरे पाए गए=**खनौ हीरकाणि अलभ्यन्त।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

क्या पूछा जाता है? यह बात कही जाती है। तुम पुकारे जाते हो। गाय दुही जाती है। मोट ढोए जाते हैं। जंगल के पेड़ बढ़ते जाते हैं। मुझसे चारपाई पर सोया नहीं जाता। चोर बाँधा जाता है। खेत में धान काटा जाता है। इस खेत में अरहर के बीज बोए जाएँगे। आपके द्वारा क्या कहा गया? सभी डाकू (दस्यवः) पकड़े गए। वह चिट्ठी पढ़ी जाती है। वहाँ कुछ आहट सुन पड़ती है। मंदिर में पूजा की जा रही है। घंटे का शब्द सुनाई देता है। सड़क पर बहुत-से लोग दीखते हैं। पेड़ के थाले में (आलवाले) पानी सींचा जा रहा है। नाली धोई जा रही है। कूड़ा-कचड़ा फेंका जा रहा है। साले के साथ दिल्लगी की जाती है। पुए (पूपाः) पकाए जा रहे हैं। यह सच जान पड़ता है। उसके घर में चोरी का माल (लोप्त्रम्) पाया गया। लड़ाई में दस हजार सिपाही मारे गए। आज यहीं रहा जाए। एक बात सुनी जाए। पान लिया जाय। गरीबों को पैसे दिए जायेंगे। मकान भाड़े पर दिया जाएगा। यह आलमारी नीलाम की जाएगी। तुम पुलिस से पकड़े जाओगे।

### अनुवाद

तेन पठ्यते=उससे पढ़ा जाता है।
मया श्रूयते=मुझसे सुना जाता है।
त्वया न उच्यते=तुमसे बोला नहीं जाता।
मया स दृश्यते=मुझसे वह देखा जाता है।
तेन अहं दृश्ये=मैं उससे देखा जाता हूँ।
त्वं पृच्छ्यसे=तुम पूछे जाते हो।
यूयं हूयध्वे=तुमलोग पुकारे जाते हो।
पापिभिः गावः हन्यन्ते=पापियों से गायें मारी जाती हैं।
साधवः पीडयन्ते=साधु लोग सताए जाते हैं।
ईश्वरः केनापि न ज्ञायते=ईश्वर किसीसे जाना नहीं जाता।
स वने अदृश्यत=वह जंगल में देखा गया।
कन्थायां मणिः अलभ्यत=गुदड़ी में मणि पाई गई।
अहं चिकित्सालयम् अनीये=मैं अस्पताल ले जाया गया।
ते युद्धे अहन्यन्त=वे लोग लड़ाई में मारे गए।
तुभ्यं दण्डः दास्यते=तुम्हें सजा दी जाएगी।
भवद्भ्यः पुरस्काराः दास्यन्ते=आपलोगों को इनाम दिए जाएँगे।
वयं न द्रक्ष्यामहे=हमलोग नहीं देखे जाएँगे।
आज्ञा दीयताम्=हुकुम दिया जाय।
द्वे वार्ते लिख्येताम्=दो बातें लिखी जायँ।
मम प्रश्ना श्रूयन्ताम्=मेरे सवाल सुने जाएँ।

### अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

सूचीकारेण वस्त्रं सीव्यते। मालाकारेण माले ग्रन्थ्येते। कुम्भकारेण घटाः निर्मीयन्ते। तैलिकेन तैलं निष्पीड्यते। गोपेन गावौ दुह्येते। कान्दविकेन चणकाः भृज्यन्ते। नापितेन केशाः कृत्यन्ते। रजकेन वस्त्राणि प्रक्षाल्यन्ते। गुरुणा छात्रः ताड्यते। अश्ववारेण अश्वः बध्यते। मुनिभिः तत्त्वं ज्ञायते। मया वेदाः पठ्यन्ते। त्वया व्याकरणं पठ्यते। त्वया पत्रं लिख्यते। युष्माभिः किं कथ्यते? अस्माभिः गीतं श्रूयते। तैः कथं हन्यते? युवाभ्यां कुत्र गम्यते? भवता किं पठ्यते? भवद्भिः कुत्र स्थीयते? मया अत्रैव (यहीं) उष्यते। तेन चन्द्रः दृश्यते। अहं गुरुणा अदृश्ये। राज्ञा यज्ञाः क्रियन्ते। [illegible]
अताड्यथाः। भवन्तौ अस्माभिः सेविष्येते। वयं सर्वैः स्तोष्यामहे। मया

पुस्तकानि गृह्यन्ते। त्वं न्यायालये नेष्यसे। तैः किं करिष्यते? भवता कुत्र गम्यते? त्वया श्लोकः पठ्यताम्। ताभ्यां छात्राभ्यां नाम्नी कथ्येताम्। अस्माभिः गीतानि गीयन्ताम्। भवता पीठे (पीढ़े पर) आस्यताम्। पादौ प्रक्षाल्येताम्। शष्कुल्यः (पूड़ियाँ) भुज्यन्ताम्।

***

( २ )

**जहाँ भूतकाल में कर्मवाच्य की क्रिया आती है, वहाँ 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द का भी व्यवहार कर सकते हैं। जैसे, मया चन्द्रः अदृश्यत=मया चन्द्रः दृष्टः** (मुझसे चंद्र देखा गया)। **तेन इदम् अक्रियत=तेन इदं कृतम्** (उससे यह किया गया)

**निम्नलिखित वाक्यों को देखने से यह बात भलीभाँति समझ में आ जाएगी—**

मुझसे भात खाया गया=**मया भक्तं भुक्तम्।**
उससे तुम देखे गए=**तेन त्वं दृष्टः।**
आपसे क्या सुना गया?=**भवता किं श्रुतम्?**
यह काम हमलोगों से किया गया=**इदं कर्म अस्माभिः कृतम्।**
तुमसे क्या पूछा गया?=**त्वया किं पृष्टम्?**
राजा से कहा गया=**राज्ञा कथितम् (उक्तम्)।**
उनसे दक्षिणा ली गई=**तैः दक्षिणा गृहीता।**
मुनि से शाप दिया गया=**मुनिना शापः दत्तः।**
रानी से प्रणाम किया गया=**राज्ञ्या प्रणामः कृतः।**
बिल्ली से दूध पी लिया गया=**बिडाल्या दुग्धं पीतम्।**
उससे चिट्ठी लिखी गई=**तेन पत्रं लिखितम्।**
मुझसे व्याकरण पढ़ा गया=**मया व्याकरणं पठितम्।**
उनसे गाना सुना गया=**तैः गीतं श्रुतम्।**
उससे खबर लाई गई=**तेन संवादः आनीतः।**
धोबी से कपड़े ले जाए गए=**रजकेन वस्त्राणि नीतानि।**
उससे दाम पाया गया=**तेन मूल्यं प्राप्तम्।**
दोस्त से सौगात भेजी गई=**मित्रेण उपहारः प्रेषितः।**
व्याध से हरिण मारा गया=**व्याधेन मृगः हतः।**

### अभ्यास

**क्त प्रत्ययांत क्रिया द्वारा कर्मवाच्येऽनुवादं कुरु—**

तुमने क्या कहा? मैंने एक बात सुनी। उसने एक साँप देखा। हम-लोगों ने मिठाइयाँ खाईं। उनलोगों ने कुशल पूछा। राजा ने प्रणाम किया।

मुनि ने आशीर्वाद दिया। तुमलोगों ने सवाल पूछा। उसने उत्तर दिया। हमलोगों ने केले खरीदे। किताब कौन ले गया? मैंने उसको वहीं देखा। कुँजड़ा तरकारी लाया। वैद्य ने दवा दी। रोगी ने पानी माँगा। मैंने वह किताब पढ़ी। तुमने यह बात समझी। ग्वाले ने गाय बेची। उसने भेड़ पाली। नाई ने बाल काटा। लुहार ने हल बनाया। किसान ने खेत जोता।

### अभ्यास

**(कर्तृवाच्यकर्मवाच्ये) हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

छात्रैः गुरुः वन्दितः। गोपेन गौः दुग्धा। कुलालेन घटः निर्मितः। कविना धनं प्रार्थितम्। दास्या जलम् आनीतम्। भृत्येन कार्यं कृतम्। ब्रह्मणा जगत् सृष्टम्। कालिदासेन काव्यं विरचितम्। तेन पत्रं प्रेषितम्। मया मयूरो न दृष्टः। विप्रेण विष्णुः पूजितः। तया पतिः सेवितः। त्वया किं बुद्धम्? अस्माभिः इदं ज्ञातम्। बालिकया सङ्गीतं शिक्षितम्। आवाभ्यां वेदाः पठिताः। राज्ञा किम् उक्तम्? मया किमपि न श्रुतम्।

**कहीं-कहीं कर्तृवाच्य के 'क्त' से भी भूतकाल की क्रिया का काम लेते हैं। जैसे—**

**स गृहं गतः**=वह घर गया।
**कः आगतः**=कौन आया?
**स तत्रैव स्थितः**=वह वहीं रहा।
**अद्य शिशुः जातः**=आज बच्चा पैदा हुआ।
**बालकः सुप्तः**=लड़का सो गया।
**अहं जागरितः**=मैं जाग गया।
**कपिः वृक्षम् आरूढः**=बन्दर पेड़ पर चढ़ गया।
**रोगी मृतः**=रोगी मर गया।

### अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु—**

छात्राः पाठशालां गताः। अद्य एकः अतिथिः आगतः। त्वं कुत्र चलितः? तस्य राज्ञः एकः पुत्रः जातः। वीरः रथम् आरूढः। तस्य भार्या मृता। रोगिणी शयिता। पथिकौ जागरितौ। ते तपोवनम् अधिष्ठिताः।

**कर्तृवाच्य 'क्त' द्वारा संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**



वे दोनों अपने गाँव गए। वे लोग मेरे घर पर आए। वह जहाज पर

चढ़ गया। गाड़ी चली। लोग मंदिर में ठहरे। मैं पेड़ के नीचे सो रहा। वह जाग गई। उसका भाई मर गया।

**जिस प्रकार 'क्त' प्रत्यय से भूतकाल की क्रिया का काम ले सकते हैं, उसी प्रकार 'क्तवतु' प्रत्यय से कर्तृवाच्य में भूतकाल की क्रिया का काम ले सकते हैं।**

टिप्पणी--'क्त' प्रत्यय के बाद 'वत्' जोड़ देने से क्तवत् प्रत्यय हो जाता है। क्तवत् प्रत्ययांत शब्द के रूप भवत् शब्द की तरह चलते हैं। जैसे--

उसने कहा=स **कथितवान्।**
तुमने पूछा=त्वं **पृष्टवान्।**
मैंने देखा=**अहं दृष्टवान्।**
आपने क्या कहा? =भवान् किम् उक्तवान्?
उसने यह काम किया=स इदं कार्यं कृतवान्।
तुमने क्या सुना? =त्वं किं श्रुतवान्?
मैंने भात खाया=**अहम् ओदनं भुक्तवान्।**
उन्होंने पानी पिया=**ते जलं पीतवन्तः।**
लड़की रोई=**बालिका रुदितवती।**
वे लोग हँसे=**ते हसितवन्तः।**
वे दोनों गए=**तौ गतवन्तौ।**
स्त्रियाँ आ गईं=**स्त्रियः आगतवत्यः।**
उसने धन पाया=स **धनं लब्धवान् (प्राप्तवान्)।**
वह सो गई=**सा सुप्तवती।**
लड़का कहाँ गया? =**बालकः कुत्र गतवान्?**
राजा ने धन दिया=**राजा धनं दत्तवान्।**

**अभ्यास**

**क्तवतु*--प्रत्यय द्वारा संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

मैंने तुमको वहाँ देखा। उसने यह समाचार सुना। उन्होंने कहा। तुम यह बात क्यों बोले? वह कहाँ चला गया? वह जोर से (उच्चैः) हँसा। वे लोग चिल्लाए। सभी डाकू भाग गए। उसने जंगल में भालू को आते हुए देखा। वह डरते-डरते पेड़ पर चढ़ गया। बुढ़िया कुछ नहीं

* क्तवतु और कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया तथा कर्त्ता के जो लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं वे ही इन दोनो प्रत्ययों में भी। आशुबोध १म पृ० का १म नियम।

बोली। तुमने आज क्या खाया? उसने दवा नहीं पी। मैंने रुपया ले लिया। लड़के ने इनाम पाया। वह कुछ खिलौने लाया। सवाल किसने पूछा? वह पटना (पाटलिपुत्रं) गया।

***

# चतुर्दशः पाठः

## प्रेरणार्थक क्रियाएँ

**बच्चा खाता है।**　　**माँ बच्चे को खिलाती है।**

**जिस तरह हिंदी में खाना, पीना, सोना आदि क्रियाओं से 'खिलाना', 'पिलाना', 'सुलाना' आदि प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं, उसी तरह संस्कृत में भी खाद्, पा, स्वप् आदि धातुओं में णिच् प्रत्यय लगाकर 'खादि', 'पायि', 'स्वापि' आदि धातु बनाए जाते हैं। ऐसे धातु णिजन्त कहलाते हैं। इनके रूप चुरादिगणीय धातु की तरह चलते हैं। इस पाठ में ऐसे ही धातुओं का प्रयोग कर दिखलाया जाता है। कुछ को छोड़ प्रायः सभी प्रेरणार्थक क्रियाओं में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनो होते हैं।**

### अनुवाद

माँ बच्चे को सुलाती है=**माता शिशुं स्वापयति (शाययति)।**
वह हमलोगों को पढ़ाता है=**सः अस्मान् पाठयति (अध्यापयति)।**
चरवाहे गायें चराते हैं=**वाहिकाः गाः चारयन्ति।**
कुम्हार चाक चलाता है=**कुलालः चक्रं चालयति।**
तुम कहानी सुनाते हो=**त्वं कथां श्रावयसि।**
मैं एक तमाशा दिखलाता हूँ=**अहम् एकं कौतुकं दर्शयामि।**
हमलोग उसे समझाते हैं=**वयं तं बोधयामः।**
भाँड़ लोगों को हँसाता है=**भण्डः जनान् हासयति।**
मुझे पानी पिलाओ=**मां पानीयं पायय।**
हमलोगों को मिठाई खिलाओ=**अस्मान् मिष्टान्नं भोजय।**
गरीबों को चावल दिलाओ=**दरिद्रेभ्यः तण्डुलं दापय।**
मुझे यह बतलाओ=**माम् एतत् ज्ञापय।**
उसने मुझको जगाया=**स माम् अजागरयत्।**

साधु ने आग जलाई=**साधुः अग्निम् अज्वालयत्।**
राजा ने पागल हाथी को मरवाया=**राजा मत्तं गजम् अघातयत्।**

मैंने लाठी उठाई=**अहं लगुडम् उदस्थापयम्।**
तुमने तलवार घुमाई=**त्वं तरवारिम् अभ्रामयः।**
वह बंदर नचाएगा=**स वानरं नर्त्तयिष्यति।**
आँधी मकान गिराएगी=**वात्या गृहं पातयिष्यति।**
मैं एक काम करवाऊँगा=**अहं एकं कार्यं कारयिष्यामि।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

मैं सुग्गे को पढ़ाता हूँ। लुहार लोहा गलाता है (द्रावयति)। सारथी रथ चलाता है। कुली (वाहिकः) मोटा उठाता है। वह पनिशाला में (पानीयशालिकायां) पानी पिलाती है। मैं तुमको नया हाल सुनाऊँगा। बाजीगर ने तमाशा दिखलाया। गवैयों ने गाने सुनाए। मैं तुम्हें एक चीज दिखलाऊँगा। उसको जगाओ। आग जलाओ। बैल को सानी खिलाओ। यहाँ कुश उखाड़ो (उत्पाटय)। मैं तुमको यह बतलाता हूँ। मुझे एक रुपया दिला दो। वह कठपुतली (काष्ठपुत्तलिकां) नचावेगा। मैं तुम्हें लड्डू खिलाऊँगा। नौकर मालिक को नहलाता है (स्नापयति)। मैं उसको समझाऊँगा। राजा शत्रुओं को मरवाता है। धोबिन कपड़े सुखाती है। उसने मुझे धर्मशास्त्र सुनाया। वह मुझे रोज दूध पहुँचाती है (प्रापयति)। मैं इस लड़के को घर भेजूँगा (गमयिष्यामि)। वह बिल में उँगली घुसाती है (प्रवेशयति)। आँधी नाव को डुबावेगी। (प्लावयिष्यति)। धाई बच्चे को दूध पिलाती है। वह कनेर का गाछ (गच्छं) रोपता है (रोपयति)। वह बकरियाँ पालती है (पालयति)। वह चिट्ठी लिखवाती है। बीमार को मत जगाओ।

## अनुवाद

**गोपालः देवदत्तेन पाचयति**=गोपाल देवदत्त से रसोई करवाता है।
**प्रभुः भृत्येन भारं वाहयति**=मालिक नौकर से बोझ ढुलाता है।
**अहम् एतेन उलूखलं नाययिष्यामि**=मैं इससे ऊखल लिवा ले जाऊँगा।
**स श्रमिकेण कटं कारयति**=वह मजदूर से चटाई बनवाता है।
**गुरुः छात्रेण पाठं स्मारयति**=गुरु विद्यार्थी से सबक याद करवाता है।
**स मया पुष्पसारं घ्रापयति**= वह मुझे इत्र सुंघाता है।
**अहं तम् औषधम् अखादयम्**=मैंने उसे दवा खिलाई।
**माता शिशुं मिष्टान्नम् आदयति**=माँ बच्चे को मिठाई खिलाती है।

टिप्पणी—उपर्युक्त धातुओं में प्रयोज्य कर्त्ता के साथ तृतीया विभक्ति लगी है। इसे ध्यान में रखना चाहिए।

### अभ्यास

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

अहं त्वया ओदनं पाचयिष्यामि। माता शिशुं संयावम् (हलुआ) अखादयत्। वैद्यः रोगिणं आर्द्रकम् (अदरख) आदयति। त्वं भृत्यैः किं कारयसि? अहं तया श्लोकं स्मारयामि। भवान् वासकं केन नाययिष्यति? अहं वाहिकेन (कुली से) पेटीं वाहयिष्यामि। गन्धिकः (गन्धी) अस्मान् सौरभाणि घ्रापयति।

***

## पञ्चदशः पाठः

## संयुक्त क्रियाएँ

मैं खा चुका। वह जाना चाहता है।

लड़का कहने लगा। हमलोग लिख सकते हैं।

**चिह्नांकित क्रियाओं को हिंदी में संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं। इनका अनुवाद करने के लिए कोई खास नियम नहीं है। कहीं केवल मूलधातु से, कहीं धातु में कोई प्रत्यय जोड़कर और कहीं शब्दांतर का प्रयोग कर इनका अनुवाद किया जा सकता है। जैसे--**

**अहं भुक्तवान्। स गन्तुमिच्छति।**
**बालकः कथयितुमारभत। वयं लेखितुं शक्नुमः।**

### संयुक्त क्रियावाले वाक्यों का अनुवाद

**जाना--**

मैं चला जाता हूँ=**अहं प्रतिष्ठे (गच्छाम्यहम्)।**
मिठाई खा जाओ=**मिष्टान्नं खादेव (भक्षय मिष्टान्नम्)।**
वह किताब ले गया=**स पुस्तकं नीतवान्।**
वह सो गई=**सा स्वापं वा निद्रां गता।**
वह सो गई=**सा निद्रागा जाता। सा सुप्ता।**
रानी को गर्भ रह गया=**रानी गर्भवती जाता।**
परीक्षा खतम हो गई=**परीक्षा समाप्ता (समाप्तिं गता)।**
वे लोग मर गए=**ते पञ्चत्वं गताः**

मकान जलकर राख हो गया=**गृहं भस्मीभूतम्।**

यह बात प्रकट हो गई=**इयं कथा प्रकाशं गता।**
यह बात चारों ओर फैल गई=**इयं वार्त्ता सर्वत्र प्रसृता।**
तुम दिन-दिन दुबले हुए जाते हो=**त्वम् अनुदिवसम् परिहीयसे अङ्गैः।**
यह लड़की तुम्हें सौंप जाता हूँ=**इमां बालिकां तव हस्ते निक्षिपामि।**
वह मौत के मुँह से बच गया=**स मृत्युमुखान्मुक्तः।**
पानी जमकर वर्फ हो गया=**जलं घनीभूय हिमभावमापन्नम्।**
अब मेरी चिंता छूट गई=**अधुनाहं वीतचिन्तो जातः।**
भोर हो गई=**प्रभाता रजनी।**
घर में आग लग गई=**अग्निना दीप्तं गेहम्।**
सभी प्रयत्न सफल हो गए=**सर्वे प्रयत्नाः सफलतां गताः।**
सिपाही लोग लड़ाई के लिए कमर कसकर तैयार हो गए=**सैनिकाः समराय बद्धपरिकरा बभूवुः।**
वह दोषी ठहराया गया=**स दोषी घोषितः।**
यह बात उसके कलेजे में चुभ गई=**एतद्वचः तस्य हृदयम् अस्पृशत्।**
डर के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गए=**भयेनाहं रोमाञ्चितो जातः।**

**चुकना—**

मैं भोजन कर चुका=**अहं भुक्तवान्।**
बहुत हो चुका=**आतिशय्यं जातम् (बहुजातम्, अतिसञ्जातम्)।**
क्या तुम नहा चुके ?=**अपि त्वं स्नातवान् ?**
जो मुझे कहना था मैं कह चुका=**यन्मे वक्तव्यमासीत् तन्मयोक्तम् वा उक्तम् मया यद् वक्तव्यम्।**
उसकी कहानी मैं पहले ही सुन चुकी हूँ=**तस्य कथा मया पूर्वमेव श्रुता।**
तुम बहुत पढ़ चुके=**त्वम् बहु पठितवान्।**
रसोई हो चुकी=**पाकः सम्पन्नः।**

**डालना—**

इस बात को लिख डालो=**इदं वृत्तम् लेख्यमारोपय।**
मकान को गिरा डालो=**भवनं भूमिसात् कुरु।**
चिट्ठी को फाड़कर फेंक डालो=**पत्रं खण्डशः कृत्वा प्रक्षिप।**
उसने सारी रामायण पढ़ डाली=**तेन सम्पूर्णं रामायणमधीतम्।**
डाकुओं ने सेठ को मार डाला=**दस्यवः श्रेष्ठिनं व्यापादितवन्तः।**
मैंने सब जगह उसे खोज डाला=**अहं सर्वत्र तमन्वैषयम्।**

**पड़ना—**

वह घुटनों के बल जमीन पर गिर पड़ा=**स जानुभ्यामवनौ गतः।**

बच्चा जोर से रो पड़ा=**शिशुरुच्चैरक्रोशत्।**
कहाँ से यह विपत्ति आ पड़ी ? =**कुतः इयं विपत्तिरागता ?**
वह शत्रुओं पर टूट पड़ा=**स रिपूनाक्रान्तवान् ?**
बाजा सुनाई पड़ता है=**वाद्यं श्रुतिगोचरं भवति (श्रूयते)।**
मुझसे बन पड़ेगा तो करूँगा=**यदि मम शक्यं भवेत् तर्हि करिष्यामि।**
औरतें आपस में लड़ पड़ीं=**स्त्रियो मिथः कलहं प्राप्ताः।**
तुम कहाँ से टपक पड़े ? =**त्वं कुतः समायातः ?**
मिठाई देखकर जीभ से लार टपक पड़ी=**मिष्टान्नं दृष्ट्वा रसनायाः लाला निःसृता।**
बाघ का बच्चा पिंजड़े से निकल पड़ा=**द्वीपिशावकः पिञ्जराद्विनिर्गतः।**
मेरे मुँह से आह निकल पड़ी=**मम शोकोच्छ्वासो निर्गतः।**

**उठना—**

उसका दिल पसीज उठा } = { **तस्य चित्तं मार्दवमभजत्।**
उसका हृदय पिघल उठा } = { **तस्य हृदयं द्रवीभूतम्।**
रोगी कराह उठा=**रोगिणा आर्त्तनादः कृतः।**
लड़की चिल्ला उठी=**बालिका चीत्कृतवती।**
मेरे मन में शंका हो उठी=**मम चेतसि शङ्कया पदं कृतम्।**
बूढ़ा जाड़े के मारे सिहर उठा=**वृद्धः शैत्येन वेपथुं प्राप।**
युवती लज्जा से सहम उठी=**युवती लज्जया स्तम्भिता जाता।**
तुम बीच में क्यों बोल उठे ? =**त्वया मध्ये किमाक्षिप्तम् ?**

**लगना—**

वह रोने लगी=**सा क्रन्दितुमारभत्।**
लड़के खेलने लगे=**बालकाः क्रीडायां संलग्नाः (खेलितुम् प्रवृत्ताः)।**
जब वह जाने लगा=**यदा स गन्तुमुद्यतः।**
वर्षा होने लगी=**वृष्टिः समागता।**
दादुर बोलने लगे=**दर्दुराः ध्वनिमारब्धवन्तः (रटितुमारब्धाः)।**
आम पकने लगे=**आम्राणि पक्वतामुपेतानि।**
कोयलें कूकने लगीं=**कोकिलाः कूजितुमारभन्त।**
किसान धान रोपने लगे=**कृषीवलैर्धान्यरोपणमारब्धम्।**
बन्दर डालों को हिलाने लगे=**कपयः शाखाः कम्पयितुमारभन्त।**
सिंह माँद में घुसने लगा=**सिंहः विवरं प्रवेष्टुमारभत।**
वह ढेले फेंकने लगा=**स लोष्टानि क्षेप्तुमारभत।**
मुनि लोग यज्ञ करने लगे=**मुनयो यष्टुमारभन्त।**

विद्यार्थी पाठ याद करने लगा=**छात्रः पाठं स्मर्त्तुमारभत।**
मैं जवाब लिखने लगा=**अहमुत्तरं लेखितुमारभे।**
वह गाँववालों को पुकारने लगा=**स ग्रामीणान् ह्वातुमारभत।**
गाँववाले लाठी लेकर दौड़ने लगे=**ग्राम्याः लगुडं गृहीत्वा धावितुमारभन्त।**
वे लोग पूछने लगे=**ते प्रष्टुमारभन्त।**
वह कहने लगा=**स कथयितुमारभत (वक्तुम् प्रवृत्तः)।**
जब वह मरने लगा=**यदा स मरणासन्नो जातः।**
वह सोचने लगी=**सा चिन्तयामास।**
पुजारी स्तुति करने लगा=**पूजकः स्तोतुमुपचक्रमे।**

**देना—**

मैं चिट्ठी उसके हाथ में दे दूँगा=**अहं पत्रं तस्य हस्ते प्रापयिष्यामि।**
लकड़ी जला दो=**काष्ठमग्निसात् कुरु।**
अब मुझे घर जाने दो **अनुजानीहि मां गृहगमनाय।**
धोबिन ने कपड़े को धूप में रख दिया=**रजकी वस्त्राणि रौद्रे दत्तवती।**
उसने बीमारी का बहाना लगा दिया=**तेन रोगापदेशः कृतः।**
थोड़ी देर के लिए इस बात को जाने दो=**मुहूर्त्तं तदास्ताम्।**
मेरा रुपया वापस दे दो=**मम द्रव्यं प्रतिनिवर्त्तयस्व (प्रत्यर्पय)।**

**लेना—**

उसने भौंहें सिकोड़ लीं=**स भ्रुवौ संकोचितवान्।**
मैंने आँखें मूँद लीं=**अहं नेत्रे निमीलितवान्।**
जरा मेरी बात सुन लो=**क्षणं मे वचनमाकर्णय।**
तब तक यहाँ सुस्ता लीजिए=**तावत् अत्रैव विश्राम्यतु भवान्।**
अपनी चीज ले लो=**स्ववस्तु प्रतिगृह्यताम्।**
चटपट यह काम कर लो=**झटिति सम्पादय कार्यमिदम्।**
बहती हुई गंगा में हाथ धो लो=**चलायां गङ्गायां हस्तौ प्रक्षालय।**
रोते हुए बच्चे को गोद में ले लो=**रुदन्तं शिशुं क्रोडे गृहाण।**

**सकना—**

मैं यह कर सकता हूँ=**अहमिदं कर्त्तुं शक्नोमि (पारयामि)।**
यह नहीं हो सकता=**इदं न भवितुं शक्नोति (इदमसम्भवम्)।**
मैं दुःख नहीं सह सकता=**अहमिदं दुःखं सोढुं न शक्नोमि।**
वे लोग आज नहीं जा सकते=**तेऽद्य न गन्तुं शक्नुवन्ति (पारयन्ति)।**
हमलोग नदी तैर सकते हैं=**वयं नदीं तर्त्तुं शक्नुमः (पारयामः)।**

तुम यह बोझा नहीं ढो सकते=**त्वमिमं भारं वोढुं न शक्नोषि।**
कोई यह बात नहीं जान सकता=**न कोऽप्यलमिमां वार्त्तां ज्ञातुम्।**
उसे कोई मार नहीं सकता=**न कोऽपि तं हन्तुं समर्थः।**
क्या मैं आ सकता हूँ ?=**अप्यहमागच्छेयम् ?**
तुम शौक से रह सकते हो=**त्वं प्रकामं (यथेच्छं) स्थातुमर्हसि।**
उसे कोई जीत नहीं सकता=**अजेयो हि सः।**
इस कवच को कोई छेद नहीं सकता=**अभेद्योऽयं कवचः।**
इस पहाड़ पर कोई मुश्किल से जा सकता है=**दुर्गमोऽसौ पर्वतः।**
यह विषय आसानी से समझ में आ सकता है=**सुबोध्योऽयं विषयः।**
इस लड़के को कोई सहज में रोक नहीं सकता=**दुर्निवारोऽयं बालकः।**
कर्म की रेख को कौन टाल सकता है ?=**भाग्यरेखां को निवारयितुं शक्तः ?**
कौन तुम्हारी रक्षा कर सकता है ?=**कस्त्वां त्रातुं (पातुं) समर्थः ?**
रोगी बच नहीं सकता=**रोगी चिकित्सातीतोऽस्ति (असाध्यो वर्त्तते)।**
तुम भागकर छिप नहीं सकते=**पलाय्य आत्मानं गोप्तुं न शक्नोषि।**

**चाहना—**

वह पढ़ना चाहता है=**स पठितुमिच्छति (पिपठिषति)।**
मैं यह पूछना चाहता हूँ=**अहमिदं प्रष्टुमिच्छामि (पिपृच्छिषामि)।**
मैं जल पीना चाहता हूँ=**अहं जलं पातुमिच्छामि (पिपासामि)।**
वह घर जाना चाहती है=**सा गृहं गन्तुमिच्छति (जिगमिषति)।**
माँ बेटे को देखना चाहती है=**माता सुतं द्रष्टुमिच्छति (दिदृक्षते)।**
आप क्या लेना चाहते हैं ?=**भवान् किं ग्रहीतुमिच्छति (जिघृक्षति) ?**
मैं मिठाई खाना चाहता हूँ=**अहं मिष्टान्नं भोक्तुमिच्छमि (बुभुक्षे)।**
कवि इनाम पाना चाहता है=**कविः पुरस्कारं लब्धुमिच्छति (लिप्सते)**
हमलोग यह जानना चाहते हैं=**वयमिदं ज्ञातुमिच्छामः (जिज्ञासामहे)।**
क्या तुम यहाँ ठहरना चाहते हो ?=**अपि त्वमत्र स्थातुमिच्छसि (तिष्ठासति) ?**
वह रुपया लेना चाहता है=**स द्रव्यं ग्रहीतुमिच्छति (जिघृक्षति)।**
मैं तुमको एक कौड़ी भी नहीं देना चाहता=**अहं ते कपर्दकमपि दातुमिच्छामि (दित्सामि)।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

वर्षा होने लगी। मैं माला गूँथ सकती हूँ (गुम्फितुं शक्नोमि)। वह नस (नस्य) लेना चाहता है। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। चोर को फाँसी दे दो (प्राणदण्डं देहि)। खुफिया जासूस ने (गुप्तचरः)

हत्यारे को (वधिकं) पकड़ लिया। उसकी दूसरी शादी (पुर्नविवाहः) हो गई। वह भाँग (भङ्गां) पीसना (पिष्) चाहता है। वह गुस्से से थरथराने लगा (वेपितुमारभत)। डर के मारे मेरा दिल धड़कने लगा। मैं तालाब में (कासारे) तैर (तृ) सकता हूँ। महाजन ने (उत्तमर्णः) कर्जदार (अधमर्णे) पर नालिश कर डाली। (अभियोगं कृतवान्)। वह ओखली (कण्डनी) में धान कूटने (कण्ड्) लगी। ककड़ी (कर्कटी) को तराश (खण्ड) लाओ। वह सभी हाल बयान करने लगा। नगाड़े पर (आनके) चोट पड़ने लगी। झाड़ू (मार्जनी) से घर बुहार डालो। दायाद लोग (दायादाः) जमीन बाँट लेना चाहते हैं (भाजयितुमिच्छन्ति)। सूअर कीचड़ में लोटने (लुठ्) लगा। मैं इस पत्थर को उठा सकता हूँ। तारों को कौन गिन सकता है? संसार का रहस्य कोई नहीं जान सकता।

***

# चतुर्थ भाग | विधेय के विस्तार

## प्रथमः पाठः

## अव्यय

जिस तरह हिंदी में अव्यय सदा एक समान रहते हैं, उसी तरह संस्कृत में भी। उनमें लिंग, विभक्ति, वचन आदि से रूप-भेद नहीं होते। इस पाठ में हिन्दी अव्ययों के अनुवाद सिखलाए जाते हैं।

### स्थानवाचक अव्यय

यहाँ—**अत्र। इह।**

यहाँ आओ=**अत्र आगच्छ (आयाहि)।**

वह यहाँ आता है=**स इह आगच्छति (आयाति)।**

वहाँ—**तत्र।**

वहाँ जाओ=**तत्र गच्छ (व्रज, याहि)।**

यहाँ से—**इतः।**

मैं यहाँ से जाऊँगा=**अहम् इतः गमिष्यामि।**

वहाँ से—**ततः।**

वह वहाँ से आवेगा=**स ततः आगमिष्यति (आयास्यति)।**

इधर-उधर—**इतस्ततः।**

वह इधर-उधर घूमता है=**स इतस्ततः भ्रमति (अटति, पर्यटति)।**

भीतर—**अन्तर्।**

रानी अंदर घुसती है=**राज्ञी अन्तः प्रविशति।**

बाहर—**बहिर्।**

तुमलोग बाहर जाओ=**यूयं बहिर् गच्छत (व्रजत, यात)।**

टिप्पणी—**'बहिर्' के साथ पंचमी विभक्ति लगती है।**

वह गाँव के बाहर रहता है=**स ग्रामात् बहिर् वसति।**

ऊपर—**उपरि।**

वह चाल के ऊपर बैठता है=**स चालस्य उपरि उपविशति।**

नीचे—**अधः ।**

वे लोग पेड़ के नीचे हैं=ते वृक्षस्य अधः सन्ति।

दूसरी जगह—**अन्यत्र ।**

तुम दूसरी जगह जाओ=त्वम् अन्यत्र गच्छ (व्रज, याहि)।

सब जगह—**सर्वत्र ।**

ईश्वर सब जगह रहता है=ईश्वरः सर्वत्र तिष्ठति।

आगे—**अग्रे । पुरतः ।**

वह आगे दौड़ता है=सः अग्रे धावति।

मकान के आगे सड़क है=गृहस्य पुरतः राजमार्गः अस्ति।

पीछे—**पश्चात् ।**

घर के पीछे फुलवारी है=गृहस्य पश्चात् पुष्पवाटिका विद्यते (फुल्लवाटी अस्ति)

नजदीक—**निकषा (वा समया) ।**

गाँव के नजदीक नदी बहती है=ग्रामं निकषा नदी वहति।

**टिप्पणी—'निकषा' और 'समया' के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।**

दूर—**दूरम्, दूरे ।**

वह गाँव से दूर रहता है=स ग्रामात् दूरं वसति।

**टिप्पणी—'दूरम्' के योग में पंचमी विभक्ति होती है।**

सामने—**अभितः ।**

किले के सामने हरा मैदान है=दुर्गमभितः हरितः (शाद्वलो) वर्त्तते।

अब—**इदानीम् । अधुना । साम्प्रतम् । सम्प्रति ।**

अब वह अंग्रेजी पढ़ता है=इदानीं स आङ्ग्लभाषां पठति।

अभी वह एक स्कूल में मास्टर है=अधुना स एकस्यां पाठशालायां शिक्षकोऽस्ति।

आजकल अकाल है—साम्प्रतं दुर्भिक्षं वर्त्तते।

तब—**तदा । तदानीम् । ततः ।**

तब वह राजा बोला=तदा स राजा अवदत्।

उस समय तूफान था=तदानीं वात्या आसीत्।

तब क्या हुआ?=ततः किमभवत्?

कब—**कदा ।**

तुम कब इम्तिहान दोगे?=त्वं कदा परीक्षां दास्यसि?

जब=**यदा।**

जब पानी बरसेगा तब अनाज उपजेंगे?=**यदा वृष्टिर्भविष्यति तदा अन्नानि उत्पत्स्यन्ते।**

दिन में--**दिवा।**

उल्लू दिन में नहीं देखता है=**उलूकः दिवा न पश्यति (ईक्षते)।**

रात में--**नक्तम्।**

रात में ओस की बूँदें गिरती हैं=**नक्तं तुषारबिन्दवः पतन्ति।**

सुबह में--**प्रातर्।**

सुबह में उठकर कुल्ली करो=**प्रातः उत्थाय गण्डूषं कुरु।**

शाम में--**सायम्।**

यह शाम को फुलवारी में टहलता है=**स सायं फुल्लवाटिकायाम् अटति (विचरति)।**

आज--**अद्य।**

मैं आज घर जाता हूँ=**अहमद्य गृहं गच्छामि (व्रजामि, यामि)।**

कल--**ह्यस्। ह्यः।**

वह कल यहाँ आया=**स ह्यः अत्रागच्छत्।**

कल--**श्वस्, कल्यम्।**

टिप्पणी--विगत दिन के लिए 'ह्यः' और आगामी दिन के लिये 'श्वः' का व्यवहार होता है।

मैं कल पूजा करूँगा=**अहं श्वः पूजां करिष्यामि।**

तुम कल कहाँ जाओगे?=**त्वं कल्यं कुत्र गमिष्यसि (यास्यसि)?**

परसों--**परश्वः।**

मैं परसों बनारस जाऊँगा=**अहं परश्वः काशीं गमिष्यामि।**

एक बार--**सकृत्।**

राजा लोग एक बार बोलते हैं=**सकृज्जल्पन्ति राजानः।**

बार-बार--**मुहुर्मुहुः। पुनः पुनः। भूयो भूयः। वारंवारम्।**

बार-बार वृष्टि होती है=**मुहुर्मुहुर्वृष्टिर्भवति।**

वह बार-बार आता है=**स पुनः पुनः आगच्छति।**

मैं बार-बार कहता हूँ=**भूयो भूयो वदाम्यहम्।**

अक्सर--**बहुधा। प्रायः।**

वह अक्सर बीमार रहता है=**स बहुधा रोगी तिष्ठति।**



हमेशा--**सदा। सर्वदा।**

वह हमेशा प्रसन्न रहती है=**सा सर्वदा प्रसन्ना तिष्ठति।**

सत्य सदा जीतता है=**सत्यं सदा जयति, विजयते।**

लगातार—**अजस्रम्। निरन्तरम्। अनवरतम्।**

लगातार पानी बरसा=**अजस्रम् वृष्टिरभवत्।**

वह लगातार पढ़ता है=**स निरन्तरं पठति।**

जल्द—**शीघ्रम्। झटिति। त्वरितम्।**

जल्द पढ़ो=**शीघ्रं पठ।**

झटपट जाओ=**झटिति गच्छ।**

तुरत दौड़ो=**त्वरितं धाव।**

देर तक, देर से—**चिरेण। चिरात्। चिरम्। चिराय। चिरस्य।**

वह देर से पढ़ता है=**स चिरेण पठति।**

मैं देर से बैठा हूँ=**अहं चिरात् उपविष्टोऽस्मि।**

वह देर तक सोता है=**स चिरं स्वपिति।**

बहुत काल तक के लिए ब्रह्मा प्रशंसाभाजन बन गए=**चिरस्य वाच्यं न गतः प्रजापतिः।**

धीरे-धीरे—**क्रमशः। शनैः शनैः।**

धीरे-धीरे घड़ा भरता है=**क्रमशः घटः पूर्यते।**

धीरे-धीरे पाँव रखता है=**शनैः शनैः पदं धत्ते।**

परसाल—**परुत्।**

परसाल अकाल पड़ा था=**परुत् दुर्भिक्षमभवत्।**

इस साल—**ऐषमः।**

इस साल मैं इम्तिहान दूँगा=**ऐषमः अहं परीक्षां दास्यामि।**

अगला साल—**परारि।**

आगामी वर्ष उसकी शादी होगी=**परारि तस्य विवाहो भविष्यति।**

धीरे से—**मन्दम्।**

वह धीरे से कान में कुछ कहता है=**स कर्णे किमपि मन्दं कथयति।**

चुपचाप—**तूष्णीम्।**

चुपचाप रहो=**तूष्णीं तिष्ठ।**

अचानक—**अकस्मात्। सहसा।**

अचानक एक शिकारी वहाँ आ पहुँचा=**सहसा एकः व्याधः तत्रायातः।**

अचानक उसके पैर फिसल गए=**सहसा तस्य पादौ अस्खलताम्।**

भाग्य से—**दिष्टया।**



भाग्य से उसको खजाना मिल गया=**दिष्ट्या स निधिमलभत।**

जोर से--**उच्चैः।**

वह जोर से चिल्लाता है=**स उच्चैः क्रोशति।**

एक समय--**एकदा।**

एक समय कोई राजा था=**एकदा कश्चित् राजा आसीत्।**

अच्छी तरह--**सम्यक्।**

वह अच्छी तरह बोलता है=**स सम्यक् भाषते।**

इस तरह--**इत्थम्।**

इस तरह देह दबाओ=**इत्थं देहं संवाहय।**

एक ही साथ--**युगपत्।**

वे एक ही साथ चिल्ला उठे=**ते युगपत् अक्रोशन्।**

साथ--**सह। सार्द्धम्। समम्।**

टिप्पणी--**इन तीनो के योग में तृतीया विभक्ति होती है।**

मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा=**अहं त्वया सह गमिष्यामि।**

रोटी के साथ शहद खाओ=**रोटिकया सार्द्धं मधु खाद।**

किसी के साथ झगड़ा मत करो=**केनापि साकं कलहं मा कुरु।**

अलग--**पृथक्।**

शिर धड़ से अलग हो गया=**मुण्डः तुण्डात् पृथक् अभवत्।**

बिना--**विना।**

धन के बिना कोई काम नहीं होता=**धनं विना किमपि कार्यं न भवति।**

धर्म के बिना जीना व्यर्थ है=**धर्मेण विना जीवनं व्यर्थम्।**

टिप्पणी--**विना के योग में द्वितीया, तृतीया और पंचमी विभक्तियाँ लगती हैं।**

बीच में--**अन्तरा।**

हिमालय और विंध्याचल के बीच में आर्यावर्त्त है=**अन्तरा हिमालयं विन्ध्याचलञ्च आर्यावर्त्तः वर्त्तते।**

**टिप्पणी--अन्तरा के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।**

बहुत--**नितान्तम्। नितराम्। अतीव।**

मैं बहुत थक गया हूँ=**अहं नितान्तं श्रान्तः अस्मि।**

वह बहुत गरीब है=**स नितरां दरिद्रः अस्ति।**

थोड़ा--**ईषत्। मनाक्।**



वह कम बोलती है=**सा ईषत् वदति।**

थोड़ा पानी दो=**मनाक् पानीयं देहि।**

जरूर—**अवश्यम्। नूनम्।**

कर्म का फल अवश्य मिलता है=**कर्मणः फलम् अवश्यं लभ्यते।**

मैं जरूर जाऊँगा=**अहं नूनं गमिष्यामि (यास्यामि)।**

शायद—**कदाचित्, सम्भवतः।**

शायद वह स्त्री बाँझ है=**सम्भवतः सा स्त्री वन्ध्या वर्त्तते।**

शायद मुजरिम गिरफ्तार हो गए=**कदाचित् अपराधिनः धृताः।**

दरअसल, असल में—**वस्तुतः।**

असल में उसका यह मतलब नहीं है=**वस्तुतः तस्य अयम् अभिप्रायः नास्ति।**

***

# द्वितीयः पाठः

## निमित्तवाचक क्रिया

मैं देखने को आता हूँ।
वह पढ़ने के लिए जाता है।

देखने, देखने को, पढ़ने, पढ़ने को, पढ़ने के लिए इत्यादि पदों का अनुवाद करने के लिए 'तुमुन्' प्रत्यय का व्यवहार किया जाता है। जैसे—

अहं **द्रष्टुमागच्छामि।** स **पठितुं गच्छति।**

### अनुवाद

वह खाने को आया है=**स भोक्तुमागतः।**

ग्वाला गौ दूहने के लिए जाता है=**गोपो गां दोग्धुं गच्छति।**

नाई हजामत बनाने को बैठा=**नापितः क्षौरं कर्त्तुमुपविष्टः।**

पंडित पढ़ाने को बैठे=**पण्डितोऽध्यापयितुमुपविष्टः।**

लड़की फूल चुनने आई=**बालिका पुष्पं चेतुमागता।**

सिपाही लड़ने को तैयार हो गए=**सैनिकाः योद्धुं प्रस्तुताः।**

वह घर जाने को तैयार है=**स गृहं गन्तुमुद्यतः।**

वह चिट्ठी पाने के लिए उत्सुक है=**स पत्रं प्राप्तुमुत्सुकः।**

माली पेड़ों को सींचने जाता है=**माली तरून् सेक्तुं गच्छति।**

रामचंद्र धनुष तोड़ने को उठे=**रामचन्द्रो धनुर्भङ्क्तुमुत्थितः।**

वह घी लाने बाजार गया=**स घृतमानेतुमापणं गतवान्।**

लड़के लड्डू लेने को दौड़े=**बालाः लड्डूकं ग्रहीतुं धाविताः।**

वह मारने के लिए मुट्ठी बाँधता है=**स ताडयितुं मुष्टिं बध्नाति।**

कृष्ण गायों को चराने के लिए वन में ले जाते थे=**कृष्णो गाश्चारयितुं (ताः) वनं नयति स्म।**

जाकर——गत्वा।

राम ने वन में जाकर दैत्यों को मारा=रामो वनं गत्वा दैत्यान् जघान।

आकर——आगत्य, आगम्य।

यहाँ आकर बैठा जाय=अत्रागत्य उपविश्यताम्।

गुरुजी आकर डाँटने लगे=गुरुरागम्य तर्जितुमारभत।

देखकर——दृष्ट्वा, अवलोक्य।

वह साँप को देखकर भागा=स सर्पं दृष्ट्वा पलायितः।

सोना देखकर किसको नहीं लालच होता=काञ्चनमवलोक्य कस्य लोभो न जायते।

सुनकर——श्रुत्वा, आकर्ण्य निशम्य।

हल्ला सुनकर लोग दौड़ पड़े=कोलाहलं श्रुत्वा जनाः अधावन्।

गान सुनकर पशु-पक्षी भी मोहित हो उठे=सङ्गीतमाकर्ण्य पशुपक्षिणोऽपि सम्मुग्धाः।

खाकर——भुक्त्वा, भक्षयित्वा, जग्ध्वा, खादित्वा।

खाकर सौ डेग चलना चाहिए=भुक्त्वा शतपदं व्रजेत्।

प्रसाद खाकर घर जाओ=प्रसादं भक्षयित्वा गृहं गच्छ।

वे मछली खाकर जीते हैं=ते मत्स्यं जग्ध्वा जीवन्ति।

अदरख खाकर पानी पिओ=आर्द्रकं खादयित्वा पानीयं पिब।

पीकर——पीत्वा।

वह शराब पीकर मतवाला हो गया=स मदिरां पीत्वा मत्तो जातः।

हँसकर——हसित्वा, विहस्य।

वह हँसकर कहने लगा=स हसित्वा कथयितुमारभत।

ठग हँसकर बोला=धूर्त्तो विहस्य अवदत्।

मुस्कुराकर——स्मित्वा।

युवती ने मुसकुराकर पूछा=युवती स्मित्वा पृष्टवती, अपृच्छत्।

रोकर——रुदित्वा, क्रन्दित्वा।

वह रोकर बोली=सा रुदित्वाऽब्रवीत्।

कहकर——उक्त्वा, कथयित्वा।

यह कहकर वह चुप हो गया=इत्युक्त्वा स तूष्णीं स्थितः।

तुमने क्या कहकर उसे फुसला दिया?=त्वं किं कथयित्वा तं प्रतारितवान्?

पूछकर——पृष्ट्वा, जिज्ञासित्वा।

यह पूछकर क्या करोगे?=इदं पष्टवा किं करिष्यसि?



जानकर——ज्ञात्वा, बुद्ध्वा, अवगम्य।

यह जानकर मुझे बड़ा दुःख हुआ=इदं ज्ञात्वा मेऽतिशयं दुःखं सञ्जातम्।

जानकर भी अनजान के ऐसा करते हो=**बुद्ध्वापि अबोध इवाचरसि।**

मानकर--**मत्वा, विचार्य।**

तुमने क्या जानकर गाली दी ?=**त्वं किं मत्वा गालिं दत्तवान् ?**

खूब विचारकर बात बोलो=**सम्यग् विचार्य वचनं ब्रूहि।**

सोचकर--**चिन्तयित्वा, विचिन्त्य, वितर्क्य।**

यह सोचकर वह घबरा उठा=**इदं चिन्तयित्वा स व्याकुलो जातः।**

दार्शनिक सोचकर जवाब देगा=**दार्शनिको विचिन्त्य उत्तरं दास्यति।**

समझाकर--**बोधयित्वा, प्रबोध्य।**

अच्छी तरह समझाकर कहो=**सम्यक् प्रबोध्य कथय।**

मैं समझाकर हार गया=**अहं प्रबोध्य पराजितः।**

रहकर--**उषित्वा, स्थित्वा।**

वह काशी में रहकर संस्कृत पढ़ता है=**सः काश्यामुषित्वा संस्कृतमधीते।**

यहाँ रहकर लड़कों को पढ़ाओ=**अत्र स्थित्वा बालकान् अध्यापय।**

होकर--**भूत्वा।**

वह उदास होकर चला गया=**स विषण्णो भूत्वा गतवान्।**

करके--**कृत्वा।**

यह कार्य करके ही कहीं जाना=**इदं कार्यं कृत्वैव क्वापि गन्तव्यम्।**

लेकर--**गृहीत्वा, आदाय।**

चोर गहने की पेटी लेकर छिप रहा=**चौरो भूषणपेटीं गृहीत्वा लुक्कायितः।**

पानी लेकर सिर पर छिड़को=**जलमादाय शिरसि सिञ्च।**

देकर--**दत्त्वा।**

ग्वाला दूध देकर चला गया=**गोपो दुग्धं दत्त्वा गतवान्।**

पाकर--**लब्ध्वा, प्राप्य।**

वह रुपया पाकर खुश हुआ=**स धनं लब्ध्वा हर्षितोऽभूत्।**

आपका आशीर्वाद पाकर हमलोग कृतार्थ हुए=**भवतः आशीर्वादं प्राप्य वयं कृतार्था अभवाम।**

सोकर--**सुप्त्वा, शयित्वा।**

वह सोकर खर्राटे मार रहा है=**स सुप्त्वा नासिकारवं करोति।**

दिन में सोकर वक्त मत खराब करो=**दिने शयित्वा कालं न नाशय।**

उठकर--**उत्थाय।**

वह खूब तड़के उठकर टहलने जाता है=**स महति प्रत्यूषे उत्थाय भ्रमणाय याति।**

बैठकर--**उपविश्य।**



तबतक यहीं बैठकर पढ़ो=**तावदत्रैवोपविश्य पठ।**

खरीदकर--**क्रीत्वा।**

चावल खरीदकर लाओ=**तण्डुलं क्रीत्वा आनय।**

बेचकर--**विक्रीय।**

लकड़हारा लकड़ी बेचकर अपने गाँव गया=**काष्ठविक्रेता काष्ठं विक्रीय स्वग्रामं गतः।**

पुकारकर--**आहूय। आकार्य।**

उसने नौकर को पुकारकर हुक्म दिया=**स भृत्यमाहूय आदिष्टवान्।**

चढ़कर--**आरुह्य।**

हमलोग नाव पर चढ़कर उस पार गए=**वयं नावमारुह्य परंपारमगच्छाम।**

भेजकर--**प्रेष्य।**

राजा ने दूत भेजकर संधि कर ली=**राजा दूतं प्रेष्य सन्धिं कृतवान्।**

घुसकर--**प्रविश्य।**

चूहा बिल में घुसकर छिप गया=**मूषकः बिलं प्रविश्य तिरोहितः।**

जीतकर=**जित्वा।**

वह शत्रुओं को जीतकर अपने देश को लौटा=**स रिपून् जित्वा स्वदेशं प्रत्यागतः।**

छीनकर--**अपहृत्य।**

डाकू सब धन छीनकर चंपत हो गया=**दस्युः सर्वस्वमपहृत्य तिरोहितः।**

ले जाकर--**नीत्वा।**

इस कन्या को ले जाकर पालो=**इमां कन्यां नीत्वा परिपालय।**

लाकर--**आनीय।**

किताब लाकर दिखलाओ=**पुस्तकमानीय दर्शय।**

मरकर--**मृत्वा।**

लोग मरकर कहाँ जाते हैं? =**जनाः मृत्वा कुत्र यान्ति?**

मारकर--**मारयित्वा। व्यापाद्य।**

मुझे मारकर क्या करोगे? =**मां हत्वा किं करिष्यसि।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

तुम घर जाकर क्या करोगे? यहाँ आकर बैठो। मैं बाघ को देखकर भी नहीं डरता। यह बात सुनकर वह बोला। वह सत्तू खाकर भी मोटा-ताजा रहता है। क्या तुम भाँग (विजया) पीकर आए हो? दासी ने हँसकर



कहा। आप यहाँ रहकर क्या करते हैं? झूठ कहकर किसीको धोखा नहीं देना चाहिए। सवार घोड़े पर चढ़कर जंगल में गया। उसने पेड़ पर

चढ़कर देखा। मैं परीक्षा देकर घर गया। उसने उत्तीर्ण होकर मिठाई बाँटी (व्यतरत्)। वह मेरा हाथ पकड़कर (धृत्वा) बोला। रुपए गिनकर (गणयित्वा) संदूक में रख दो। रानी ने मंदिर में प्रवेशकर देवी को प्रणाम किया (प्राणमत)। उसने झुककर (अवनम्य) देखा। चूहे ने बन्धन को दाँत से काटकर (छित्वा) चिड़ियों को जाल से छुड़ा दिया। बहेलिया जाल में पक्षी को न पाकर दुःखी हुआ। आपका समाचार जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। उसने मिट्टी खोदकर (खनित्वा) धन गाड़ दिया। वह गाकर (गायिका) लोगों को रिझाता है। मैं देह में तेल लगाकर (मर्दयित्वा) स्नान करूँगा। नहाकर फूल नहीं तोड़ना चाहिए। चंदन लगाकर (अनुलेप्य) पूजा करो। ईश्वरचंद्र विद्यासागर अपने हाथ से लकड़ी चीरकर (काष्ठं छित्वा) रसोई बनाते थे। हाथ धोकर (प्रक्षाल्य) भोजन करो।

***

# तृतीयः पाठः

## पूर्वकालिक क्रिया

वह खाकर स्कूल जाता है।

मैं नहाकर खाऊँगा।

चिह्नांकित पदों का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में क्त्वा (त्वा) प्रत्यय से काम लिया जाता है। जैसे--

स भुक्त्वा (भुज्+त्वा) पाठशालां गच्छति।
अहं स्नात्वा (स्ना+त्वा) भोक्ष्ये।

टिप्पणी--(१) यदि धातु के पहले उपसर्ग लगा हो, तो 'त्वा' के स्थान में ल्यप् (य) प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे--

खूब सोचकर काम करना चाहिए--सुविचार्य ( सु+वि+चर्+णिच्+य ) कार्यं करणीयम्।

(२) वह हँस-हँसकर बोलती है।

वह देख-देखकर प्रसन्न होता है।

चिह्नांकित पदों का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में णमुल् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे--



सा हासं-हासं गदति। स दर्शं-दर्शं परितुष्यति।

पूर्वकालिक क्रिया का अनुवाद सिखलाने के लिए यहाँ कुछ मुख्य धातुओं के साथ 'क्त्वा,' 'ल्यप्' और 'णमुल्' प्रत्ययों का व्यवहार दिखलाया जाता है।

क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाकर भी निमित्तवाचक क्रिया का अनुवाद किया जाता है। जैसे--

वह नहाने के लिए तालाब जाती है=**सा स्नानाय तडागं गच्छति।**
वह घूमने के लिए गया है=**स भ्रमणाय गतोऽस्ति।**
वे लोग रुपया कमाने परदेश गए=**ते द्रव्योपार्जनाय परदेशं गताः।**
मैं आपको देखने के लिए आया हूँ=**अहं भवतो दर्शनाय आगतोऽस्मि।**
वह जाने के लिए व्याकुल है=**स गमनाय व्याकुलः।**
पाँव धोने के लिए पानी दो=**पादप्रक्षालाय जलं देहि।**

संज्ञा में चतुर्थी विभक्ति के बदले 'अर्थम्' जोड़कर भी काम चलाते हैं। जैसे--

वह भीख माँगने के लिए घूमता है=**स भिक्षार्थं भ्राम्यति।**
वह शादी करने के लिए उतावला है=**स विवाहार्थमुत्कण्ठितः।**
वह नौकरी करने के लिए विदेश गया=**स जीविकार्थं विदेशं गतः।**
वह बहस करने के लिए आता है=**स विवादार्थमागच्छति।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

मैं पानी पीने जाता हूँ। वह खेलने के लिए जाती है। खरगोश कछुए को पकड़ने के लिए दौड़ा। वह चीजें चुराने के लिए (चोरयितुम्) आया था। उसने मुझे आम खाने के लिए (आम्रभक्षणाय) न्योता दिया है (निमन्त्रितवान्)। वह तुमको गीत गाने के लिए (गानार्थं) बुलाता है। वह घर जाने के लिए विदा हो गया (प्रस्थितः)। वह अखबार (समाचारपत्र) बेचने आता है। कुत्ता रोटी लेने के लिए दौड़ा। हमलोग तमाशा देखने के लिए जाते हैं। वह कुएँ पर पानी भरने के लिए आई। राजा देशों को जीतने के लिए (जेतुम्) चल पड़ा। वीरगण मरने के लिए तैयार हो गए।

***

# चतुर्थः पाठः

## विविध क्रियाविशेषण

बात ही बात में झगड़ा हो गया=**कथाप्रसंगेन कलहः सञ्जातः।**

बात ही बात में रथ राजधानी में पहुँच गया=**अचिरेणैव रथो राजधानीं प्राप्तः।**

कुछ दिन बीतने पर वह स्वदेश लौटा=**अथ दिनेषु गच्छत्सु स स्वदेशं प्रत्यावृत्तः।**

मैं जान देकर तुम्हारी रक्षा करूँगा=**अहं प्राणव्ययेनापि त्वां रक्षिष्यामि।**

उसने भरपेट खाया=**स उदरपूरं भुक्तवान्।**

आँधी पेड़ को जड़-मूल से नष्ट कर देती है=**वात्या वृक्षं समूलमुन्मूलयति।**

वह घुटनों के बल पर गिर पड़ा=**स जानुभ्यामवनौ पतितः।**

वह चित होकर सोता है=**स उत्तानं शेते।**

यहाँ घुटना भर पानी है=**अत्र जानुदध्नं जलं वर्त्तते।**

वह हाथ जोड़कर बोली=**सा प्राञ्जलिर्भूत्वा अवदत्।**

वह गहरी साँस लेकर बोली=**सा दीर्घं निःश्वस्य अवदत्।**

सब घोड़े रास्ते की थकावट से पसीने-पसीने हो गए हैं=**जातस्वेदाः सकलतुरगा अध्वसञ्जातखेदात्।**

समय के अनुसार कार्य करना चाहिए=**समयानुरूपमाचरितव्यम्।**

रानी दुःख का आवेग रोककर लड़ाई के मैदान में आई=**राज्ञी शोकवेगं नियम्य युद्धक्षेत्रमागता।**

वह रुँधे हुए कंठ से बोली=**सा गद्गदस्वरेण अवदत्।**

वह रोते-रोते कहने लगा=**स रुदन् कथयितुमारभत।**

वह डबडबाई हुई आँख से मेरी ओर ताकने लगी=**सा साश्रुनेत्रा भूत्वा मां द्रष्टुं प्रवृत्ता।**

मैं उसकी बात का विश्वास कर यहाँ आया=**अहं तद्वचनप्रत्ययात् अत्रागतः।**

वह बीमारी का बहाना कर चला गया=**स रोगापदेशेन गतवान्।**

खूब तड़के उठो=**महति प्रत्यूषे उत्तिष्ठ।**

जरा भी नहीं डरना चाहिए=**न मनागपि भेतव्यम्।**

मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूँगा=**नाहं ते स्तोकमपि दास्यामि।**

वह आमने-सामने खड़ा हो गया=**स समक्षमेव दण्डायमानो जातः।**

राक्षस दाँत पीसकर दौड़ा=**दैत्यो दन्तैर्दन्तान्निष्पिष्य अधावत्। दैत्यो दन्तान् घर्षयन् अधावत्।**

इन लोगों ने लाचार होकर आत्मसमर्पण कर दिया=**तेऽनन्यगतिकत्वात् आत्मसमर्पणं कृतवन्तः।**



तुम खुशी के साथ बगीचे में टहलो=**त्वं सानन्दं वाटिकायां विचर (विहर)।**

मैं उसे अकेले में खूब समझा दूंगा=अहं तं रहसि सम्यग् बोधयिष्यामि।
मैं पलभर भी तुम्हें आँख की ओट नहीं करूँगा=अहं क्षणमपि त्वां दृष्टेरगोचरं न करिष्यामि।
ऐसी हालत में क्या करना चाहिए?=ईदृश्यां दशायां किं कर्त्तव्यम्?
कभी-कभी उत्सव होता है=काले काले उत्सवो भवति।
पिछले महीने में मैं बुखार में पड़ा था=विगते मासि अहं ज्वरग्रस्तः आसम्।
अगले हफ्ते में घर जाऊँगा=आगामिनि सप्ताहेऽहं गृहं गमिष्यामि।
पुस्तकों को एक ओर से देख जाओ=पुस्तकानि अनुपूर्वशः समीक्षस्व।
मैंने शुरू से आखिर तक किताब पढ़ डाली=अहमाद्युपान्तं पुस्तकं पठितवान्।
सबने एक मत होकर राय की=सर्वैः एकचित्तीभूय परामृष्टम्।
संयोगवश एक बार सचमुच ही भेड़िया आ गया=संयोगवशादेकदा वस्तुतः एव वृकः समायातः।
वह मरते-मरते बच गया=स मृत्युमुखादागतः।
वर्षा बन्द हो जाने पर मैं बाजार जाऊँगा=विगतासु वर्षासु अहं पण्यवीथिकां गमिष्यामि।
सूर्य के अस्त हो जाने पर उल्लू घोंसले से बाहर निकलता है=अस्तंगते भानौ उलूकः नीडाद्बहिः निःसरति।
चंद्रमा के उदय होने पर अंधकार फट गया=उदिते चन्द्रमसि तमश्छिन्नम्।
कुहासा छा जाने पर सबकुछ धुएँ के समान मालूम पड़ता है=व्याप्ते नीहारे सर्वं धूमवत् प्रतिभाति।
आग लगते ही समूचे गाँव में खलबली मच गई=प्रादुर्भूते एव वह्नौ सकलो ग्राम आन्दोलितः।

**अभ्यास**

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

वह हँसते-हँसते बोला। यहाँ छाती भर पानी है। उसे चुल्लूभर (चुलूकमात्रे) पानी में डूब मरना चाहिए। अपना बोरिया-बधना (दण्ड-कमण्डलु) लेकर यहाँ से डेरा-डंडा कूच करो। बारी-बारी से सब लड़के उस गट्ठर को तोड़ने लगे। अब एक-एक करके लकड़ियों को तोड़ो। वह मुंह के बल गिर पड़ा। सब मिलकर (पिण्डीकृत्य) सौ रुपए हुए। अंधाधुंधी (अन्धपरम्परया) कोई कार्य मत कर बैठो। आगे-पीछे सोचकर कोई काम करना चाहिए। गला फाड़कर क्यों चिल्लाते हो? वह फूट-फूटकर रोने लगी। बैठे-बैठे मक्खी मारते हो क्या? घोड़ा सरपट कदम चलने लगा। बागडोर ढीली करते ही घोड़ा हवा हो गया। युद्ध का नगाड़ा बजते ही राजपूतगण जूझ पड़े। स्कूल से छुट्टी होने पर मैं घर जाऊँगा। परीक्षा खतम हो जाने पर मैं वैद्यनाथधाम जाऊँगा।



***

# पञ्चम भाग | वाक्यों के भिन्न-भिन्न रूप

## प्रथमः पाठः

## आदेशार्थक वाक्यानि

### (लोट् लकार)

तुम जाओ। वह जावे।

ऊपर के वाक्यों में जैसी क्रियाएँ आई हैं, वैसी क्रिया का अनुवाद संस्कृत में लोट् लकार के द्वारा किया जाता है। लोट् लकार बनाने की विधि यों है—

(१) पहले धातु का वह रूप बना लना चाहिए जो 'ति' (वर्त्तमानकालिक) जोड़ने के पहले हो जाता है।

(२) उसके बाद धातु में निम्नलिखित विभक्तियाँ जोड़ देनी चाहिए—

| | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| प्र० पु०— | तु | ताम् | अन्तु |
| म० पु०— | अ | तम् | त |
| उ० पु०— | आनि | आव | आम |

### उदाहरण (गम्)

| | ए० व० | द्वि० व० | ब० व० |
|---|---|---|---|
| प्र० पु०— | वह जाय<br>**स गच्छतु** | वे दोनों जायँ<br>**तौ गच्छताम्** | वे लोग जायँ<br>**ते गच्छन्तु** |
| म० पु०— | तुम जाओ<br>**त्वं गच्छ** | तुम दोनों जाओ<br>**युवां गच्छतम्** | तुमलोग, जाओ<br>**यूयं गच्छत** |
| उ० पु०— | मैं जाऊँ<br>**अहं गच्छानि** | हम दोनों जायँ<br>**आवां गच्छाव** | हमलोग जायँ<br>**वयं गच्छाम** |

### अनुवाद

**सत्यं वद**=सच बोलो।
**धर्मम् आचर**=धर्म करो।
**ईश्वरं भज**=ईश्वर को भजो।
**गुरून् प्रणम**=गुरुओं को प्रणाम करो।
**विद्यां पठ**=विद्या पढ़ो।

**पितुः आज्ञां पालय**=पिता की आज्ञा मानो।
**मातरं स्मर** माँ को याद करो।
**क्रोधं जय**=क्रोध को जीतो।
**लोभं त्यज**=लालच छोडो।
**शान्तो भव**=शान्त होओ।

दूध पियो=दुग्ध पिब।
पहलवान होओ=बलवान् भव।
तुमलोग लेख लिखो=यूयं निबन्धं लिखत।
आप बैठ जायँ=भवान् उपविशतु।
वह जुर्माना दे=स दण्डं प्रयच्छतु।
वे लोग आवें=ते आगच्छन्तु।
तुम दोनों गाओ=युवां गायतम्।
वे दोनों पढ़ें=तौ पठताम्।
हम दोनों खेलें=आवां क्रीडाव।
हमलोग चलें=वयं चलाम।

### अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

तुम घर जाओ। एक चिट्ठी लिखो। तुम उठो। आलस (आलस्यम्) छोड़ो। दवा पिओ। ईश्वर को याद करो। मोह को जीतो। कर्त्तव्य सोचो। शंकर को पूजो। आप आवें। आपलोग पाँव धोयें। आप दोनों जल पियें। तुम दोनों नाम बताओ। तुमलोग दौड़ो। तुमलोग साधु को पुकारो। दुष्टों को पीटो। गरीबों को बचाओ। मैं कलम (लेखनी) लाऊँ। हम दोनों गवाह होवें। हमलोग टहलें। तमाशा देखो।

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

निद्रां त्यज। प्रातः (सवेरे) उत्तिष्ठ। हरिं स्मर। मुखं प्रक्षालय। स भक्तं पचतु। भवान् दक्षिणां प्रयच्छतु। ते कृशरान्नं (खिचड़ी) खादन्तु। तौ गीतं गायताम्। असौ भण्डः (भाँड़) नृत्यतु। ते गृहं गच्छन्तु। स्तोत्रं पठ।

***

## द्वितीयः पाठः

### प्रश्नवाचक शब्द

कौन, क्या--**किम्***
(पुँ०)--**कः**
(स्त्री०)--**का**
कितना--**कियत्**
(पुँ०)--**कियान्**
(स्त्री०)--**कियती**
कैसा--**कीदृशः***
(स्त्री०)--**कीदृशी**
(न०)--**कीदृशम्**
कै--**कति***

क्यों--**किम्, कथम्।**
कैसे, किस प्रकार, क्यों--**कथम्।**
कब--**कदा।**
कहाँ--**कुत्र, क्व।**
कहाँ से--**कुतः।**
कबतक--**कियत् कालम्, कदापर्यन्तम्।**
कब से--**कस्मात् कालात्, कदाप्रभृति।**
किसलिए--**किमर्थम्।**
किस कारण से--**कस्मात् कारणात्, कुतः।**
किस तरह--**केन प्रकारेण।**



टिप्पणी--*चिह्नांकित शब्दों की रूपावली व्याकरण में देखें।

## अनुवाद

तुम क्या चाहते हो? =**त्वं किम् इच्छसि?**
आप कौन पुस्तक पढ़ते हैं? =**भवान् किं पुस्तकं पठति?**
कौन आ रहा है? =**कः आगच्छति?**
कौन लड़की हँसती है? =**का बालिका हसति?**
यह किसकी गाय है? =**इयं कस्य गौः अस्ति?**
तुम किस गाँव में रहते हो? =**त्वं कस्मिन् ग्रामे निवससि?**
तुम्हारा क्या नाम है? =**तव किं नाम अस्ति?**
वह किस क्लास में पढ़ता है? =**स कस्यां कक्षायां पठति (अधीते)?**
आप कौन प्रश्न पूछते हैं? =**भवान् कम् प्रश्नं पृच्छति (जिज्ञासते)?**
कैसा हाल है? =**कीदृशः समाचारः अस्ति?**
रोगी की कैसी हालत है? =**रोगिणः कीदृशी अवस्था अस्ति?**
कैसा रहस्य है? =**कीदृशं रहस्यम्?**
वह कितना दूध पिएगा? =**स कियत् दुग्धं पास्यति?**
कितने मेहमान आते हैं? =**कियन्तः अतिथयः आगच्छन्ति?**
तुम कितने रुपए चाहते हो? =**त्वं कियन्ति रौप्यकाणि इच्छसि?**
वह क्या बोलता है? =**स किं वदति?**
आपलोग क्यों हँसते हैं? =**भवन्तः कथं हसन्ति?**
कहाँ जाते हो? =**कुत्र गच्छसि?**
तुम घर से कब आए? =**त्वं गृहात् कदा आगच्छः (आगतः)?**
वह कब से बीमार है? =**स कदाप्रभृति रुग्णः अस्ति?**
तुम कब तक ठहरोगे? =**त्वं कियत्कालं स्थास्यसि?**
मैं नदी को कैसे पार करूँगा? =**अहं नदीं कथं तरिष्यामि?**
वह किस तरह गुजर करती है? =**सा केन प्रकारेण निर्वाहं करोति?**
आप किस कारण मुझे डाँटते हैं? =**भवान् कस्मात् कारणात् मां तर्जति?**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु—**

क्या हाल है? तुम कौन चीज चाहते हो? वह किसका लड़का है? इस घोड़ी (वडवा) का कितना दाम है? तुम कहाँ से आते हो? आप क्यों मुझे पुकारते हैं (आह्वयति)? कैदी (कारावासी) दीवाल तोड़कर कैसे निकला (निरगच्छत्)? तुम मुझे क्यों तंग करते हो (पीडयसि)? आप मुझपर (मयि) क्यों नाराज (रुष्ट) होते हैं? यह कैसी बात है?

इसका कैसा चाल-चलन (चरित्रम्) है? यह पालकी (दोला) कहाँ से आ रही है? वे लोग किस देश में रहते हैं? यह पौधा किस मौसिम में (ऋतौ) उपजता है? वह कब लौटेगा (पुनरागमिष्यति)? उस तालाब में कितना पानी है? संसार में कितने लोग रहते हैं? दुनिया में कितनी तरह के जीव हैं? इस क्लास में कितने लड़के हैं?

**हिन्दीभाषायाम् अनुवादं कुरु--**

किं कर्त्तव्यम् (कर्त्तव्य क्या है अथवा क्या करना चाहिए) ? कः पन्थाः? संसारे सुखी कः अस्ति? ईश्वरः कुत्र वर्त्तते? कः संसारं रचयति? कुतः जीवाः आगच्छन्ति? कियत्कालं जगत् स्थास्यति? सृष्टौ कीदृशः चमत्कारः अस्ति? भो विप्र! (हे ब्राह्मण) किमर्थं भ्राम्यसि? मनुष्याः किम् इच्छन्ति? त्वं कं देवं पूजयसि? भवतां कानि नामानि? तव गृहं क्व वर्त्तते? तस्याः किं वयः विद्यते?

***

# तृतीयः पाठः

## संयुक्त वाक्य

**वह काम करता है और तुम बेकार बैठे हो।**

**मैं जानता हूँ लेकिन कहूँगा नहीं।**

**रेखांकित शब्दों को संयोजक अव्यय (Conjunction) कहते हैं। संस्कृत में इसका अनुवाद करने के लिए 'च', 'तु' आदि शब्दों का व्यवहार किया जाता है। जैसे--**

**स कार्यं करोति त्वं च निष्क्रियस्तिष्ठसि।**

**अहं जानामि किन्तु न कथयिष्यामि।**

**इस पाठ में इसी तरह के वाक्य दिए जाते हैं।**

**और--च--**

मैं पढ़ूँगा और पास करूँगा=अहं पठिष्यामि उत्तरिष्यामि च।
वह रोता है और पछताता है=स रोदिति पश्चात्तपति च।
राम और श्याम आते हैं=रामः श्यामश्च आगच्छतः।
हमलोग रोटी और शक्कर खाएँगे वयं रोटिकां शर्कराश्च भोक्ष्यामहे।
वे लोग आएँगे और रहेंगे=ते आगमिष्यन्ति स्थास्यन्ति च।

पहाड़ पर और जंगल में वर्षा हुई=पर्वते जङ्गले च वृष्टिः अभवत्।

सूर्यास्त हुआ **और** क्रमशः अँधेरा छाने लगा=सूर्योऽस्तङ्गतः क्रमेण तमश्च व्याप्तम्।

**लेकिन--किन्तु--**

तुम यहाँ पर रहो **लेकिन** कुछ बोलो मत=त्वमत्र तिष्ठ किन्तु न किञ्चिद् भाषस्व।

वह गरीब है **लेकिन** ईमानदार है=स दरिद्रोऽस्ति किन्तु न्यायशीलः।

मैं धनी नहीं हूँ **लेकिन** किसीका ताव नहीं सह सकता=नास्मि धनिकः किन्तु कस्यापि भ्रूभङ्गं सोढुं न शक्नोमि।

जानना सहज है **किंतु** करना कठिन है=ज्ञानं सरलं किन्तु करणं कठिनम्।

**कि--इति--**

वह कहता है **कि** उस देश में भारी अकाल पड़ा है=तस्मिन् देशे महद् दुर्भिक्षं जातमिति सः कथयति।

राजा ने आज्ञा दी **कि** उसकी हथकड़ी खोल दो=तं निगडबन्धनात् मुञ्च इति राजाज्ञापयत्।

जासूस ने खबर दी **कि** शत्रुओं के खीमे में भारी हलचल मची हुई है= शत्रूणां शिविरे महदान्दोलनं वर्त्तते इति चरेण निवेदितम्।

मैं प्रार्थना करता हूँ **कि** आप दो रोज ठहर जाएँ=भवान् दिनद्वयं तिष्ठतु इत्यहं प्रार्थये।

हमलोग समझते हैं **कि** पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है=पृथ्वी सूर्यं परितः भ्रमति इति मन्यामहे वयम्।

क्या तुम जानते हो **कि** दुनिया में क्या-क्या हो रहा है?=अपि जानासि किं किं भवति जगतीति?

मैं चाहता हूँ **कि** सभी लोग सुखी रहें=सर्वे सुखिनस्तिष्ठन्तु इति वाञ्छितं मे।

कुएँ का मेढ़क समझता है **कि** उतनी ही बड़ी दुनिया है=कूपावधिरेव संसार इति मन्यते कूपमण्डूकः।

**क्योंकि--यतः--**

मैं अमीरों के पास नहीं जाता **क्योंकि** वे लोग खुशामदपसंद होते हैं=नाहं धनिकानुपसर्पामि यतस्ते चाटुप्रियाः भवन्ति।

तुम आज उपवास करो **क्योंकि** अनपच में खाना विष है=त्वमद्य लङ्घनं कुरु यतः अजीर्णे भोजनं विषम्।

मैं केवल फलाहार करूँगी **क्योंकि** आज एकादशी व्रत है=अहं केवलं फलाहारं करिष्यामि यतोऽद्यैकादशीव्रतं वर्त्तते।

**इसलिए--अतः, अतएव, अस्मात् कारणात्--**

तुम तेज हो **इसलिए** तुरत समझ जाते हो=**त्वं तीक्ष्णबुद्धिरसि अतः त्वरितमेव बोधसि।**

वह बहुत मोटा है **इसलिए** तेजी के साथ चल नहीं सकता=**सोऽतिस्थूलः अतः वेगेन चलितुमशक्तः।**

मेरे सिर में दर्द था **इसलिए** स्कूल नहीं आया=**मम शिरसि पीडाऽसीत् अतएव पाठशालां नागतवान्।**

तुम बहुत दिनों तक गैरहाजिर थे **इसलिए** जुर्माना किया जाता है=**त्वं चिरम् अनुपस्थितः आसीः अस्मात् कारणात् अर्थदण्डः क्रियते।**

**वरन्, बल्कि--अपितु, प्रत्युत--**

वह कुंदजहन नहीं है **बल्कि** सबसे ज्यादा होशियार है=**न स मन्दबुद्धिः प्रत्युत सर्वेषां पटिष्ठः।**

मैंने तो कुछ नहीं कहा है **बल्कि** उसीने गालियाँ दी हैं=**अहं तु तं किञ्चिदपि नोक्तवान् प्रत्युत स एवापशब्दान् प्रयुक्तवान्।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

गायें और बकरियाँ चर रही हैं। पान और इलायची लाओ। वह लिखना और पढ़ना जानता है। घर और बाहर दोनों देखना चाहिए। मैं जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो। तुम कमजोर हो इसलिए तुम्हें नित्य कसरत करनी चाहिए। हमलोग नमक नहीं खायँगे क्योंकि आज रविवार है। वह कंजूस नहीं है बल्कि बहुत फिजूलखर्च (अपव्ययी) है। अमीर लोग दुशाला ओढ़ते हैं और गरीब लोग जाड़े से ठिठुरते हैं। तुम उसकी सजा करो लेकिन वह अपनी बान (प्रकृति) नहीं छोड़ेगा। वह पढ़ा-लिखा है लेकिन उसे अक्ल नहीं है। तुम इतने बड़े हो गए, लेकिन अभीतक तमीज (शिष्टाचारः) नहीं आई। आप बूढ़े हैं इसलिए में आपकी खातिर (सम्मान) करता हूँ। तुम्हें कट्वम्ल (खट्टा-कड़वा) भोजन नहीं खाना चाहिए, क्योंकि तुम मेहनती (परिश्रमी) नहीं हो बल्कि सबसे ज्यादा आलसी हो। किसीको सताना (पीड्) नहीं चाहिए, क्योंकि सभी जीव ईश्वर की संतान हैं।

***

# चतुर्थः पाठः

## संयोजक अव्यय

**यदि** वर्षा हो तो धान रोपा जाय।

**जब** छुट्टी हुई तब लड़के शोर मचाने लगे।

चिह्नांकित पदों का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में भी उनके अनुरूप संयोजक अव्यय का व्यवहार किया जाता है। जैसे--

**यदि वृष्टिर्भवेत् तर्हि धान्यं रोप्येत !**
**यदा अवकाशो जातः तदा बालकाः कोलाहलं कर्त्तुमारभन्त।**

यहाँ इसी तरह के वाक्यों का संस्कृत अनुवाद दिखलाया जाता है।

**यदि···तो--यदि···तर्हि चेत्···तर्हि (तदा)--**

**यदि** वह आवेगा **तो** मैं नहीं जाऊँगा=**यदि स आगमिष्यति तर्हि अहं न गमिष्यामि (अथवा स आगमिष्यति चेत् अहं न यास्यामि)।**

**अगर** काम नहीं करोगे **तो** खाओगे क्या ?=**कार्यं न करिष्यसि चेत्तर्हि किं भोक्ष्यसे ?**

**यदि** पानी नहीं बरसा **तो** इस साल किसान चौपट हो जाएँगे=**यदि मेघो न वर्षति तर्हि ऐषमः कृषकाः सर्वनाशं प्राप्स्यन्ति।**

**अगर** मैं पास कर गया **तो** तुमको जरूर मिठाई खिलाऊँगा=**परीक्षायामुत्तीर्णो जाये चेत्त्वां नूनं मिष्टान्नमाशयिष्यामि।**

**यदि** तुम पहले ही चेतते **तो** आज तुम्हारी यह हालत नहीं होती=**यदि त्वं पूर्वमेव सावधानोऽभविष्यस्तर्हि अद्य तवेदृशी दुर्दशा न अभविष्यत्।**

**जब···तब--यदा···तदा--**

**जब** इम्तिहान खतम हो जाएगा **तब** मैं घर जाऊँगा=**यदा परीक्षा समाप्स्यति तदाहं गृहं यास्यामि।**

**जब** मूसलाधार पानी बरसता है **तब** मुझे बड़ा अच्छा लगता है=**यदा धारासम्पातैः वृष्टिर्भवति तदा मह्यमतीव रोचते।**

**जब** वैद्यजी घर आवेंगे **तब** बीमार को पथ्य दिया जाएगा=**यदा वैद्यमहोदयः आगमिष्यति तदा रोगिणे पथ्यं दास्यते।**

**जब** विपत्ति आने की होती है **तब** बुद्धि नष्ट हो जाती है=**यदा विपत्तिरासन्ना वर्त्तते तदा बुद्धिर्भ्रश्यति।**

**जब-जब · · · तब-तब——यदा यदा · · · तदा तदा——**

**जब-जब** धर्म का ह्रास होता है **तब-तब** ईश्वर अवतार लेते हैं=**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति तदा तदा ईश्वरोऽवतरति।**

**जबसे · · · तबसे——यदा (प्रभृति) · · · तदा (प्रभृति)——**

**जबसे** उसका बाप मरा **तबसे** वह टुअर हो गया है=**यदा तस्य पिता मृतः तदा प्रभृति सोऽनाथो जातः।**

**जभी · · · तभी——यदैव · · · तदैव——**

वह **जभी** आता है **तभी** तुम्हारी शिकायत करता है=**स यदैव आगच्छति तदैव त्वां निन्दति।**

**अभी से · · · तभी से——यदा (प्रभृति) · · · तदा प्रभृत्येव——**

वह **जभी से** आया है **तभी से** अपनी शान बघार रहा है=**स यदा प्रभृति आगतस्तदा प्रभृत्येव आत्मानं श्लाघते।**

**जबतक · · · तबतक——यावत् · · · तावत्——**

**जबतक** वर्षा होती है **तबतक** वहीं ठहरो=**यावत् वृष्टिर्भवति तावत् अत्रैव तिष्ठ।**
**जबतक** साँस **तबतक** आस=**यावत् श्वासः तावद् आशा।**

**यद्यपि · · · तथापि——यद्यपि · · · तथापि——**

**यद्यपि** वह बहुत पढ़ा-लिखा नहीं है **तथापि** उसकी बुद्धि बड़ी तेज है=**यद्यपि सोऽल्पशिक्षितस्तथापि तस्य बुद्धिरतीव तीक्ष्णा वर्त्तते।**
**यद्यपि** उसने भारी कसूर किया है **तथापि** मैं उसको माफ करता हूँ=**यद्यपि तेन महापराधः कृतस्तथापि अहं तं क्षमे।**

**जहाँ · · · वहाँ——यतः · · · ततः वा यत्र · · · तत्र——**

**जहाँ** धर्म है, **वहीं** विजय है=**यतो धर्मस्ततो जयः।**
**जहाँ** सुमति तहँ संपति नाना=**यत्र सुमतिः तत्र सम्पत्तयः।**
**जहाँ** तुम रहोगे **वहाँ** मैं भी रहूँगा=**यत्र त्वं स्थास्यसि तत्र अहमपि स्थास्यामि।**
**जहाँ** दुष्ट लोग रहते हैं **वहाँ** नहीं बसना चाहिए=**यत्र दुष्टाः वसन्ति तत्र वासो न कर्त्तव्यः।**

**जहाँ से · · · वहाँ——यतः · · · तत्र (एव)——**

मैं **जहाँ से** आया हूँ **वहीं** चला जाऊँगा=**अहं यतः आगतोऽस्मि तत्रैव पुनर्गमिष्यामि।**

**जहाँ-जहाँ · · · तहाँ-तहाँ——यत्र यत्र · · · तत्र तत्र——**


**जहाँ-जहाँ** धुआँ रहता है **तहाँ-तहाँ** आग रहती है=**यत्र यत्र धूमो वर्तते तत्र तत्र वह्निः वर्त्तते।**

जहाँ· · ·तहाँ—यत्रैव· · ·तत्रैव—

विद्वान जहाँ जाता है वहीं उसका आदर होता है=विद्वान् यत्रैव गच्छति तत्रैवाद्रियते।

जो· · · ·सो (वह)—यः· · · · ·सः, ये· · · · ·ते—

जो कहता सो करता नहीं=यो वदति स न कुरुते।

जो सन्तोषी है वही सुखी है=यः सन्तोषी स एव सुखी।

जो वीर हैं वे लड़ाई में पीठ नहीं दिखाते=ये शूरास्ते समरान्न पलायन्ते।

जो अमीर हैं वे तो कद्रदाँ नहीं और जो कद्रदाँ हैं वे अमीर नहीं=ये धनाढ्यास्ते तु गुणज्ञा न सन्ति, ये च गुणज्ञास्ते धनाढ्या न वर्त्तन्ते।

जो ही कल भीख माँगता था वही आज लखपती हो गया है=य एव ह्यः भिक्षुक आसीत् स एवाद्य लक्षेशो जातः।

जो ही उद्योग करता है, वही फल भी पाता है=य एव उद्योगं कुरुते स एव फलमप्यश्नुते।

जो जानते हो सो मुझे कहो=यत् जानासि तन्मे कथय।

जो हुआ सो हुआ=यद् भूतं तद् भूतम्।

जो होना है सो होगा ही=यद् भावि तद्भविष्यत्येव।

जिसको तुम हानि पहुँचाओगे वह तुम्हें भी हानि पहुँचाएगा ही=यमपकुरुषे स त्वामपि अपकरिष्यत एव।

जो गौ न दूध देती है न गाभिन होती है उसके रखने से फायदा ही क्या=किं तया कुरुते धेन्वा या न दोग्ध्री न गुर्विणी।

जिससे कुछ फल मिले वही करना चाहिए=येन किञ्चित् फलं लभ्यते तदेव (कार्यं) करणीयम्।

जिसके लिए रोते हो उसकी आँख में आँसू नहीं=यस्मै रोदिषि तस्य नेत्रे जलमेव न।

वह जिससे धन पाता है उसीकी खिल्ली उड़ाता है=स यस्माद्धनं प्राप्नोति तस्यैवोपहासं करोति।

जिसका खाओ उसका गाओ=यस्यान्नं खादसि श्लाघ्यं तस्यैव गुणकीर्त्तनम्।

जिस देश में आदर नहीं हो वहाँ एक दिन भी नहीं रहना चाहिए=यस्मिन् देशे न सम्मानो न तत्र दिवसं वसेत्।

जो ही· · ·सो ही—यद् एव· · ·तद् एव—

जो ही तुम्हें पसंद पड़ता है सो ही करो=यदव तुभ्यं रोचते तदेव कुरु।

जिसी वस्तु को चाहो सो ही ले लो=यदेव वस्तु वाञ्छसि तदेव गृहाण।

तुम जिसपर विश्वास रखते हो वही अंत में तुम्हें धोखा देगा=यस्मिन्नेव विश्वासं निदधासि स एव अन्ते त्वां वञ्चयिष्यते।

मैं **जिसको** पुत्र की तरह मानता था **वही** मेरा गला घोंटनेवाला निकला=**यमेव पुत्रवन्मन्ये स्म स एव मम प्राणहर्त्ता सिद्धः।**

**जैसा···वैसा—यादृशः···तादृशः, यथा···तथा—**
वह **जैसा** सुंदर है **वैसा** सुशील भी=**स यादृशः सुन्दरोऽस्ति तादृशः सुशीलोऽपि।**
**जैसी** भावना रहती है **वैसा** ही फल मिलता है=**यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।**

**जैसी** मेहनत करोगे **वैसा** सुख पाओगे=**यादृशं श्रमं करिष्यसि तादृशं सुखं लप्स्यसे।**

**जैसा** काम **वैसा** परिणाम=**यथा कर्म तथा फलम्।**
**जैसे** ऊधो **वैसे** माधो=**यथा हरस्तथा हरिः।**
जो **जैसे** मेरे पास पहुँचते हैं मैं **वैसी** उनकी खातिर करता हूँ=**ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।**

**जैसा ही (ज्यों ही)···कि (त्यों ही)—यावत्···तावत्—**
**जैसे ही** वह चलने लगा **कि** मुझे छींक आ गई=**यावत् स चलितुमुद्यतस्तावन्मे छिक्का सञ्जाता।**

**'यदव यदैव'** का प्रयोग भी हो सकता है।
**जैसे ही** उसका पाँव फिसला **कि** लड़कों ने ताली पीटी=**यदैव तस्य पादस्खलनं जातं तदैव बालकैः करतलध्वनिः कृतः।**

**ज्योंही** बाघ झपटा **त्योंही** वह फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गया=**यावत् व्याघ्रः समुपधावति तावत् स वेगेन तरुमारूढः।**

**या तो···या—वा···वा—**
**या तो** कार्य सिद्ध कर डालूँगा **या** देह छोड़ दूँगा=**कार्यं वा साधयेयं शरीरं वा पातयेयम्।**

**या तो** इज्जत बचाओ **या** चुल्लूभर पानी में डूब मरो=**स्वप्रतिष्ठां वा रक्ष चुल्लूकमात्रे जले वा आत्मानं निमज्जय।**

**क्या···अथवा—किं···वा, अथवा—**
**क्या** यह हरिण जंगली है **अथवा** पालतू=**किमेष मृगः आरण्यको ग्राम्यो वा।**
**क्या** हुजूर पलंग पर सोयेंगे **या** जमीन पर=**किमत्र भवान् पर्यङ्कमधिशयिष्यते भूमिं वा**
**क्या** पाताल से अमृत का रस ले आऊँ **अथवा** चंद्रमा की किरणें निचोड़कर ले आऊँ=**पातालतः किम् सुधारसमानयामि, निष्पीडय चन्द्रकिरणं किम् वाऽहरामि।**



**जब···तो फिर—किमुत, किं पुनः—**
लड़ाई के मैदान में **जब** वीरों के हृदय भी दहल जाते हैं **तो फिर** कायरों

का पूछना ही क्या=**रणक्षत्रे वीराणामपि हृदयानि कम्पन्ते किमुत कातराणाम्।**
**जब** विद्वानों का यह काम **तो फिर** मूर्खों का कहना ही क्या=**विदुषामीदृशमाचरणं किं पुनर्मूर्खाणाम्।**

**न···न--न···नापि नच--**

**न** वह हिन्दू है **न** मुसलमान=**न स आर्यो नापि मोहम्मदीयः।**
**न** मैं अन्न खाऊँगा **न** पानी पिऊँगा=**नाहमन्नं भोक्ष्ये न च जलं पास्यामि।**
**न तो** वह खुद करेगा **न** औरों को करने देगा=**न तु स स्वयं करिष्यति नापि चान्यान् करणाय अनुमंस्यते।**

## अभ्यास

**संस्कृतेऽनुवादं कुरु--**

जो सोता है सो खोता है। जो जागता है सो पाता है। जब विपत्ति पड़ती है तब परमेश्वर सूझते हैं। जब वह आएगा तब मैं जाऊँगा। यदि तुम न आते तो यहाँ गड़बड़ी मच जाती। या तो सत्तू खाओ या भूखों मरो। न यह चलता है न राह छोड़ता है। ज्यों ही चीता (चित्रकः) झाड़ी से निकला कि शिकारी (आखेटकः) उसपर बिजली की तरह टूट पड़ा। जैसे ही वह सीढ़ी से उतरने लगा कि उसका पाँव फिसल गया। यद्यपि वह ऊपर से भोला-भाला है तथापि भीतर से छटा हुआ बदमाश है। जिसके लिए चोरी करो वही कहे चोर। क्या वह तुम्हारा साथी (संगी) है या हमजोली (समवयस्कः)? या तो वह देवता है या पशु। जब दो लड़ते हैं तब एक गिरता ही है। विद्वान् लोग जहाँ जाते हैं वहाँ आदर पाते हैं। जहाँ गुड़ रहता है वहाँ चींटियाँ पहुँच ही जाती हैं। न वह पूजा करता है न ईश्वर का ध्यान करता है।

***

# षष्ठ भाग | मुहावरे और लोकोक्तियाँ

## प्रथमः पाठः

## मुहावरेदार वाक्यांश

इस प्रकरण में कुछ ऐसे वाक्यांश दिए जाते हैं, जो शब्द-विन्यास अथवा अर्थ-वैलक्षण्य के कारण मुहावरेदार कहे जा सकते हैं। वाक्यांश चार प्रकार के होते हैं--

१. **संज्ञात्मक**--जो संज्ञा के समान प्रयुक्त हो।
२. **विशेषणात्मक**--जो विशेषण के समान प्रयुक्त हो।
३. **क्रियात्मक**--जो क्रियावत् प्रयुक्त हो।
४. **क्रियाविशेषणात्मक**--जो क्रियाविशेषण के समान प्रयुक्त हो।

हिन्दी से संस्कृत में अथवा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करते समय इसका बहुत काम पड़ता है।

### संज्ञात्मक वाक्यांश

मूसलाधार पानी=**अविरलवारिधारासम्पातः।**
बिना अवसर का नाच=**अकाण्डताण्डवम्।**
मिथ्या वस्तु की आशा=**वकाण्डप्रत्याशा। शशशृङ्गप्राप्त्याशा।**
मृगतृष्णा, झूठी आशा=**मृगमरीचिका। मरीचिका।**
व्यर्थ का रोना (जिससे कुछ फल नहीं)=**अरण्यरोदनम्।**
असम्भव वस्तु (जिस तरह आकाश में फूल होना)=**आकाशकुसुमम्।**
भेड़ियाधसान=**अन्धपरम्परान्यायः।**
अपने कुल का उजागर=**कुलकमलदिवाकरः।**
अपने कुल का नाश करनेवाला=**वंशकुठारः। कुलाङ्गारः।**
वीरों में प्रधान=**शूरशिरोमणिः।**
जीवन-धन, अत्यंत प्रिय व्यक्ति=**जीवितसर्वस्वः।**
झूठ-मूठ की नींद=**व्याजनिद्रा।**
चारों ओर (देश-देशांतर) की विजय=**दिग्विजयः।**
अभ्यागतों की आव-भगत=**अतिथिसत्कारः, आतिथ्यम्।**
दूसरे का दोष ढूँढ़ना=**परछिद्रान्वेषणम्।**
अङ्ग-रक्षक=**आसन्नपरिचारकः।**

मनगढ़न्त बात=**कपोलकल्पना।**

संकीर्ण बुद्धिवाला (जो कुएँ के मेढ़क की नाईं बाहर की बातों से अनभिज्ञ रहे) = **कूपमण्डूकः।**

सुधार के उपरांत फिर पूर्ववत् हो जाना (जैसे हाथी नहा-धोकर फिर देह में धूल लपेट लेता है) = **हस्तिस्नानम्।**

पीछे की ओर दृष्टिपात करते हुए आगे को बढ़ना (जैसे, सिंह चलता है) = **सिंहावलोकनम्।**

## विशेषणात्मक वाक्यांश

जिस मनुष्य की बुद्धि ठिकाने नहीं है = **किंकर्त्तव्यविमूढो नरः।**
जिस युवक को दाढ़ी-मूँछ नहीं आई = **अजातश्मश्रुः युवा।**
जो विद्यार्थी बहुत ही तेज बुद्धि का हो = **कुशाग्रबुद्धिश्छात्रः।**
जिस राजकुमार की अवस्था प्रौढ़ हो चुकी हो = **परिणतवयस्को राजकुमारः।**
गर्व से चूर राजा = **मदोद्धतो राजा।**
हाजिरजवाब आदमी = **प्रत्युत्पन्नमतिः पुरुषः।**
जो मनुष्य पराया सुख नहीं देख सके = **परसुखासहिष्णुर्जनः।**
जिस युवक की बुद्धि पक्की हो गई हो = **परिपक्वबुद्धिर्युवा।**
जो रोगी मृत्यु के मुख से बच गया है = **मृत्युमुखान्मुक्तो रोगी।**
जो अपने को (व्यर्थ ही) पण्डित समझता है = **पण्डितम्मन्यः।**
नकली वेष धारण किए हुए राजा = **छद्मवेषधारी राजा।**
नितान्त पर्दे के अंदर रहनेवाली राजकुमारी = **असूर्यम्पश्या राजकन्या।**
ऐसी पटरानी जिसका प्रसवकाल समीप आ चुका हो = **आसन्नप्रसवा राजमहिषी।**
घोंघावसन्त आदमी (बेवकूफ) = **मृत्पिण्डबुद्धिर्जनः।**
ऐसा भिक्षुक जिसकी आँत भूख के मारे कुलबुला रही हो = **प्रबलक्षुधावसन्नो भिक्षुकः।**

निःस्वार्थ मित्र = **निष्कारणो बन्धुः।**
ऐसा शत्रु जो आँख का काँटा हो = **अक्षिगतः शत्रुः।**
पुरानी उम्र का मंत्री = **वयोवृद्धोऽमात्यः।**
श्रेष्ठ ज्ञानवाला तपस्वी = **ज्ञानवृद्धस्तपस्वी।**
ऐसा सिपाही जो लड़ाई के लिए कमर कसकर तैयार हो = **बद्धपरिकरः सैनिकः।**
कर्त्तव्य में निरत पुरुष = **कर्त्तव्यपरायणो नरः।**
ऐसा मनुष्य जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे = **दृढप्रतिज्ञो मनुष्यः।**
जिस स्त्री का स्वामी मर गया है = **मृतभर्तृका नारी।**
जिस पुरुष की स्त्री मर गई है = **मृतपत्नीकः पुरुषः।**
कलकल शब्द करती हुई नदी = **कलकल निनादिनी नदी।**

जो महल बहुत ऊँचा हो (आकाश से बातें करता हो)=**गगनचुम्बिनी अट्टालिका।**
जो घटना पूर्व में भी नहीं हुई=**अभूतपूर्वा घटना।**
जो बात पहले कभी न सुनी गई=**अश्रुतपूर्वो वृत्तान्तः।**
जो सुख तत्काल में तो आनन्द दे, पर पीछे दुख का कारण हो जाए=
**आपातरमणीयं परिणामविषं सुखम्।**
जिस घर में आपस की फूट हो=**अन्तर्भेदाकुलं गृहम्।**
जो व्यवहार परम्परा से आया है=**परम्परागतो व्यवहारः।**
जो काम लोकाचार के विरुद्ध है=**लोकाचारविरुद्धं कार्य्यम्।**
हँसी-मजाक में कही गई बात=**नर्मभाषितं वचः, परिहासविजल्पितम्।**
ऐसी दिल्लगी जो रुचिकर हो=**हृदयङ्गमः परिहासः।**
ऐसा गीत जो सुनने में मधुर लगे=**श्रवणसुखदं गीतम्, श्रुतिमधुरं गानम्।**
ऊँची-नीची भूमि=**उत्खातिनी भूमिः।**
घुटनाभर पानी=**जानुदघ्नं जलम्।**
जो लता बड़े यत्न से पाली गई हो=**प्रयत्नसंवर्द्धिता लता।**
ऐसा अंधकार जहाँ हाथ न दिखाई पड़े=**सूचिभेद्यं तमः।**
खराब हालत में पड़ा हुआ घर=**दुर्दशापन्नं गृहम्।**
ऐसा दृश्य जिसे देखने से रोआँ सिहर उठे=**रोमाञ्चकारि दृश्यम्।**
ऐसी बात जो सुनने से रोमांच हो उठे=**लोमहर्षणो वृत्तान्तः।**

## क्रियात्मक वाक्यांश

गोद में लेता है=**क्रोडीकरोति।**
वश में लाता है=**वशीकरोति।**
मिट्टी में मिलाता है=**भूमिसात् करोति।**
पानी में डालता है=**जलसात् करोति।**
सामने लाता है=**प्रत्यक्षीकरोति।**
अपमान करता है=**तिरस्करोति।**
इनाम देता है=**पुरस्करोति।**
ईजाद करता है=**आविष्करोति।**
उत्पन्न होता है=**प्रादुर्भवति। आविर्भवति।**
विलीन होता है=**अन्तर्धत्ते।**
मर जाता है=**पञ्चत्वं प्राप्नोति।**
थप्पड़ मारता है=**चपेटां ददाति।**
समय बिताता है=**कालं यापयति वा [illegible]**

समर्थन करता है=**समर्थयति वा पृष्ठपोषणं करोति।**

एक ही बात को दुहराता है=**पिष्टपेषणं करोति। चर्वितचर्वणं करोति।**
स्वीकार करता है=**स्वीकरोति। अङ्गीकरोति। ऊरीकरोति, उररीकरोति।**
अलङ्कृत करता है=**अलङ्करोति, भूषयति, मण्डयति।**
दृष्टिगोचर होता है=**दर्शनपथमागच्छति। नयनविषयमवतरति। दृग्गोचरी भवति।**

तुलना करता है=**तुलया धरति।**
शोभा बढ़ाता है=**लक्ष्मीं तनोति।**
प्रकट हो जाता है=**वातमासेवते। प्रकाश्यतां गच्छति। प्रकटी भवति।**
आग में डालता है=**अग्निसात् करोति।**
खाक में मिलाता है=**भस्मसात् करोति। भस्मीकरोति।**
स्मरण रखता है=**चित्तेऽवधारयति। मनसि करोति। स्मरति।**
भौंहें तिरछी करता है=**भ्रूभङ्गं करोति।**
हाथ में सौंपता है=**हस्ते निक्षिपति।**
हिम्मत हारता है=**अङ्गानि मुञ्चति। साहसं मुञ्चति वा त्यजति।**
प्राण दे डालता है=**प्राणान् अतिपातयति।**
चंपत हो जाता है=**जङ्घामवलम्बते। पलायन्ते।**
बदनाम होता है=**वाच्यतां याति।**
दुनिया से कूच करता है=**लोकान्तरं गच्छति।**

## क्रियाविशेषणात्मक वाक्यांश

बहुत दिनों से=**अस्मार्त्तकालात्।**
संयोगवश=**घुणाक्षरन्यायेन।**
एक को देखकर शेष के अनुमान से=**स्थालीपुलाकन्यायेन।**
रास्ते की थकावट से=**अध्वसञ्जातखेदात्। अध्वखेदात्।**
हाथ जोड़कर=**प्राञ्जलिर्भूत्वा। प्राञ्जलिः, बद्धाञ्जलिः।**
घुटने टेककर=**जानुभ्यामवनिं गत्वा।**
आमने-सामने=**अभिमुखम्। समक्षम्।**
दाँत पीसकर=**दन्तैर्दन्तान्निष्पिष्य। दन्तान् घर्षयन्।**
एक-एक कर=**अनुपूर्वशः। एकैकशः।**
समय के अनुसार=**समयानुरूपम्। यथासमयम्।**
प्राण देकर भी=**प्राणव्ययेनापि।**
उसकी बात का विश्वास कर=**तद्वचनप्रत्ययात्।**
बात ही बात में=**कथाप्रसङ्गेन।**
कुछ दिन बीतने पर=**कालक्रमेण। दिनेषु गच्छत्सु।**

लाचार होकर=अनन्यगतिकत्वात् ।
बीमारी का बहाना कर=आमयापदेशेन। रोगव्यपदेशेन।
गहरी साँस लेकर=दीर्घं निःश्वस्य।
रुँधे हुए कण्ठ से=गद्गदस्वरेण, संरुद्धकण्ठम्।
दुःख का आवेग रोककर=शोकवेगं नियम्य।
खूब तड़के=महति प्रत्यूषे।
सौभाग्य से=दिष्ट्या।
जरा भी नहीं, कुछ भी नहीं=न मनागपि। न स्तोकमपि।
ऐसी हालत में=एवं गते सति। ईदृश्यां दशायाम्।
कभी-कभी=काले काले, यदा कदा।
खुशी के साथ=सोल्लासम्। सानन्दम्। सहर्षम्।
स्वेच्छापूर्वक यदृच्छया।
एकान्त में=रहसि।
खूब=प्रकामम्।
दूसरे दिन=अपरेद्युः। अन्येद्युः।
पिछले महीने में=विगते मासि। गतमासे।
आगामी सप्ताह में=आगामिनि सप्ताहे।
उत्तर दिशा में=उत्तरस्यां दिशि।
दक्षिण दिशा में=दक्षिणस्यां दिशि।
पूरब दिशा में=पूर्वस्यां दिशि।
पश्चिम दिशा में=पश्चिमायां दिशि।
वर्षा बन्द हो जाने पर=विरतेषु पानीयेषु। विरतासु वर्षासु।
चंद्रोदय हो जाने पर=समुदिते चन्द्रमसि।
सूर्यास्त हो जाने पर=अस्ताचलचूडावलम्बिनि मरीचिमालिनि। सूर्येऽस्तं गते।

## अभ्यास

संस्कृतेऽनुवादं कुरु (मुहावरेदार)—

उस दिन मूसलाधार पानी बरसा। तुम जरा भी हिम्मत मत हारो। वह बदनाम होकर यहाँ से भाग गया। उसने घुटने टेककर हाथ जोड़ा। मैं जान देकर भी तुम्हारी रक्षा करूँगा। चिकनी-चुपड़ी (चाटूक्ति) बातों में मत आओ। एक ही बात को बार-बार क्यों ओटते हो? मैंने तो हँसी में यह बात कही थी। खूब तड़के ही उठकर मेरे पास आना। वह दाँत पीसकर बोला। तुम बिल्कुल घोंघावसंत हो। बड़े भाग्य से इतने दिनों

पर तुमसे भेंट हुई। राजा का महल हवा से बातें करता है। घोड़ा हवा से बात करने लगा (वायुवेगेन धावितः)। वह दुनिया से कूच कर गया।

***

# द्वितीयः पाठः

## विविध प्रसंगों के वाक्य

**१. मनोभावसूचक--**

**अब्रह्मण्यम् अत्याहितम्! शान्तं पापम्!** =अनर्थ हुआ! गजब हुआ! खुदा खैर करे।

**प्रतिहतम् अमङ्गलम्**=ईश्वर क्षमा करें।

**अहो दारुणोदैवदुर्विपाकः**=हाय! काल की गति बड़ी विचित्र है।

**का गतिः**=उपाय क्या है?

**किमन्यच्छरणम्?**=दूसरा कोई उपाय नहीं है?

**यद् भावि तद् भवतु**=जो होना है, सो होवे।

**प्रथमः कल्पः!** =वाह! अच्छी बात है!

**सुश्लिष्टमेतत्!** =बहुत ठीक!

**ततस्ततः?** =हाँ तब उसके बाद?

**हन्त हन्त!** =हाय हाय! अफसोस!

**साधु साधु!** =वाह वाह, शाबाश!

**आस्तां तावत्**=जरा ठहर जाओ। रहे, जाने दो।

**२. साधारण कुशलादिसूचक--**

**अपि कुशली भवान्, अपि कुशलं भवतः**=आप कुशलपूर्वक तो हैं?

**सर्वत्र नो वार्तमवेहि**=हमलोग सब तरह से कुशल हैं।

**तस्य किं वृत्तम्?** =उसका क्या हाल है?

**पूर्ववत् प्रकृतिस्थः सञ्जातः**=पहले-सा नीरोग हो गया।

**स्वास्थ्यं ते भूयात्**=तुम स्वस्थ रहो।

**अनुजानीहि मां गृहाय**=मुझे घर जाने की आज्ञा दीजिए, मुझे घर जाने दें।

**आपृच्छस्व मित्राणि**=मित्रों से विदा माँगो।

**यथाज्ञापयति देवः, देवादेशः प्रमाणम्**=जैसी हुजूर की आज्ञा हो, जो हुक्म जहाँपनाह।

**अनुगृहीतोऽस्मि**=बड़ी कृपा।

**प्रसादोऽत्र भवतः**=कृपा सरकार की, [illegible] हुजूर की।

३. वार्तालापविषयक——

**किमुद्दिश्य भवान् भाषते ?**=आपके कहने का क्या मतलब है ?
**शृणु मे सावशेषं वचः**=जरा मुझे कह लेने दो।
**किं वो विवादवस्तु ?**=तुमलोग किस बात पर बहस करते हो ?
**एष तस्य वचसो निष्कर्षः**=यही उसकी बात का सारांश है।
**न तस्य वचोऽभिनन्दामि**=मुझे उसकी बात पसंद नहीं।
**इयं कथा मामेव लक्ष्यीकरोति**=यह बात मुझे ही संकेत करती है।
**मम वचसि दुराशयं मा कल्पय**=मेरी बात का बुरा अर्थ मत लगाओ।
**नाहं परिहसामि**=मैं हँसी नहीं करता हूँ।
**तव वचः मम हृदयमर्म स्पृशति**=तुम्हारी बात कलेजे को छेदती है।
**अलमन्यथा गृहीत्वा**=बुरा मत मानो।
**बहुलीभूतमेतद्वृत्तम, इयं वार्त्ता प्रसृता**=यह बात फैल गई है।
**इति कर्णपरम्परया श्रुतमस्माभिः** =हमलोगों ने यह बात कानों-कान सुनी।
**इति किंवदन्ती श्रूयते, एष जनप्रवादः**=ऐसी अफवाह सुनी जाती है।
**अलमतिविस्तरेण, किम्बहुना**=अधिक कहने से क्या प्रयोजन यहाँ तक कि।
**अलमप्रासङ्गिकेन**=इधर-उधर की बात से क्या लाभ ?
**प्रकृतमनुसरामः**=हमलोग मुख्य विषय पर आवें।
**अतिमनोहरं कथावस्तु**=कहानी का प्लॉट बड़ा ही मनोहर है।
**ममाशयं सम्यग्गृहीतवानसि**=मेरा असली तात्पर्य तुमने समझ लिया।
**उपपन्नस्ते तर्कः**=तुम्हारा अनुमान ठीक है।
**स नामग्राहं मामाह्वयति**=वह नाम लेकर मुझे पुकारता है।
**अस्य पितरं नामतः पृच्छेयम्** =इसके बाप का नाम पूछूँ ?
**अहं त्वां तृणाय मन्ये**=मैं तुम्हें तिनका (तिनके के समान क्षुद्र ) समझता हूँ।
**स त्वां बहुमन्यते**=वह तुम्हारी बड़ी इज्जत करता है।
**अलं चाटुकारित्वेन माध्यस्थ्यं गृहीत्वा भण**=लल्लो-चप्पो मत करो, निष्पक्ष होकर बोलो।
**निर्बन्धपृष्टः स जगाद सर्वम्** =बार-बार पूछने पर उसने सभी कुछ कह डाला।
**किन्निमित्तं ते सन्तापः ?** =तुम क्यों खेद करते हो ?
**अपि रक्ष्यते त्वया रहस्यनिक्षेपः**=तुमने गुप्त भेद खोला तो नहीं ?
**त्वमेव विस्रम्भभूमिः**=तुम्हीं मेरे विश्वासपात्र हो।
**संह्रियतामियं वार्त्ता**=अब इस बात को जाने दो।

४. शरीरसम्बन्धी——



**स्वास्थ्यमेव सम्पत्** =स्वास्थ्य ही धन है।

अनुदिवसं परिहीयसे अङ्गैः=दिन-दिन दुबलाते जाते हो।
बलवती शिरःपीडा मां बाधते=मेरा सिर बड़ा दुखता है।
मा भवान् अङ्गानि मुञ्चतु, मा भवान् साहसं त्याक्षीत्=आप हिम्मत नहीं हारें।
लब्धं स्वास्थ्यं मयाधुना=अब मैं अच्छा हो गया।
तस्याः श्रीर्वचनानामविषया=उसकी शोभा का वर्णन नहीं हो सकता।
चारुदर्शनेयं बाला=वह लड़की देखने में अच्छी है।
तस्य नेत्रं कमलश्रियं दधौ=उसकी आँखों ने कमल की शोभा धारण की।
अयं हि प्रांशुः पुरुषः=यह आदमी लंबा है।
स खर्वकायः दृश्यते=वह कद में नाटा दीखता है।

५. मनोविकार-संबंधी--

मनो मे संशयमवगाहते=मेरे मन में संदेह हो रहा है।
एते सङ्कल्पाः मम मनसि प्रादुरासन्=मेरे मन में ये विचार उठे।
आत्मन्यप्रत्ययं चेतः=अपने ऊपर विश्वास नहीं।
चिन्ताशतैर्बाध्यमानं मे मनः=सैकड़ों चिंताएँ मेरे मन में घूम रही हैं।
अधुनाऽहं वीतचिन्तो जातः=अब मैं निश्चिंत हो गया।
जातोऽपविषादः प्रकाममन्तरात्मा=अब मेरा अन्तःकरण चिंताओं से बिल्कुल ही विमुक्त हो गया।

अतिभूमिं गतस्तस्याः रणरणकः=उसका उद्वेग पराकाष्ठा पर पहुँच गया।
इमां तावदन्यतः क्षिपामि=तबतक मैं इसको दूसरी ओर बहलाता हूँ।
तस्य धैर्यं न हीयते=उसका धीरज नहीं छूटता।
कुतूहलेन तस्य चेतसि पदं कृतम्=उसके हृदय में कौतूहल उत्पन्न हुआ।

६. आनंदसूचक--

स आनन्दपरवशः जातः=वह आनंद से अधीर हो उठा।
तस्य वदनं हर्षोत्फुल्लं बभौ=उसका चेहरा खुशी से चमकने लगा।
गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि=वह आनंद के मारे फूला न समाया।
आनन्दस्य परां काष्ठामधिगतः=उसके हर्ष का पारावार नहीं रहा।
स्नेहार्द्रीभूतं तस्य हृदयम्=उसका हृदय स्नेह से पिघल उठा।
रोमाञ्चसाधारणं परितोषमनुभवामि=मैं आनंद से पुलकित हो रहा हूँ।
आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा दरीदृश्यते=आनन्द भरे नेत्रों से बार-बार देखता है।
स हर्षेण आत्मविस्मृतो बभूव=वह हर्ष के मारे अपने को भूल गया।
अहोभाग्यम्! दिष्ट्याद्य भवद्दर्शनं जातम्=अहा! बड़े भाग्य से आज आपके दर्शन हुए।

**सा स्मितमुखी बभूव**=उसके होंठों पर मुस्कुराहट छा गई।
**स उच्चैर्जहास**=वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

**७. शोकसूचक--**

**स कष्टमापन्नः**=वह कष्ट में पड़ गया।
**अतिशयेन सीदति मे मनः**=मेरा मन बहुत दुःखी है।
**धैर्यं निधेहि, हृदये समाश्वसिहि**=धैर्य धारण करो। आश्वस्त होओ। तसल्ली से रहो। घबराओ मत।
**मम विकारः परिच्छेदातीतः, अनिर्वचनीयं खलु मे दुःखम्**=मेरे दुःख का वर्णन नहीं हो सकता।
**कर्त्तव्यानि दुःखितदुःखनिर्वापणानि**=दुःखी जनों के दुःख का बोझ हल्का करना चाहिए।
**तस्य उद्बाष्पे नयने जाते**=उसकी आँखें भर गईं।
**तस्याः अविरलधारमश्रु प्रावर्त्तत**=उसकी आँखों से झरकर आँसू गिरने लगा।
**शुचो वशं मा गमः, शोकाधीरो मा भूः**=शोक से कातर मत होओ।
**मित्रदर्शनं दुःखविश्रामं ददाति**=मित्र को देखने से दुःख में सांत्वना मिलती है।
**किमिदमरण्यरोदनम् ?**=व्यर्थ का रोना रोने से क्या लाभ ?
**अवसन्नप्रायाणि मे गात्राणि**=मेरे गात्र सन्न हो उठे।
**सा विवर्णभावं प्रपेदे**=उसका चेहरा पीला (फीका) पड़ गया।
**विपत् विपदमनुबध्नाति**=विपत्ति पर विपत्ति आने लगती है। विपत्ति अकेली नहीं आती।

**८. नीतिविषयक--**

**आज्ञापनात् करणं श्रेयः, वाचः कर्मातिरिच्यते**=कहने से करना अच्छा है।
**कर्मणो गहना गतिः**=कर्म की गति बड़ी सूक्ष्म है।
**ईश्वरेच्छा बलीयसी**=ईश्वर की इच्छा बलवती है।
**दैवाधीनं जगत्सर्वं**=सबकुछ भाग्याधीन है।
**विना पुरुषकारेण दैवं न सिध्यति**=पुरुषार्थ के बिना भाग्य नहीं फलता।
**सुखमुपदिश्यते परस्य**=दूसरे को उपदेश देना सहज है।
**आकृतिविशेषेषु आदरः पदं करोति**=डीलडौल देखकर भी सम्मान किया जाता है।
**स्खलनशीलो हि मनुष्यः**=भूल करना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है।
**उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः**=उपकार के बदले में उपकार करना उचित है।
**महतां पदमनुविधेयम्**=बड़े लोगों का अनुसरण करना चाहिए।
**उत्सर्गाः सापवादाः**=नियमों में अपवाद भी होते हैं।

**द्वौ नञौ प्रकृतार्थं गमयतः**=दो 'नहीं' मिलकर 'हाँ' का अर्थ प्रकट करते हैं।
**विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता**=जन्म के साथ ही विपत्ति पीछे लगती है।
**स्वहितपरायणो मा भूः**=स्वार्थी मत बनो।
**कृतकर्मणां भोगादेव क्षयः**=किये हुए कर्मों का फल भोगने पर ही क्षीण होता है।
९. विविध--
**धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव**=मूसलाधार पानी बरसा।
**कियदवशिष्टं रजन्याः?**=अब रात कितनी बाकी है?
**प्रभातकल्पा हि रजनी**=भोर हुआ ही चाहता है।
**परिणतप्रायमहः**=दिन समाप्त हो चला।
**इयं हि गोधूली वेला**=गोधूली का समय है।
**सूचिभेद्यं तमः वर्त्तते**=घना अंधकार है।
**समयः स्नानभोजनं सेवितुम्**=नहाने-खाने का समय हो चला।
**स वाच्यतां गतः**=वह बदनाम हो गया।
**तिले तालं पश्यसि, अणुं पर्वतीकरोषि**=तुम तिल का ताड़ करते हो।
**सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यसि, आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यसि**=
दूसरे की आँख का तिल देखते हो, लेकिन अपना टेंटर नहीं देखते।
**स्वरुच्या वर्त्ततां भवान्, यथाभिलाषं क्रियताम्**=आपकी जैसी रुचि हो करें।
**सोऽधुना प्राप्तव्यवहारदशो जातः**=वह अब प्राप्तवयस्क (बालिग) हो गया।
**त्वयोपस्थातव्यम्**=तुम्हें उपस्थित रहना चाहिए।
**अहमनुपदमागत एव**=मैं पीछे से चला आता हूँ।
**त्वया स्वहस्तेनाङ्गारः कर्षितः**=तुमने जान-बूझकर आग में हाथ डाला।
**तस्य हस्ते पत्रं प्रापय**=उसके हाथ में चिट्ठी दे देना।
**एतत्कृत्वा त्वमुपहास्यतामेष्यसि**=ऐसा करने से तुम्हारी हँसी हो जाएगी।
**अस्ति मे विशेषोऽद्य**=आज मैं बहुत अच्छा हूँ।
**एतावान् मे विभवो भवन्तं सेवितुम्**=मैं आपकी सेवा कर सकता हूँ।
**अन्य गतिर्नास्ति, नान्यच्छरणम्**=दूसरा कोई उपाय नहीं है।
**मा चिनु गगनपुष्पाणि**=ख्याली पुलाव मत पकाओ।
**पञ्चवर्षदेशीयोऽयं बालः**=यह पाँच वर्ष का लड़का है।
**सर्वेऽस्य प्रयत्नाः साफल्यं ययुः**=इसके सभी प्रयत्न सफल हुए।
**नार्हसि मे प्रणयं विहन्तुम्**=मेरा अनुरोध अस्वीकार मत करो।
**हृदि एनां वाचमुपधातुमर्हसि**=इस बात को अच्छी तरह नोट कर लेना।
१०. भोजन-संबंधी--
**मां क्षुधा बाधते**=मुझे भूख लगी है।

ससितं दधिचिपिकान्नञ्च भुङ्क्ष्व=दही-चिउड़ा चीनी खाग्रो।
स दिवसस्य त्रिः भुङ्क्ते=वह दिन में तीन बार खाता है।
ब्राह्मणाः उदरपूरं मिष्टान्नानि भुक्तवन्तः=ब्राह्मणों ने भरपेट मिठाइयाँ खाईं।
ग्रहं नक्तं गोधूमचूर्णस्य रोटिकां खादामि=मैं रात में गेहूँ की रोटी खाता हूँ।
वयं भक्तं सूपं व्यञ्जनञ्च ग्रश्नीमः=हमलोग भात, दाल ग्रौर तरकारी खाते हैं।
मां शष्कुलीं कुण्डलिकां च भोजय=मुझे पूरी-जलेबी खिलाग्रो।
इमं बदामशतपुष्पयोः मिष्टपानकम् पायय=इसे सौंफ बादाम का शरबत पिलाग्रो।
रोगिणे मुद्गस्य यूषं देहि=रोगी को मूँग का जूस दो।
ग्रालुकपटोलयोः व्यञ्जने स्तः=ग्रालू ग्रौर परवल की तरकारियाँ हैं।
तेमने ग्रम्लचूर्णं नास्ति=तीमन में खटाई नहीं है।
ग्रद्य चणकबेसनस्य क्वथिका कृता=ग्राज बूंट के बेसन की कढ़ी बनी है।
शिशुः संयावं (मोहनभोगं) लेढि=बच्चा हलुग्रा चाटता है।
सूदः समितायाः पूपं निर्माति=रसोइया मैदे का पुग्रा बनाता है।
बालकेभ्यः लड्डुकाः रोचन्ते=लड़के लड्डू पसंद करते हैं।
मौदकिकः किलाटं भृष्ट्वा सितालेहे निक्षिपति=हलवाई खोग्रा भूनकर चाशनी में डालता है।
पक्वान्नं भोक्ष्यते?=पकवान खाग्रोगे?
पायसे किञ्चित् पाटलजलं मिश्रय=खीर में थोड़ा गुलाब-जल छोड़ दो।
सा जीरकमरीचैः सूपं संस्कारयति=वह जीरा मिर्च से दाल बघारती है।
चिञ्चाया लेहे कटुबीजस्याधिक्यं विद्यते=इमली की चटनी में मिर्च ज्यादे पड़ी है।
ग्रम्लरागे राजिका यवानिका च वर्त्तते=ग्रँचार में राई ग्रौर जमाइन है।
ग्रहं घार्तिकं व्यञ्जनमास्वादयामि=मैं घी की बनी हुई तरकारी चखता हूँ।
वाहिकः मकायस्य होलकं चर्वयति=चरवाहा मकई का होरहा चबाता है।

११. व्यवसाय-संबंधी--

ब्राह्मणः शिष्यान् वेदं पाठयन्ति=ब्राह्मण शिष्यों को वेद पढ़ाते हैं।
क्षत्रियाः धनुषा तरवारिणा च युध्यन्ते=क्षत्रिय धनुष ग्रौर तलवार से लड़ते हैं।
वैश्याः कृषिं वाणिज्यं च कुर्वन्ति=वैश्य खेती ग्रौर दूकानदारी करते हैं।
शूद्राः त्रीन वर्णान् सेवन्ते=शूद्र तीनो वर्णों की सेवा करते हैं।
गोपः गां महिषीं च पालयति=ग्वाला गाय ग्रौर भैंस पालता है।
लौहकारः भस्त्रां धमति ग्रङ्गारधान्यां लौहञ्च तापयति=लुहार भाथी को फूँकता है ग्रौर ग्रँगीठी में लोहा तपाता है।
वर्द्धकिः ग्रारया शिंशपाकाष्ठं [illegible]=बढ़ई ग्रारे से शीशम की लकड़ी चीरता है।

नापितः क्षुरेण मूर्धकचान् मुण्डयति=नाई उस्तरे से सिर के बाल बनाता है।
कुम्भकारः चक्रं घूर्णयित्वा वा भ्रामयित्वा घटं निर्माति=कुम्हार चाक घुमाकर घड़ा बनाता है।
तैलिकः पराञ्जे तैलं निष्पीडयति=तेली कोल्हू में तेल पेरता है।
रजकः सर्ज्या अंशुकं क्षालयति=धोबी सज्जी से दुपट्टा साफ करता है।
रङ्गाजीवः मञ्जिष्ठया उष्णीषं रञ्जयति=रँगरेज मंजीठ से मुरेठा रँगता है।
चर्मकारः शीर्णायाः उपानहश्चर्म सीव्यति=चमार फटे हुए जूते का चमड़ा सीता है।
माली मल्लिकामालां गुम्फति, ग्रथ्नाति=माली बेली की माला गूँथता है।
कांस्यकारः पित्तलपात्रे यशदसंस्कारं करोति=कसेरा पीतल के बर्तनों पर जस्ते की कलाई करता है।
स्वर्णकारः स्वर्णमुद्रिकायां हीरकखण्डं खचयति=सुनार सोने की अँगूठी में हीरे का नग जड़ता है।
निषादः नावं संवाह्य आतरं गृह्णाति=मल्लाह नाव खेकर भाड़ा वसूल करता है।
उत्तमर्णः अधमर्णात् कुसीदं गृह्णाति=महाजन कर्जदार से सूद लेता है।

१२. क्रय-विक्रय-संबंधी—

अयं वणिक् अतसीं विक्रीणीते=यह बनिया तीसी बेचता है।
अहं वर्जरीं क्रीणामि=मैं बाजड़ा खरीदता हूँ।
आपणात् (शीतबीजम्) स्निग्धजीरकमानय=दूकान से ईसबगोल लाओ।
स हट्टात् वृषं क्रीत्वा आनयति=वह हाट से बैल खरीद लाता है।
अयं वत्सः विंशत्या रौप्यकैः क्रीतोऽस्ति=यह बाछा बीस रुपए में खरीदा गया है।
अस्याः कौशेयशाट्याः मूल्यं पञ्चाशद् रूप्याणि=इस रेशमी साड़ी का दाम पचास रुपया है।
अस्य पुस्तकस्य कियन्मूल्यं वर्त्तते ?=इस किताब का कितना दाम है ?
अस्याः कङ्कतिकायाः मूल्यं त्रयः आणकाः=इस कंघी का दाम तीन आना है।
एकेन रौप्यकेण सेटकद्वयमात्रं सर्षपतैलं लभ्यते=रुपये का दो सेर सरसों का तेल मिलता है।
तोलकमात्रस्वर्णस्य मूल्यं अशीति रौप्यकाणि=एक तोला सोने का दाम ८०) रु० होता है।
कुडपरिमितां सन्तानिकामानय=पावभर मलाई लाओ।
षट्टङ्कमितं जातीपुष्पतैलं देहि=एक छटाँक चमेली का तेल दो।
पञ्चसेटकमितां सितां तोलय=एक पसेरी चीनी तौलो।
इदानीं सस्यानि सुक्रेयाणि वर्त्तन्ते=आजकल गल्ले का भाव सस्ता है।

कार्पासं महार्घं विद्यते=रुई की दर महँगी है।

**रजतं स्वल्पमूल्यं जातम्**=चाँदी का दाम उतर गया है।
**अस्यां निषद्यायां खस्खसो न प्राप्यते**=इस बाजार में पोस्ते का दाना नहीं मिलता है।

१३. रोग-संबंधी—

**मां शिरोव्यथा बाधते। शिरसि मे वेदना विद्यते**=मेरे सिर में दर्द है।
**स श्लेष्माक्रान्तो जातः। तस्य प्रतिश्यायः सञ्जातः**=उसे सर्दी हो गई है।
**अहमासप्ताहं ज्वरितोऽस्मि वा ज्वरग्रस्तस्य मे सप्ताहो व्यतीतः**=मुझे एक हफ्ते से बुखार है।
**तस्य अतीसारो जातः**=उसको दस्त जारी हो गया है।
**तव आमातीसारदोषो वर्त्तते**=तुम्हें आँव की शिकायत है।
**तस्य जानुनोः वेदनाऽस्ति**=उसके घुटनों में दर्द है।
**बालकस्य कफोणौ व्रणः सञ्जातः**=लड़के की केहुनी में घाव हो गया है।
**वैद्यः पक्वं व्रणं शल्येन विदार्य्य पूयं निःस्रावयति**=वैद्य पके हुए घाव को नश्तर से चीरकर पीब बहाता है।
**मम मुखे युवपिटकाः सञ्जाताः**=मेरे मुँह पर मुहाँसे हो गए हैं।
**कासरोगे वासकस्य क्वाथः पेयः**=खाँसी की बीमारी में अडूसे का काढ़ा पीना चाहिए।
**श्वासरोगे कनकासवः हितकारको भवति**=दमे की बीमारी में धतूरे का आसव फायदा करता है।
**ज्वरादौ लङ्घनं कुर्यात्**=बुखार के आदि में उपवास करना चाहिए।
**अजीर्णे भेषजं वारि**=बदहजमी में पानी ही दवा है।
**तस्य पादयोः दारी वर्त्तते**=उसके पाँवों में बिवाई फटी है।

## अभ्यास

मुहावरेदार संस्कृत में अनुवाद करो—

तुम तिल का ताड़ कर देते हो। ख्याली पुलाव मत पकाओ। मूसलाधार पानी बरस रहा है। मेरी आँखें भर आईं। तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है। बेकार रोने-धोने से क्या फायदा? यह बात कानों-कान फैल गई है। बुरा मत मानिए। आप हिम्मत क्यों हारते हैं? आफत पर आफत है। अफसोस! गजब हो गया। वह खुशी के मारे फूल उठा। मैं आपसे विदा माँगता हूँ। दूसरा कोई उपाय नहीं है। सरकार का जैसा हुक्म हो।



***

# तृतीयः पाठः

## हिंदी लोकोक्तियाँ और उनके संस्कृत रूप

अधजल गगरी छलकत जाय=**अगाधजलसञ्चारी, विकारी न च रोहितः; गण्डूषजलमात्रेण, शफरी फर्फरायते।**

अब पछताए होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत=**व्यतीते समये किं स्यात्, पश्चात्तापैः प्रयोजनम्।**

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता=**संहतिः कार्यसाधिका।**

अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग=**मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना, भिन्नरुचिर्हि लोकः।**

अशर्फी लुटे कोयलों पर मुहर=**रत्नं चौरा हरन्त्येव, शीताङ्गारे महादरः।**

अपनी करनी पार उतरनी=**यथा कर्म तथा फलम्।**

अपने मुँह मियाँ मिठ्ठू=**स्वात्मानं श्लाघते मूर्खः।**

अन्धे को दीपक दिखाना क्या?=**लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति?**

अंधेर नगरी चौपट राजा=**यथा राजा तथा प्रजा।**

आप भला तो जग भला=**आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।**

आया है सो जायगा, राजा रंक फकीर=**जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः।**

आग लगन्ते झोपड़ा जो निकसे सो लाभ=**सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः।**

आधी छोड़ एक को धावै=**यो ध्रुवाणि परित्यज्य, अध्रुवाणि निषेवते।**

सो आधी भी तुरत गमावै=**ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति, अध्रुवं नष्टमेव हि।**

आगे नाथ न पीछे पगहा=**रज्जुर्न पश्चान्न पुरोऽधियाता।**

आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास=**विनायकं प्रकुर्वाणो रचयामास वानरम्।**

आँख के अंधे नाम नयनसुख=**भिक्षार्थं भ्रमते नित्यं, नाम किन्तु धनेश्वरः।**

उद्यम कबहुँ न छाड़िए फल को दाता राम=**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**

ऊँची दूकान फीका पकवान=**अन्तःसारविहीनस्य, बहिराडम्बरं बहु।**

ऊँट के मुँह में जीरे का फोरन=**समुद्रे पृषतः पातो, रवये दीपदर्शनम्।**

एक पंथ दो काज=**एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा।**

एक हाथ से ताली नहीं बजती=**न तालिका ह्येककरेण ताड्यते।**

करम गति टारे नाहिं टरे=**यद्धात्रा लिखितं ललाटपटले, तन्मार्जितु कः क्षमः।**

कहीं घी घना कहीं मुट्ठी भर चना=**क्वचिच्छाकाहारः, क्वचिदपि च मिष्टान्नमशनम्।**



कहाँ राजा भोज कहाँ भजुआ तेली=**क्व सूर्यप्रभवो वंशः, क्व चाल्पविषया मतिः।**

काम प्यारा है चाम नहीं=रूपात्कर्मातिरिच्यते। गुणैर्हि सर्वत्र पदं निधीयते।
कल करे सो आज कर=शुभस्य शीघ्रम्।
आज करो सो अब्ब=श्वः कर्त्तव्यानि कार्याणि, कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्।
का वर्षा जब कृषी सुखाने=व्यतीतेऽवसरे लोके, दीर्घोद्योगोऽपि निष्फलः।
काबुल में भी गधे होते हैं=काश्यामपि निशाचराः।
कोयला होय न ऊजलो नौ मन साबुन खाय=अङ्गारः शतधौतोऽपि नहि श्वेतो भविष्यति।
कहने से करना भला=वाचः कर्मातिरिच्यते।
खग जाने खग ही की भाषा=खगस्य भाषां खग एव वेत्ति।
खरबूजा खरबूजे का रंग पकड़ता है=संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं=प्रत्यायान्ति पुनर्गता न दिवसाः, कालो जगद्भक्षकः।
गुरु गुड़ चेला चीनी=प्रकर्षआधारवशो गुणानाम्।
गुड़ खाय गुलगुले से परहेज=दिवा काकरवाद्भीता रात्रौ तरति नर्मदाम्।
घर का जोगी जोगड़ा=मलये भिल्लपुरन्ध्री, चन्द्रनतरुकाष्ठमिन्धनं कुरुते।
घर का भेदिया लंका ढाह=अहो दुरन्तः स्वजनैर्विरोधः।
घर में भूँजी भाँग नहीं बाहर में है नाच=गृहे कपर्दिका नास्ति, बहिरस्ति महोत्सवः।
चौबे गए छब्बे होने दूबे होकर आए=प्रदीपं द्योतयेद्यावन्निर्वाणस्तावदेव सः।
चले न जाने अँगना टेढ़=वर्त्तते नाक्षराभ्यासो, ग्रन्थोऽशुद्धिसमाकुलः।
चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात=चलं चित्तं, चलं वित्तं, चले जीवितयौवने।
चलते-फिरते पाइए, बैठे देगा कौन=नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।
चोर-चोर मौसियात भाई=स्ववर्गे परमा प्रीतिः।
छोटा मुँह बड़ी बात=अत्युच्चैर्भवति लघीयसां धार्ष्ट्यम्।
क्षमा बड़न को चाहिए=क्षमासारा हि साधवः।
जबर्दस्त का ठेंगा सिर पर=समर्थो यो नित्यं, स जयतितरां कोऽपि पुरुषः।
जो गरजता है सो बरसता नहीं=शरदि न वर्षति गर्जति, वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः।
जो तोको काँटा बुवै ताहि बोय तू फूल=अपकारिषु यः साधुः साधुत्वं तस्य प्रोच्यते।
जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ=अन्विष्टं येन लोकेऽस्मिन् लब्धं तेनैव निश्चितम्।
जिसकी लाठी उसकी भैंस=वीरभोग्या वसुन्धरा।
जल में रहकर मगर से बैर=मध्ये निवासो मकरेण वैरम्।

जैसे को तैसा=शठे शाठ्यं समाचरेत्।

जैसी करनी वैसी भरनी=**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।**
जैसी हो भवितव्यता वैसी उपजे बुद्धि=**तादृशी जायते बुद्धिर्यादृशी भवितव्यता।**
जहाँ गाछ न वृक्ष तहाँ रेंड़ महापुरुष=**निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।**
जैसा बाप वैसा बेटा=**आत्मा वै जायते पुत्रः।**
जैसा देश वैसा भेष=**यत्र यादृश आचारस्तत्र वर्त्तेत तादृशम्।**
झूठे का मुँह काला=**सत्यमेव जयते नानृतम्।**
तेते पाँव पसारिए जेती लंबी सौर=**चेष्टितम् सकलं सर्वैः स्वानुरूपं प्रशस्यते।**
दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम=**संशयात्मा विनश्यति।**
दूध का जला मट्ठा फूँक-फूँककर पीता है=**बालः पयसा दग्धः, तक्रं फूत्कृत्य शङ्कितः पिबति।**

दूर का ढोल सुहावन=**अपरिचिते महानादरो भवति।**
धोबी का कुत्ता घर का न घाट का=**मध्ये तिष्ठ त्रिशंकुवत्।**
न रहे बाँस न बाजे बाँसुरी=**मूलाभावे कुतः शाखा।**
न नौ नगद न तेरह उधार=**वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात्।**
नीम हकीम खतरे जान=**अनुभवरहितो वैद्यः, लोके निहन्ति प्राणिनः प्राणान्।**
नौ की लकड़ी नब्बे खर्च=**वहनीयव्ययो मूलादधिको नैव शोभते।**
प्राण जाहिं बरु वचन न जाहीं=**न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम्।**
पर उपदेश कुशल बहुतेरे=**परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्।**
पढ़े फारसी बेचे तेल, देखो यह कुदरत का खेल=**भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।**

बहुत योगी से मठ उजाड़=**नश्यन्ति बहुनायकाः।**
बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद=**विहाय मुक्तां करिकुम्भजातां, कान्ता किरातस्य बिभर्ति गुञ्जाम्।**

बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा=**नहि वन्ध्या विजानाति, गुर्वीम् प्रसववेदनाम्।**
बूँद-बूँद से तालाब भरता है=**जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।**
बीती ताहि बिसारि दे=**गतस्य शोचना नास्ति।**
बैठे से बेगार भला=**अकरणान्मन्दकरणं श्रेयः।**
बारह बरस दिल्ली रहे, पर भाड़ ही झोंका किए=**अपि काश्यां निवासेन, पठितं नैव किञ्चन।**

भैंस के आगे बीन बजावे, वह बैठी पगुराय=**किं मिष्टमन्नं खरशूकराणाम्।**
वेष से भीख मिलती है=**वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः।**
भूखे भजन न होहि गुपाला=**भोजनं प्रथमं कार्यं, भजनं च ततः परम्।**

भूखा क्या न करता=**बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।**

मन चंगा तो कठौती में गंगा=**स्वान्ते पूते जगत्पूतम्। मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।**

मियाँ बीवी राजी तो क्या करेगा काजी=**स्त्रीपुरुषौ यदा रक्तौ, किं करिष्यन्ति बान्धवाः।**

मियाँ की दौड़ मस्जिद तक=**मशकस्य बलं कियत्। दुर्बलानां समुत्साहः, शयनावधि वर्त्तते।**

मुँह में राम-राम बगल में छुरा=**विषकुम्भः पयोमुखः।**

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचि सम=**ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति।**

मन मोदक नहिं भूख बुताई=**उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।**

लालच बुरी बलाय=**अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।**

लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर=**निरक्षरो भट्टाचार्यः।**

वक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू=**के न बिभ्यति दुष्टेभ्यः।**

वा सोने को जारिए जासो टूटे कान=**मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः।**

साँच बरोबर तप नहीं=**नास्ति सत्यात् परो धर्मः।**

साँच को आँच क्या=**सत्ये नास्ति भयं क्वचित्।**

सबसे भला चुप्प=**मौनं सर्वार्थसाधकम्।**

सत-संगति मुद-मंगल मूला=**सत्सङ्गतिः सकलमङ्गलमोदमूला।**

समय चूकि पुनि का पछिताने=**व्यतीतेऽवसरे व्यर्थं का नाम परिजल्पना।**

सत्तर चूहे खाके बिल्ली चली हज को=**वृद्धा वेश्या तपस्विनी।**

हाथी चला बजार कुत्ते भूँकें हजार=**न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।**

होनहार बिरवान के होत चीकने पात=**भव्यानां भवितव्यानां प्रथमं स्याच्छुभावहम्।**

हाथ कंगन को आरसी क्या=**सूर्यस्य किं दीपकदर्शनेन।**

होम करते हाथ जले=**उपकुर्वन्नेव हन्यते।**

***

# सप्तम भाग | अनुवाद के लिए चुने हुए अंश

## प्रथमः पाठः

### वर्णनात्मक अनुच्छेद (ससंकेत)

१

सिंह सभी पशुओं का राजा है। इसके शरीर का रंग प्रायः मैला होता है। सारे शरीर पर छोटे-छोटे चिकने बाल (चिक्कणाः केशाः) होते हैं। इसके दाँत ऐसे तेज (सुतीक्ष्णाः) होते हैं कि वह आसानी से (सुगमतया) पशुओं को चीर-फाड़ डालता है (विदारयति)। इसके नाखून (नखाः) भी बड़े लंबे-लंबे (दीर्घाकाराः) होते हैं। यह बड़ी फुर्ती से (अतिशीघ्रतया) अपने शिकार पर हमला (आक्रमणम्) करता है। सिंह की वीरता मशहूर (प्रख्याता) है।

२

हाथी प्रायः सभी चतुष्पदों में बड़ा (द्राघिष्ठः) और मोटा (स्थविष्ठः) होता है। इसके लंबे कान सूप के समान (शूर्पवत्) मालूम पड़ते हैं। हाथी की सूँढ़ (गजशुण्डा) भी अद्भुत चीज है। यह लंबे साँप की नाईं लटकती रहती है (लम्बायमाना वर्त्तते)। इसके सिर में दोनो ओर (उभयतः) घड़े की तरह (कलशाकारे) दो मांसपिंड होते हैं जिन्हें 'कुम्भ' कहते हैं। (कुम्भ इति प्रसिद्धे)। हाथी का दाँत बहुत मूल्यवान् होता है। इससे बहुत-से खिलौने (क्रीडनकानि) बनते हैं।

३

घोड़े से हमलोगों का बहुत उपकार होता है। भारतवासी बहुत दिनों से घोड़े का व्यवहार करते हैं। प्राचीन समय में (पुरा) इसीके द्वारा अश्वमेध यज्ञ किया जाता था। घोड़े लड़ाई में (समरे) जाते थे और रथ खींचते थे। आज भी घोड़े हमलोगों की बारात में (वरयात्रायां) सजे जाकर (सुसज्जिता भूत्वा) उसकी शोभा बढ़ाते हैं। अन्यान्य देशों में (देशान्तरेषु) तो घोड़े हल भी जोतते हैं (हलमपि कर्षन्ति)।

४



गोजाति की उन्नति (गोवंशवृद्धिः) पर ही हमारे देश का अभ्युदय निर्भर

है। इसीका दूध पीकर हम हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इसीके प्रसाद से हमें दही, घी, मक्खन (नवनीतम्), मलाई आदि स्वादिष्ट पदार्थ खाने को मिलते हैं। गरीब लोग भी मट्ठा (तक्रम्) पीकर मस्त रहते हैं। गाय का मूत्र (गोमूत्रम्) भी कई रोगों की औषधि है। गोबर से (गोमयेन) भी बहुत काम निकलता है। इससे जमीन लीपी जाती है (लिप्यते) और गोइठा (करीषम्) बनाया जाता है। इसका मल-मूत्र (पुरीषम्) पटाने से खेत की भूमि उपजाऊ (उर्वरा) होती है।

५

चींटियाँ (पिपीलिकाः) बहुत मिहनती होती हैं। ये समय को कभी बरबाद नहीं करतीं (वृथा न गमयन्ति)। भोर होते ही अपने काम में लग जाती हैं (स्वकार्ये संलग्ना भवन्ति)। ये दस बजे रात तक (रात्रौ दशवादनसमयपर्यन्तं) काम करती हुई देखी गई हैं। चींटियाँ झुण्ड बाँधकर काम करती हैं। ये मीठी चीजों की शौकीन (मिष्टवस्तुप्रिया) होती हैं। यदि कोई चींटी बीमार पड़ जाती है (रोगग्रस्ता भवति) तो और चींटियाँ बड़े यत्न से उसकी सेवा करती हैं (शुश्रूषन्ते)।

६

मधुमक्खी (मधुमक्षिका) के समान अध्यवसायी जीव मिलना कठिन है। मधुमक्खियाँ देखने में तो छोटी (क्षुद्राः) होती हैं, पर काम करने में बड़ी बहादुर (कार्येऽतिशूराः) होती हैं। ये एक फूल से दूसरे फूल पर जाकर (पुष्पात् पुष्पान्तरं गत्वा) रस का संग्रह कर लाती हैं (रसं संगृह्य आनयन्ति) और मधु का छत्ता (मधुकोषं) तैयार करती हैं (निर्मान्ति)। मधु बड़े काम की चीज (अत्युपयोगिवस्तु) है। छत्ते से जो मोम (मधूच्छिष्टम्) निकलता है (निःसरति) उसका भी कई कामों में व्यवहार किया जाता है (तदपि अनेकेषु कार्येषु व्यवह्रियते)।

७

ईख के रस को (इक्षुरसं) कड़ाह में (कटाहे) उबालकर गुड़ बनाते हैं। छाने हुए रस में (वस्त्रपूते रसे) कुछ चूना (चूर्णं) और दूध मिलाकर औंटाने से उसका मैल निकल जाता है (मलं बहिर्भवति)। चीनी बनाने के लिए (सितानिर्माणार्थम्) रस को कुछ पतला ही रख छोड़ते हैं। औंटे रस को गढ़ों में (गर्तेषु) ढारकर शक्कर (शर्करा) बनाई जाती है। चीनी और शक्कर से तरह-तरह की (नानाविधानि) मिठाइयाँ (मिष्टान्नानि) बनती हैं।

८

नमक हमारे भोजन के स्वाद को सुधारता है। जिस तरकारी में (व्यञ्जने) नमक नहीं पड़ता, वह फीकी (स्वादरहितं) मालूम पड़ती है। नमक खून साफ करनेवाला (रक्तशोधकम्) और हाजमा बढ़ानेवाला (पाचनशक्तिवर्द्धकम्) है। जो पदार्थ नमक में रखा जाता है, वह जल्द नहीं बिगड़ता (विकृतो न भवति)। यही कारण है कि विदेशी मांस-मछली को (मत्स्यमांसादिकं) बहुत दिनों तक रख सकते हैं।

९

गंगा नदी हिमालय से निकलती है। यह सभी नदियों में श्रेष्ठ समझी जाती है। इसका जल बहुत ही स्वच्छ और कई प्रकार की बीमारियों को छुड़ानेवाला (विविधरोगनाशकम्) है। गंगा के दोनो ओर (गङ्गामुभयतः) बड़े-बड़े शहर (नगराणि) बसे हैं। गंगाजी में बहुत-सी नदियाँ आकर मिलती हैं (सङ्गच्छन्ते)। इलाहाबाद में (प्रयागे) गंगा और यमुना का संगम (गङ्गायमुनयोः सङ्गमः) हुआ है। गंगा के तट पर ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ लोग दूर-दूर से तीर्थ करने आते हैं (तीर्थाय समायान्ति)।

१०

हिमालय पहाड़ संसार में सभी पहाड़ों से ऊँचा है (उच्चतमो वर्त्तते)। इसकी चोटी पर (शृङ्ग) हमेशा बर्फ (हिमम्) जमी रहती है। इसलिए इसका नाम 'हिमालय' पड़ा है। हिमालय के आस-पास घने जंगल (निविड-वनानि) हैं। इनमें सब तरह के वृक्ष पाए जाते हैं। दवा की जड़ी-बूटियाँ (ओषधिद्रव्याणि) भी बहुतायत से मिलती हैं (प्रचुरपरिमाणे लभ्यन्ते)। किसी-किसी गुफा में (गुहायाम्) साधु-महात्माओं के दर्शन भी हो जाते हैं।

११

लोहे की उपयोगिता का वर्णन नहीं हो सकता (अवर्णनीया)। छोटी सूई से लेकर (क्षुद्रसूचिकामारभ्य) जहाज आदि (जलयानादयः) बड़े पदार्थ (वृहत्पदार्थाः) तक लोहे की सहायता से बनते हैं। आजकल जितनी बड़ी-बड़ी मशीनें (यन्त्राणि) चलती हैं। (सञ्चालितानि भवन्ति) वे सब लोहे की ही बनी (लौहनिर्मितानि) रहती हैं। यदि लोहा न रहता तो संसार की सारी सभ्यता धूल में मिल जाती (नष्टप्राया अभविष्यत्)। यहाँ तक कि हम दाने-दाने को मुहताज हो जाते (अन्नकणविरहिताः अभविष्याम)।



१२

सोना बहुत मूल्यवान् धातु है। इससे कीमती जेवर (बहुमूल्यानि

आभूषणानि) बनाए जाते हैं (निर्मीयन्ते)। जो लोग धन-दौलतवाले (विभवसम्पन्नाः) हैं वे ही सोने का व्यवहार कर सकते हैं। इस देश में भी सोने की बहुत-सी खानें (खनयः) हैं। जिसकी जमीन में भाग्यवश सोने की खान (स्वर्णाकरः) निकल जाती है वह मालोमाल (लक्षपतिः) हो जाता है।

१३

इस देश में छः ऋतुएँ होती हैं। प्रत्येक ऋतु में दो-दो मास होते हैं। ग्रीष्म-ऋतु में कड़ी गर्मी (प्रचण्डनिदाघः) पड़ती है। पेड़-पौधे तक मुरझा जाते हैं (म्लायन्ति)। वर्षा-ऋतु आने पर झुलसी हुई (सन्तप्ता) पृथ्वी फिर लहलहा उठती है (श्यामलायते)। शरद्-ऋतु में (शरदि) चाँदनी (चन्द्रिका) की बहार (शोभा) देखने में आती है। हेमन्त-ऋतु में नए-नए अनाज (नवान्नानि) तैयार होकर गृहस्थ के घर आ जाते हैं। शिशिर-ऋतु में कड़ाके का जाड़ा (दुःसहं शैत्यं) पड़ता है। वसन्त-ऋतु में भूमि नए-नए फूलों और पत्तों से (किसलयैः) मनोहर शोभा धारण करती है (मनोरमां शोभां धारयति)।

१४

भारतवर्ष में जितने त्योहार (उत्सवाः) मनाए जाते हैं, उतने शायद ही किसी दूसरे देश में मनाए जाते होंगे। कोई महीना ऐसा नहीं जाता जिसमें दो-चार त्योहार नहीं पड़ते हों। फाल्गुन की पौर्णमासी को (फाल्गुन-पूर्णिमायाम्) होली का त्योहार (होलिकोत्सवः) मनाया जाता है। चैत्र में रामनवमी पड़ती है। भादो के अँधेरे पक्ष में (भाद्रकृष्णपक्षे) कृष्णाष्टमी मनाई जाती है। आश्विन में बड़ी धूम-धाम से (महता समारोहेण) दुर्गा की पूजा होती है। कार्तिक में अमावस को (अमावास्यायाम्) दीवाली (दीपावली) मनाई जाती है। इसमें लोग ऊक भाँजते हैं (उल्काभ्रामणं कुर्वन्ति)। सावन में राखी बाँधी जाती है (रक्षाबन्धनम् भवति) और आश्विन में जयंती लेकर ब्राह्मण लोग यजमानों को आशीर्वाद देते हैं (आशिषः वदन्ति)। जेठ के दशहरे में (दशहरायाम्) गंगा की पूजा होती है। इसके अतिरिक्त और भी कितने ही छोटे-बड़े पर्व हैं। प्रत्येक त्योहार में खासी चहल-पहल (आमोद-प्रमोदादिकम्) रहती है।

१५

भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर प्रान्त में काश्मीर एक सुंदर प्रदेश है। यहाँ की भूमि इतनी रमणीय (रम्या) है और प्रकृति की छटा इतनी मनोहर है (प्रकृतिशोभा च ईदृशी मनोरमा) कि एकटक (निर्निमेषम्) देखने को जी

चाहता है (द्रष्टुमिच्छा भवति)। यहाँ के लोग भी देखने में बड़े सुंदर होते हैं (अत्रत्या जना अपि अतिसौम्यरूपाः भवन्ति)। कश्मीर की जलवायु भी स्वास्थ्य के अनुकूल है (स्वास्थ्यानुकूलः)। लोग खूब (प्रकामम्) सैर करते हैं (विचरन्ति) और प्रकृति का आनंद लूटते हैं। कश्मीर भारत का स्वर्ग ही है।

***

## द्वितीयः पाठः

## कथात्मक अनुच्छेद (ससंकेत)

१

किसी जंगल में (कस्मिंश्चिद्वने) एक सिंह आराम के साथ (सुखेन) सो रहा था। इतने में एक चूहा उसकी गर्दन पर दौड़ गया। सिंह जग पड़ा (जागरितः)। वह झुंझलाकर चूहे को मार ही डालना चाहता था (यावत् असौ मूषकं जिघांसति) कि चूहे ने गिड़गिड़ाकर (कातरीभूय) छोड़ देने के लिए प्रार्थना की। सिंह ने उदारतापूर्वक उसकी जान छोड़ दी (तस्य प्राणान् अमुञ्चत्)।

२

कुछ दिन बीतने पर (अथ दिनेषु गच्छत्सु) अचानक (अकस्मात्) सिंह जाल में फँस गया (जाले निपतितः)। उसने छूटने की भरसक (यथाशक्यम्) कोशिश की, किन्तु सब व्यर्थ। आखिर (अन्ततोगत्वा) वह लाचार होकर (निरुपायो भूत्वा) जोर से गरज उठा (उच्चैर्जगर्ज)। उसकी रोनी आवाज सुनकर (करुणक्रन्दनमाकर्ण्य) वह मूसा तुरंत वहाँ आ पहुँचा और बात-की-बात में (तत्क्षणमेव) जाल को काटकर सिंह को छुड़ा लिया (पाशं छित्वा सिंहं मोचितवान्)।

३

एक सियार (शृगालः) किसी अंगूर के बाग में (द्राक्षोद्याने) जा पहुँचा। वहाँ पके हुए रस से भरे मीठे अंगूरों को देखकर (सरसमधुराणि पक्वद्राक्षाफलानि वीक्ष्य) उसके मुँह में पानी भर आया (मुखं लालायितं जातम्)। अंगूर के गुच्छे (द्राक्षास्तवकाः) कुछ ऊँचे थे। बहुत कुछ उछल-कूद करने पर भी जब उन्हें न पा सका, तब यह कहते हुए वहाँ से लौट चला कि 'अंगूर खट्टे होते हैं'।

४

एक कुत्ता अपने मुँह में एक रोटी का टुकड़ा लेकर (रोटिकाखण्डमादाय) नदी के पार जा रहा था (गच्छन्नभूत्)। पानी में अपनी परिछाँही देखकर (स्वकीयं प्रतिबिम्बं दृष्ट्वा) उसने समझा कि कोई दूसरा कुत्ता और भी बड़ा टुकड़ा मुँह में लिए जा रहा है। बस, ज्योंही उसने वह बड़ा टुकड़ा छीनने के लिए मुँह खोला (मुखं व्याददाति) त्योंही उसके मुँह से रोटी का टुकड़ा गिर पड़ा और पानी में डूब गया (जले निमग्नम्) और परिछाँहीवाला टुकड़ा भी गायब हो गया (अन्तर्हितं बभूव)।

५

एक गड़रिया (मेषपालः) भेड़ चराते समय पुकारा करता था, "दौड़ो, लोगो, दौड़ो (धावत, धावत), भेड़िया आया" (वृकः समायातः)। गाँव के लोग अपना-अपना काम छोड़कर (स्वस्वकार्य्याणि परित्यज्य) लाठी लेकर (लगुडं गृहीत्वा) दौड़ते थे। तब वह खिलखिलाकर हँसने लगता (अट्टहासं करोति)। बेचारे गाँववाले अपना-सा मुँह लेकर (लज्जिताः भूत्वा) घर लौट जाते थे।

६

दो-तीन दफे ऐसा ही हुआ। एक दिन संयोग से सचमुच ही भेड़िया आ पहुँचा। गड़ेरिया घबराकर चिल्लाने लगा (क्रोष्टुमारभत)—"भेड़िया आया, भेड़िया आया"। लेकिन अब कौन सुनता था (कः शृणोति)? गाँववालों ने समझा कि वह पूर्ववत् ठग रहा है (वञ्चयति)। निदान (फलतः) भेड़िया आया और उसने एक-एक करके (क्रमेण) सब भेड़ों को मार डाला (व्यापादितवान्)।

७

किसी किसान के पास (कस्यचित् कृषीवलस्य) एक मुर्गी थी (कुक्कुटी आसीत्)। वह प्रतिदिन एक सोने का अण्डा (स्वर्णाण्डम्) देती थी। किसान ने सोचा जरूर (नूनम्) इसके पेट में सोने का खजाना है (स्वर्ण-निधिर्वर्त्तते)। ऐसा सोच (इति विचिन्त्य) उसने मुर्गी को मारकर उसका पेट चीर डाला (द्विधा चकार), पर सोने का कण भी न मिला (स्वर्णकणमपि न लब्धवान्)। तब वह सिर धुनकर पछताने लगा (पश्चात्तापं कर्त्तुमारब्धवान्)

८

एक बार (एकदा) कछुए (कच्छपः) और खरगोश (शशकः) में बाजी

लगी कि कौन तेज चलता है (तीव्रम् गच्छति)। खरगोश छलाँग मारते हुए

(संकूर्दमानः) कहीं-से-कहीं निकल गया (सुदूरं गतः)। कछुआ धीमी चाल से चलते हुए (मन्दं मन्दं विसर्पन्) बहुत पीछे छूट गया। यह देखकर खरहे ने सोचा––जरा आराम कर लूँ (क्षणमारमामि)। कछुआ निरंतर चलता ही रहा (अजस्रं चलन्नेवासीत्)। फल यह हुआ कि कछुआ पहले ही निर्दिष्ट सीमा पर (निश्चिते सीम्नि, लक्ष्यस्थाने) पहुँच गया और खरहा सोता ही रह गया।

९

एक किसान के तीन लड़के थे। वे रोज आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे (परस्परं विवदमानास्तिष्ठन्ति स्म)। बेचारा किसान तरह-तरह से (नाना प्रकारेण) उन्हें समझा-बुझाकर हार गया (श्रान्तो बभूव), किंतु उन्होंने नहीं समझा (तेषां बोधोदयो न सञ्जातः)। तब (ततः) उस किसान ने एक लकड़ी का गट्ठर मँगवाया और लड़कों के सामने ला रखा (पुत्राणां समक्षे स्थापितवान्)। उसने प्रत्येक लड़के से कहा, इस गट्ठर को तोड़ डालो (एनं काष्ठखण्डचयं भञ्जय)। बारी-बारी से (पर्यायक्रमेण) तीनों लड़कों ने कोशिश की, पर व्यर्थ हुई (चेष्टा विफला जाता)।

१०

तब बूढ़े किसान ने कहा––"अच्छा (अस्तु), अब एक-एक लकड़ी को अलग-अलग कर (पृथक् पृथक् कृत्वा) तोड़ डालो।" यह सुनते ही लड़कों ने लकड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले (खण्डशः कृतवन्तः)। किसान ने कहा–– "देखो, यदि तुमलोग मिल-जुलकर (एकीभूय) रहोगे तो गट्ठर की भाँति सबल बने रहोगे, पर यदि आपस में बँटे रहोगे तो नष्ट होते देर न लगेगी" (अचिरमेव नङ्क्ष्यथ)।

११

कुछ लड़के एक तालाब के किनारे (तडागस्य कूलोपरि) खेल रहे थे (क्रीडन्त आसन्)। पानी में मेढ़कों को (भेकान्) देखकर उन्होंने ढेले (लोष्ठान्) फेंकना शुरू किया। ढेले की चोट खाकर (लोष्ठापहतः) एक बूढ़े मेढ़क ने कहना शुरू किया––"बच्चो (वत्साः), ऐसा खेल मत खेलो (एतादृशीं खेलां मा कुरुत), तुम्हारा तो कुतूहल (कौतूहलम्) होता है और हमलोगों की जान जाती है (प्राणाः प्रयान्ति)।"

१२

एक बार किसी गधे ने घूमते-घूमते कहीं सिंह का चमड़ा पा लिया (सिंहचर्म लब्धवान्)। सिंह की खाल ओढ़कर वह चारों ओर निःशंक

घूमने लगा (सिंहचर्मावृतः स रासभः निःशङ्कः सर्वासु दिक्षु पर्यटति स्म)। राह चलते (पथि) उसे जो जानवर मिलता, उसे डराने (भाययितुम्) दौड़ता। इसी तरह उसने एक सियार को भी डराना चाहा, पर ज्योंही उसने गधे की आवाज सुनी (गर्दभस्वरं श्रुतवान्) त्योंही खड़ा होकर कहने लगा—"सिंह रेंकना नहीं जानता"।

१३

ईश्वरचंद्र बड़े ही दयालु प्रकृति के थे। कोई भी भिक्षुक उनके द्वार से निराश होकर नहीं लौटता था। एक दिन उन्होंने देखा, एक फटे-पुराने कपड़े पहने हुई (जीर्णवस्त्रावृता) बुढ़िया सड़क के किनारे बैठी है (मार्गप्रान्ते उपविष्टास्ति)। भूख-प्यास के मारे (क्षुत्पिपासया) उसका कंठ सूख गया है और उसमें बोलने की शक्ति भी नहीं रह गई है। यह देखकर विद्यासागर का हृदय दया से पिघल उठा (दयार्द्रीभूतम्) और उन्होंने मिठाई खरीदकर बुढ़िया को भरपेट (उदरपूरम्) खिला दिया।

१४

एक बार विद्यासागर रेल में (वाष्पयाने) सफर कर रहे थे। एक स्टेशन पर (विरामस्थले) उन्होंने देखा कि एक वृद्ध गाड़ी पर चढ़ना चाहता है, किंतु बार-बार प्रयत्न करने पर भी उससे मोटा गाड़ी पर नहीं चढ़ाया जाता। इतने में घंटी पड़ गई (प्रस्थानघण्टिका ध्वनिता)। बूढ़े ने कातर दृष्टि से इधर-उधर (इतस्ततः) देखा, पर कोई मदद देनेवाला न मिला (सहायको न लब्धः)। इतने ही में विद्यासागर लपककर आ पहुँचे और मोटे को गाड़ी में चढ़ाकर बूढ़े को भी बिठला दिया।

१५

एक साधु सरोवर में स्नान कर रहे थे। इतने में उन्होंने देखा कि एक बिच्छू (वृश्चिकः) पानी में डूब रहा है (आप्लावितो भवति)। यह देखकर उन्होंने चुल्लू में (चुलूके) बिच्छू को उठाना चाहा, पर बिच्छू ने डंक मार दिया (दृष्टवान्)। तो भी साधु ने हिम्मत नहीं हारी (साहसं न परित्यक्तवान्)। दो बार डंक खाने पर भी उन्होंने तीसरी बार बिच्छू को लेकर किनारे पर फेंक दिया। घाट पर नहाने के लिए जो लोग खड़े थे (स्नानार्थं दण्डायमानाः जनाः) वे यह तमाशा (कौतुकम्) देख रहे थे। उन्होंने विस्मित होकर साधु से पूछा—"आप बार-बार इस दुष्ट जीव से सताए जाने पर भी (पुनःपुनर्व्याहतोऽपि सन्) इसके ऊपर दया क्यों करते हैं ([illegible])?"
साधु ने उत्तर दिया (उत्तरमब्रवीत्) "इसका धर्म है डंक मारना और मेरा

धर्म है दया करना। जब यह जानवर होकर अपना धर्म नहीं छोड़ता (स्वधर्मं न त्यजति) तब मैं साधु होकर अपना धर्म कैसे छोड़ूँ (कथं मुञ्चेयम्) ?"

***

# तृतीयः पाठः

## भावात्मक अनुच्छेद (ससंकेत)

१

मनुष्य जो कुछ करते हैं, सुख के लिए ही करते हैं। सबका उद्देश्य यही रहता है कि हमको सुख मिले (सुखप्राप्तिरेव सर्वेषां लक्ष्यम्), किंतु गला फाड़-फाड़कर (अत्युच्चैः) सुख-सुख चिल्लाने से किसीको सुख नहीं मिल सकता (प्राप्तुं न शक्यते)। सुख तभी मिल सकता है और उन्नति तभी हो सकती है जब उचित रीति से (समुचितरीत्या) अपने कर्त्तव्य और कर्म का पालन किया जाए।

२

मनुष्य कहलाने के लिए शिक्षा ग्रहण करना नितांत आवश्यक है (शिक्षयैव हि मनुष्यपदसार्थक्यम्)। बिना शिक्षा पाए वास्तविक मनुष्यता प्राप्त नहीं होती, इसीलिष बचपन में (बाल्यावस्थायाम्) लड़कों को शिक्षा दी जाती है। हम केवल द्रव्य-लाभ के लिए ही विद्या सीखते हैं ऐसा किसीको न समझना चाहिए (केवलं द्रव्यप्रयोजनं हि विद्याध्ययनमिति न केनापि मन्तव्यम्)।

३

नैतिक बल का न होना ही कायरता के नाम से पुकारा जाता है (नैतिकबलाभाव एव भीरुतेति कथ्यते)। स्कूल में ऐसे लड़कों की संख्या कितनी होगी जो अपराध करके स्वीकार करते हों (स्वापराधं स्वीकुर्वन्ति)। ऐसे विद्यार्थी कितने होंगे जो दण्ड पाने की बात जानकर भी (दण्डविधानवार्तां ज्ञात्वापि) अपने अपराध को प्रकट करने का साहस रखते हों (प्रकटीकर्तुं साहसवन्तः स्युः)। जबतक तुम भीरु बने रहोगे (यावत् भीरुत्वमवलम्बसे) तबतक मैं यही कहूँगा कि विद्या का फल तुम्हें प्राप्त नहीं हुआ (विद्याफलेन वञ्चितोऽसि)।

४

दोष छिपाने के लिए (दोषसंगोपनार्थम्) झूठ बोलना (अनृतभाषणम्) और भी बड़ा दोष है (गुरुतरो दोषः)। दोष से दोष का उद्धार कदापि

नहीं हो सकता। कीचड़ से कीचड़ का दाग साफ नहीं हो सकता (नहि पङ्केन मलं शुध्यति)। आग से आग नहीं बुझती (शाम्यति)। उसे बुझाने के लिए पानी आवश्यक है। वैसे ही दोष को दूर करने के लिए सत्य की आवश्यकता है।

५

समय का अच्छी तरह व्यय करने पर ही जीवन की सफलता निर्भर है (समयस्य सद्व्यय एव जीवनसाफल्यविधायकः)। हर काम के लिए एक समय और हर समय के लिए एक काम निश्चित कर लेना चाहिए (काल-कर्मणी अन्योन्याश्रयत्वेन संयोजयितव्ये)। जो नियमानुसार काम करते हैं वे कभी निठल्ला होकर बैठ नहीं सकते (निष्क्रियवत् नोपवेष्टुं शक्नुवन्ति)। जभी निर्दिष्ट समय आवेगा, उन्हें अपना काम सूझ जाएगा।

६

काल बड़ा प्रबल है (कालो बलीयान् वर्त्तते) वह कभी किसीको एक-सा नहीं रहने देता। जो आज राजा है, वह कल भीख माँगता है (भिक्षां याचते) और आज का भिखमंगा (अद्यतनः भिक्षुकः) कल राजा हो जाता है। संसार के सभी पदार्थ क्षणभंगुर हैं। कोई भी चीज अधिक काल तक नहीं रह सकती (न किञ्चित् चिरस्थायी वस्तु)। अतः जो चार दिन की चाँदनी में भूलकर (क्षणिकैश्वर्य्यविमुग्धमानसाः) अहंकार से चूर रहते हैं (मदमत्ता भवन्ति) उनके ऐसा मूर्ख कोई नहीं (तेषां समो मूर्खः कोऽपि नास्ति)।

७

व्यायाम करने का अभ्यास बचपन से ही (शैशवात्प्रभृत्येव) लगाना चाहिए। संध्या और प्रातःकाल में व्यायाम करना अत्यन्त उपयोगी है। खुले स्थान और स्वच्छ वायु में व्यायाम करने से स्वास्थ्य को अधिक लाभ पहुँचता है (स्वास्थ्येऽधिको लाभो जायते)। नित्य व्यायाम करनेवाले प्रायः कभी नहीं बीमार पड़ते (रुग्णा न भवन्ति)। जो वृद्धावस्था तक (आवार्धक्यम्) व्यायाम करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं, वे ही स्वास्थ्य का सुख उठाते हैं (स्वास्थ्यसुखं लभन्ते वा स्वास्थ्यसुखभाजो भवन्ति)।

८

ईश्वर ने आनंद की जितनी सामग्रियाँ प्रदान की हैं, उनमें स्वास्थ्य सबसे बढ़कर है। जिसका स्वास्थ्य ठीक है, वही जीवन का सच्चा सुख

भोगता है (स्वास्थ्यसम्पन्न एव जीवनस्य वास्तविकसुखमनुभवति)।

संसार की बड़ी-से-बड़ी सम्पत्ति स्वास्थ्यरहित व्यक्ति को सुख नहीं पहुँचा सकती (जगतः महत्तममैश्वर्यमपि स्वास्थ्यसौख्यं नावहति)। अतएव स्वास्थ्य को पाने के लिए प्रयत्न करना (स्वास्थ्यलाभाय प्रयत्नः) प्रत्येक मनुष्य का सबसे पहला कर्त्तव्य (सर्वप्रथमकर्त्तव्यः) है।

९

जिसके हृदय में दया नहीं, वह मनुष्यों के समाज में रहने योग्य नहीं है। दूसरे का दुःख दूर करने की ओर (परदुःखनिवारणे) जिसके चित्त की प्रवृत्ति नहीं है, दूसरे की विपत्ति देखकर जिसका हृदय दुःख से नहीं पिघलता (नार्द्री भवति), ऐसे कठोर हृदय के मनुष्य (कठोरचेतसो जनाः), ऐसे स्वार्थ के पुतले (स्वार्थपरायणाः), ऐसे समाज के काँटे (समाजस्य कण्टकीभूताः) से जितनी ही दूर अलग रहें, उतना ही अच्छा है।

१०

जितनी उन्नतिशील जातियाँ हैं, सभी ने कर्म का माहात्म्य स्वीकार किया है (सर्वाभिः समुन्नतजातिभिः कर्ममाहात्म्यं स्वीकृतम्)। भारतवर्ष की तरह यूरोप में भीख माँगने की प्रथा नहीं दिखाई देती (भिक्षावृत्तिर्नावलोक्यते)। कोई काम करके अपना निर्वाह करना ही महत्त्व की बात है, किंतु इस आलस्य-प्रधान भारतवर्ष के निवासियों में यह भाव जाग्रत नहीं होता।

११

मनुष्य का स्वभाव है कि वह अकेला रहना नहीं चाहता, सदा संग ढूँढ़ता है (सदा सङ्गं समीहते)। विद्वानों ने कहा है (सुधीभिः प्रोक्तम्) कि जिस मनुष्य को अकेले रहना पसंद है (यस्मै एकान्तवासः रोचते) वह या तो देवता है या पशु। अकेला रहना सचमुच ही कष्टकर है (कष्टकरः खलु एकान्तवासः)। यही कारण है कि जब अपराधी को कड़ी सजा मिलती है (कठोरदण्डं प्राप्नोति), तब वह निर्जन कोठरी में रखा जाता है (निर्जनकक्षायामवक्षिप्यते)।

१२

सच्चा मित्र संसार में दुर्लभ है। जिसने पाया है, वह सचमुच भाग्यवान् हैं। पंडितों ने कहा है (बुधैरुक्तम्) कि जो सुख-दुःख दोनो में एक-सा साथ दे (सुखदुःखयोः समभावेन साहाय्यं करोति) वही यथार्थ मित्र है। सच्चा मित्र अपने मित्र को कुमार्ग से हटाकर (कुमार्गात् निवार्य) सुमार्ग में लगाता है (सुमार्गे नियोजयति) और जान देकर उसकी भलाई करता है (प्राणव्ययेनापि तस्य हितं साधयति)।

१३

माता-पिता की आज्ञा मानना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है। जिन्होंने न जाने कितनी तकलीफें झेलकर (अमितकष्टान्यालिङ्ग्य) हमें पाला-पोसा है और बड़ा किया है, उनके प्रति उदासीनता दिखलाना भारी कृतघ्नता है (तौ प्रति वैमुख्यप्रदर्शनं महती कृतघ्नता)। अतएव हमें चाहिए कि माता-पिता को संतोष पहुँचावें (माता-पितरौ सन्तोषमवापयाम) और भूलकर भी ऐसा काम न करें जिससे उनके हृदय में चोट पहुँचे (तयोः मर्मविघाति-कार्य्यम्)।

१४

विद्या जहाँ मिल जाए वहीं से सीख लेनी चाहिए। जिस प्रकार अपवित्र स्थान में पड़े हुए सोने को (अशुचिस्थानस्थितं स्वर्णम्) कोई नहीं छोड़ता (न कोऽपि त्यजति) उसी प्रकार (तथैव) यदि अपने से नीच के पास भी विद्या हो, तो उसे अवश्य ग्रहण कर लेना चाहिए (आत्मनः निकृष्टादपि विद्या नूनमेव ग्रहीतव्या), क्योंकि (यतः) जो विद्वान् है वही बड़ा है (य एव विद्वान् स एव महान् वर्त्तते)।

१५

परोपकार से बढ़कर दूसरा कोई पुण्य नहीं है (न किञ्चिदपि परोप-कारान्महत्तरं पुण्यम्)। इसी गुण से हम मनुष्य कहला सकते हैं। नहीं तो (अन्यथा) कुत्ते-बिल्ली भी हमारे समान खाते-पीते, सोते-जागते और डरते हैं। ईश्वर यही चाहता है कि हम एक दूसरे की भलाई करते रहें। (अन्योन्यमुपकुर्वन्तः तिष्ठेम)। जो परोपकारी नहीं है, उससे ईश्वर कभी प्रसन्न नहीं हो सकता (कदाचिदपि तस्मिन् ईश्वरः न प्रसीदति)।

१६

धीरज भी मनुष्य में एक विलक्षण गुण है। जितने काम हैं वे धीरज से ही बनते हैं (सकलकर्माणि धैर्य्येणैव सुसम्पद्यन्ते वा सिध्यन्ति)। चंचलता से काम बिगड़ता है (चापल्यं कार्य्यविघातकं भवति)। जिसको धैर्य नहीं, वह थोड़ी-सी बात में ही घबरा उठता है (आकुली भवति) और घबराहट के कारण उसे अच्छे-बुरे का ख्याल नहीं रहता (हिताहितविवेकशून्यो भवति)।

***

# अष्टम भाग | शब्द-संग्रह

## भोज्य पदार्थ

भात—भक्तम्। ओदनः।
दाल—सूपः। द्विदलम्। दाली।
तरकारी—व्यञ्जनम्। तेमनम्।
रोटी—रोटिका। करपट्टिका।
परौठा—घृतचौरी।
पूरी—शष्कुली।
कचौड़ी—कचौरी।
हलुआ—संयावः। मोहनभोगः।
मालपुआ—पूपः। अपूपः।
पकवान—पक्वान्नम्।
मिठाई—मिष्टान्नम्।
लड्डू—लड्डुकः। मोदकः।
जिलेबी—कुण्डलिकः कुण्डलिनी।
घेवर—घृतपूरः।
मंडा—मण्डकः।
गुझिया (पिड़किया)—संयावः।
पीठा—पिष्ठकः।
बड़ा—वटकः
पापड़—पर्पटः।
बाटी (लिट्टी)— अङ्गारकर्पटी। लेटी।
कढ़ी—क्वथिका।
झोल—विजिलम्।
चिउड़ा—चिपिटकः।
खीर—पायसम्।
चीनी—सिता।
शक्कर—शर्करा।

भूरा—मधुधूलिः।
शहद—मधु (न०)। क्षौद्रम्।
अमावट—आम्रावर्त्तः।
सत्तू—सक्तवः (पुं० ब०)।
गुड़—गुडः।
चटनी—तृप्तिलेहः। अवलेहः।
अँचार—अम्लरागः, आसुतम्।
खटमिट्ठी—खाण्डवः।
चूक—चुक्रम्।
सिरका—शुक्तम्।
दूध—दुग्धम्। क्षीरम्। पयः।
दही—दधि (न०)।
घी—घृतम्। हविः (न०), सर्पिः (न०), आज्यम्।
मलाई—सन्तानिका।
खोआ—किलाटः। किलाटकः।
छेना—कूचिका। आमिक्षा।
छेने का पानी—मस्तु (न०)।
घोल—घोलः।
तक्र—तक्रम्।
मक्खन—नवनीतम्। हैयङ्गवीनम्, तक्रसारः।
माँड़—मण्डम्।
शोरवा—सौवीरः। यूषः।
खिचड़ी—खिच्चटिका। कृशरान्नम्।
भूजा—भृष्टान्नम्। भर्जनम्।

लावा—**लाजाः** (पुँ० ब० ब०) (स्त्री० भी०)
होरहा—**होलका** (स्त्री)
तीखुर—**तवक्षारः**।
मखाना—**मखान्नम्**।
आटा—**गोधूमचूर्णम्**। **कणिका**।
मैदा—**समिता**।
खाँड़—**खण्डः**।
चाशनी—**सितालेहः**।
शरबत—**सिताम्बु** (न०)।
**शर्करोदकम्**। **मिष्टपानकः**।

## तरकारी

आलू—**आलुकः**।
परवल—**पटोलः**।
बैंगन—**वार्त्ताकुः, वृन्ताकः**।
सेम—**शिम्बी** (स्त्री०)।
पेठा—**कूष्माण्डः**।
कोंहड़ा—**अलाबुः**। **कोशफलम्**।
कद्दू—**तुम्बी**। **अलाबुः**।
तरोई—**कोशातकी**। **दीर्घफला**।
झिंगनी—**झिंगनी**। **झिंगाकः**।
रामतरोई—**भिण्डा**। **वृत्तबीजम्**।
खीरा—**त्रपुषम्**।
ककड़ी—**कर्कटी**। **चिर्भटी**।
करेला—**कारवेल्लः**। **कठिल्लकः**।
केले की छीमी—**मोचकः**।
ओल—**कन्दः**। **सूरणः**। **ओलः**।
अरवी—**अरलुः**। **कच्चू** (पुँ०)
मुरई—**मूलकः**। **मूलिका**।
गोभी—**गोजिह्वा** (स्त्री०)।
साग—**शाकः**।
बथुए का साग—**वास्तुकम्**।
पालक का साग—**पालकः**।
चौलाई का साग—**तण्डुलीयः**।
पोई का साग—**पोतकी**।
करमी का साग—**करम्मीशाकः**।
सोए का साग—**शीतशिवा**।
पटुए का साग—**नाडिका**।
नोनी का साग—**लोणी**।
प्याज—**पलाण्डुः**।
लहसुन—**लशुनम्**। **रसोनम्**।
गजरा—**गाजरम्**। **गृञ्जनम्**।
सलगम—**गृञ्जनम्**।
तरबूजा—**कर्कारुकः**। **कृष्णबीजः**। **कालिन्दः**।
खरबूजा—**चित्रफलम्**।
फूट—**बालुकम्**। **इर्वारुः**।
मकोय—**काकमाची**।
सिहारा—**शृङ्गकन्दम्**। **शृङ्गाटकः**। **त्रिकोलः**।
सेरुकी—**शालूकम्**।
कसेरू—**कसेरुः** (पुँ०), **कसेरुकम्**।

## मसाले

मसाला—**उपस्करः**। **वेसवारः**।
जीरा—**जीरकः**।
मिर्च—**मरीचम्**।
हल्दी—**हरिद्रा**।
धनिया—**धान्या**। **धान्याकम्**।
तेजपात—**त्वक्पत्रम्**। **तेजपत्रम्**।

लवङ्ग——**लवङ्गम् । देवकुसुमम् ।**
दालचीनी——**गुडत्वक् ।**
छोटी इलायची——**एला ।**
बड़ी इलायची——**स्थूलैला । महैला ।**
हींग——**हिङ्गुः । रामठम् ।**
अदरख——**आर्द्रकम् ।**
सोंठ——**शुण्ठी ।**
कचूर——**कर्चूरः ।**
पीपल——**पिप्पली ।**
मिरचा——**कटुबीजम् । रक्तमरिचम् ।**
सौंफ——**शतपुष्पा ।**
अजवाइन——**यवानिका ।**
मेथी——**मेथिका ।**
राई——**राजिका ।**
स्याहजीरा——**कृष्णजीरकः ।**
जेठीमध——**यष्टिमधु ।**
शीतलचीनी——**कंकोलः ।**
जायफल——**जातीफलम् ।**
जावित्री——**जातीपर्णी । जातिपत्री ।**
कत्था——**खदिरः । सारः ।**
कपूर——**कर्पूरः ।**
पुदीना——**पुदिनः ।**

## अनाज

अनाज——**अन्नम् । शस्यम् ।**
धान——**धान्यम् । व्रीहिः ।**
साठीधान——**शालिः । षष्टिकः ।**
बूट——**चणकः । हरिमन्थकः ।**
अरहर——**आढकी ।**
मूँग——**मुद्गः ।**
मसूर——**मसूरः ।**
उड़द——**माषः ।**
केराव——**कलायः ।**
मटर——**हरेणुः ।**
खेसारी——**खण्डिकः । त्रिपुटः ।**
कुल्थी——**कुलत्थः । कुल्माषः ।**
मकई——**मकायः ।**
चावल——**तण्डुलः ।**
गेहूँ——**गोधूमः ।**
जौ——**यवः ।**
बाजड़ा——**बर्जरी ।**
साँवाँ——**श्यामाकः ।**
कौनी——**कङ्गुः । पीतधान्यम् ।**
कोदो——**कोद्रवः ।**
सरसों——**सर्षपः ।**
राई——**राजिका ।**
तिल——**तिलः ।**
तीसी——**अतसी ।**
ज्वार——**यावनालः । तुवरः ।**

## फल और मेवे

आम——**आम्रम् ।**
जामुन——**जम्बूफलम् ।**
कटहल——**पनसः । कण्टकिफलम् ।**
सेब——**सीवफलम् ।**
नासपाती——**अमृतफलम् ।**
नारङ्गी——**नारङ्गम् । मधुकर्कटिका ।**
नीबू——**निम्बूकः । जम्बीरः ।**
अनार——**दाडिमः ।**
मीठा अनार——**मधुबीजः ।**
केला——**कदली । रम्भाफलम् ।**

बेल—**बिल्वः। श्रीफलम्।**
अमरूद—**पेरुकः। आमरुत्।**
पपीता—**मध्वेरण्डः। पपीतकफलम्।**
अखरोट—**अक्षोटः।**
किशमिश—**मधुरसा, मृद्वीका।**
मुनक्का—**पथिका।**
दाख—**द्राक्षा।**
पीन खर्जूर—**मधुरस्रवा, पिण्डखर्जूरम्।**
खीरा—**क्षीरी।**
बैर—**बदरीफलम्।**
तूत—**तूदः।**
करौंदा—**करमर्दकः।**
बरहर—**लकुचः।**
गूलर—**उदुम्बरः।**
कदम—**कदम्बः।**
कथबेल—**कपित्थः।**
इमली—**अम्लिका। चिञ्चा। तिन्तिडीका।**
ईख—**इक्षुः।**
ताड़—**तालः।**
खजूर—**खर्जूरः।**
छुहारा—**पिण्डीफलम्।**
नारियल—**नारिकेलफलम्।**
बादाम—**बदामः।**
महुआ—**मधूकः।**
अमड़ा—**आम्रातकः।**
आँवला—**आमलकी, धात्रीफलम्।**
हर्रे—**हरीतकी, पथ्या, अभया।**
बहेड़ा—**अक्षः, विभीतकः।**

## पेड़-पौधे

पीपल—**अश्वत्थः।**
पाकड़—**प्लक्षः, पर्कटी।**
बरगद—**बटः, न्यग्रोधः।**
सखुआ—**शालवृक्षः।**
नीम—**निम्बः।**
सीसो—**शिशपावृक्षः।**
देवदार—**देवदारुः।**
सेमर—**शाल्मलीतरुः।**
बबूर—**बर्बुरः, ीतपुष्पः।**
सहजन—**शोभाञ्जनः, शिग्रुः।**
सेहुँड़—**सेहुण्डः।**
अशोक वृक्ष—**अशोकः।**
भोज वृक्ष—**भूर्जः।**
चन्दन—**चन्दनवृक्षः।**
लोध—**लोध्रः।**
कनेर—**कर्णिकारः।**
कचनार—**कञ्चनारः।**
रीठा—**अरिष्टः।**
रस—**रसः।**
बीज—**बीजम्।**
शिरिस—**शिरीषः।**
पलास—**पलाशः**
कपास—**कार्पासः।**
बाँस—**वंशः, वेणुः।**
बेंत—**वेत्रः, वेतसः।**
रेंड़—**एरण्डः।**
पेड़—**वृक्षः, महीरुहः, शाखी, विटपी, पादपः, तरुः।**
पौधा—**पोतः, लघुपादपः।**
पत्ता—**पत्रम्, दलम्, पर्णम्।**
डाल—**शाखा।**
जड़—**मूलम्।**
फुनगी—**शिखरम। शिखा।**
फूल—**पुष्पम्। कुसुमम्।**

फल—**फलम्** ।
कच्चा फल—**शलाटुः** ।
छिलका—**वल्कलम्** । **वल्कः** ।
गूदा—**वल्कुटम्** ।
डंठल—**वृन्तम्** ।
लकड़ी—**काष्ठम्** ।

## वस्त्र-भूषण

कपड़ा—**वस्त्रम्, पटः, वसनम्** ।
कोरा कपड़ा—**अनाहतम्, वस्त्रम्** ।
धोया कपड़ा, धोती—**धौतवस्त्रम्** ।
सूती कपड़ा—**कार्पासम्** ।
ऊनी कपड़ा—**रोमजम्** । **और्णेयम्** ।
पटुए का कपड़ा—**क्षौमम्** ।
रेशमी कपड़ा—**कौशेयम्** ।
धोती—**परिधानम्** ।
दुपट्टा—**दुकूलम्** । **उत्तरीयम्** ।
कुर्ती—**कञ्चुकम्** ।
कमीज—**कमनीयः, कञ्चुकम्** ।
टोपी—**शिरश्छदः, शिरस्त्रम्** ।
साड़ी—**शाटी** ।
चोली—**चोली, कंचुकी** ।
गमछा—**अङ्गमार्जनी, अङ्गप्रोञ्छनी** ।
लहँगा—**चण्डातकः** ।
पगड़ी—**उष्णीषम्, शीर्षण्यम्** ।
कुर्त्ता—**कूर्पासकः** ।
तौलिया—**अङ्गमार्जनी** ।
रूमाल—**मुखमार्जनी** ।
गहना—**भूषणम्, अलङ्कारः** ।
बेंदी—**ललाटिका** ।
सेंदुर—**सिन्दूरः** ।
मेंहदी—**रक्तगर्भा, मेन्धी** ।
उबटन—**उद्वर्त्तनम्** ।
महावर—**लाक्षा, अलक्तकम्** ।
सुरमा—**अञ्जनम्** ।
अँगूठी—**मुद्रिका, अङ्गुलीयकम्** ।
माला—**हारः, प्रालम्बिका, माला** ।
कण्ठा—**कण्ठभूषा** ।
कँगना—**कङ्कणः** ।
पहुँची—**कटकः** ।
कुण्डल—**कुण्डलम्** ।
कर्णफूल—**कर्णिका, कर्णभूषणम्** ।
हाथ का कड़ा—**वलयः, बाला** ।
पाँव का कड़ा—**हसकः** ।
बिछिया—**नूपुरः** ।
घुँघरू—**किङ्किणी** ।
कमरबन्द—**मेखला, रसना, काञ्ची, केयूरम्** ।
बाजू, विजायठ—**केयूरम्** ।

## फूल और सुगंधित द्रव्य

कमल—**कमलम्, पद्मम्, सरोजम्, जलजम्, उत्पलम्** ।
गुलाब—**पाटलः** ।
बेला—**त्रिपुटा, मल्लिका** ।
चमेली—**जाती, मालती** ।
चम्पा—**चम्पकः, चम्पा** ।
जूही—**यूथिका** ।
गेंदा—**गणेरुकः** ।
ओड़हुल—**जपा** ।
कनेर—**कणेरपुष्पम्** ।

मौलसिरी——बकुलः ।
केवड़ा——केतकी ।
खस——उशीरः ।
चन्दन——चन्दनम् ।
अगर——अगुरुः ।
गुग्गुल——गुग्गुलुः ।
केसर——कुङ्कुमम् ।
कस्तूरी——कस्तूरिका, कस्तूरी ।
गुलाबजल——पाटलजलम् ।
केवड़ाजल——केतकीजलम् ।
इत्र——पुष्पसारः ।

## ओषधि-द्रव्य

पीपल——पिप्पली ।
सोंठ——शुण्ठी ।
अजमोदा——अजमोदा ।
गुरच——गुडूची ।
चिरैता——कैरातम्, चिरतिक्तः ।
अडूसा——वासकः ।
असगंध——अश्वगन्धा ।
गोखरू——गोक्षुरम् ।
महावरी——कुलञ्जम् ।
कत्था—— खदिरः ।
जमालगोटा——जयपालकः ।
इसफगोल——स्निग्धजीरकः, शीतबीजम् ।
जवाखार——यवक्षारः ।
सोहागा——टङ्कणः ।
फिटकिरी——श्वेता, अप्शोधनी ।
गेरू——गैरिकम् ।
खड़िया मिट्टी——खटी ।
चूना——चूर्णम् ।

## हर्वे-हथियार

हथियार——अस्त्रम्, शस्त्रम्, आयुधम् ।
ढाल——फलकः ।
बर्छी——शल्यम्, शङ्कुः ।
भाला——प्रासः, कुन्तः ।
लाठी——लगुडः, दण्डः ।
धनुष——धनुः (न०), चापः ।
वाण——वाणः, शरः ।
तरकस——तूणीरः, इषुधिः ।
गुप्ती——इली, करबालिका ।
मुद्गर——मुद्गरः ।
हथौड़ी——घनः ।
कुल्हाड़ी——कुठारः ।
फरसा——परशुः ।
कटार——कृपाणः ।
चाकू——छुरिका । असिधेनुका ।
काँटी——लौहकीलम् ।
तलवार——असिः, खड्गः, तरवारिः ।
तोप——शतघ्नी (स्त्री०) ।
बन्दूक——आग्नेयास्त्रम्, नालीकम् ।
फाल——फालम् ।
सरौता—— शंकुला ।
आरा——आराः, करपत्रम् ।
कैंची——कर्तनी ।
सुई——सूची
टकुआ——तर्कुः ।
हँसिया——दात्रम् ।
खरपी——क्षरप्रः ।
कुदाल——कुद्दालः ।

खन्ती—खनित्रम्।
फावड़ा—खनकः।
छुरा—क्षुरः।

## खनिज-पदार्थ

सोना—स्वर्णम्। सुवर्णम्, कनकम्, काञ्चनम्।
चाँदी—रजतम्, रूप्यम्, चान्द्री।
ताँबा—ताम्रकम्।
लोहा—लौहम्, अयः।
पीतल—आरकूटः, रीतिः (स्त्री०), पित्तलम्।
काँसा—कांस्यम्।
सीसा—सीसकम्।
राँगा—रङ्गम्, पिच्चटम्।
जस्ता—यशदः।
टीन—त्रपुः।
पारा—पारदः, रसः।
अबरख—अभ्रकम्।
गन्धक—गन्धाश्मा, गन्धिकः।
कोयला—अङ्गारः।
हीरा—हीरकम्।

## संबंधी

बाप—जनकः।
माँ—माता, जननी।
भाई—भ्राता।
बहन—भगिनी, स्वसा।
बेटा—पुत्रः, तनयः, आत्मजः, सुतः, सूनुः।
बेटी—पुत्री, तनया, आत्मजा, दुहिता।
स्त्री—पत्नी, भार्या, जाया, दाराः।
स्त्री—पतिः, स्वामी, भर्त्ता।
चाचा—पितृव्यः।
भतीजा—भ्रातृजः, भ्रातृव्यः, भ्रातुष्पुत्रः।
मामा—मातुलः।
भगिना—भागिनेयः, स्वस्त्रीयः।
ससुर—श्वशुरः।
सास—श्वश्रूः।
ननद—ननान्दा।
भौजाई—भ्रातृजाया।
देवर—देवरः।
पुतोहू—पुत्रवधूः, स्नुषा।
दादा—पितामहः।
पोता—पौत्रः।
नाना—मातामहः।
नाती—नप्ता।
साला—श्यालः।
बहनोई—भगिनीपतिः।
फूआ—पितृष्वसा।
मौसी—मातृष्वसा।
फुफेरा भाई—पैतृष्वसेयः।
मौसेरा भाई—मातृष्वसेयः।
बड़ा भाई—अग्रजः।
छोटा भाई—अनुजः।
सौतेली माँ—विमाता।
जमाई—जामाता।
दायाद—दायादः।
साढू—श्लालीवोढा।

## भिन्न-भिन्न वृत्ति-जीवी

किसान—**कृषाणः, कृषकः, कृषीवलः।**
नाई—**नापितः, क्षुरी।**
धोबी—**रजकः।**
तेली—**तैलिकः।**
मोची—**चर्मकारः।**
जुलाहा—**तन्तुवायः, कौलिकः, पटकारः।**
दर्जी—**सूचिकारः, सौचिकः, सेवकः।**
तमोली—**ताम्बूलिकः।**
माली—**माली, मालाकारः।**
बनिया—**वणिक्, आपणिकः।**
कँसेरा—**कांस्यवणिक्।**
मछुआ—**धीवरः, निषादः।**
ग्वाला—**गोपः।**
रँगरेज—**रङ्गाजीवः।**
ठठेरा—**ताम्रकुट्टकः।**
गड़ेरिया—**मेषपालः, अजाजीवः, गडेरपालः।**
कलवार—**शौण्डिकः। कलालः।**
कारीगर—**कारु, शिल्पी।**
राज—**लेपकः, स्थपतिः।**
गन्धी—**गन्धिकः।**
हलवाई—**मौदकिकः।**
काँदू—**कान्दविकः।**
पण्डा—**देवलः।**
पुरोहित—**पुरोहितः, ग्रामयाजकः।**
सिपाही—**सैनिकः।**
चौकीदार—**द्वारपालः, प्रहरी।**

नौकर—**भृत्यः, दासः, किङ्करः, सेवकः।**
कुम्हार—**कुम्भकारः, कुलालः।**
बढ़ई—**वर्धकिः, काष्ठकारः, रथकारः।**
लुहार—**लौहकारः, कर्मकारः।**
सुनार—**स्वर्णकारः।**
मोटिया—**भारिकः, भारवाहकः।**
मजदूर—**श्रमिकः।**
कसाई—**मांसिकः।**
व्याध—**व्याधः, जालिकः।**
भाँट—**चारणः।**
जासूस—**स्पशः, चरः।**
गवैया—**गायकः।**
बजानेवाला—**वादकः।**
नाचनेवाला—**नर्तकः।**
तमाशा दिखानेवाला—**नटः।**
बाजीगर—**मायाकारः, ऐन्द्रजालिकः।**
वैद्य—**वैद्यः, चिकित्सकः, भिषक्।**
रसोइया—**पाचकः, सूदः, आदेनिकः।**
चोर—**चौरः, तस्करः।**
डाकू—**दस्युः।**
लुटेरा—**लुण्टाकः।**
भिखमंगा—**भिक्षुः, भिक्षुकः, याचकः।**
चरवाहा—**वाहीकः, गोचारकः।**
कत्थक—**कथकः।**
भाँड़—**भण्डः।**
सवार—**अश्ववारः।**

## पशु-पक्षी

सिंह—**सिंहः, मृगेन्द्रः, हरिः, पशुराजः, केसरी।**
बाघ—**व्याघ्रः, शार्दूलः।**
भालू—**भल्लूकः, ऋच्छः।**

चीता—**चित्रकः** ।
बन्दर—**वानरः । कपिः, मर्कटः** ।
हाथी—**हस्ती, गजः, इभः, करी** ।
घोड़ा—**घोटकः, अश्वः, हयः** ।
ऊँट—**उष्ट्रः, क्रमेलः** ।
गधा—**गर्दभः, खरः, रासभः** ।
भैंसा—**महिषः, लुलायः** ।
बैल—**वृषः, वृषभः, गौः, बलीवर्दः** ।
गाय—**गौः, धेनुः** ।
कुत्ता—**कुक्कुरः, श्वा, सारमेयः** ।
खरगोश—**शशकः, शशः** ।
गीदड़—**शृगालः, गोमायुः** ।
हरिण—**हरिणः, मृगः** ।
भेड़—**मेषः, भेडः** ।
बकरा—**अजः, छागः, छगलः** ।
नीलगाय—**गवयः** ।
उदबिड़ाल—**उद्बिडालः** ।
लोमड़ी—**खिखिरः** ।
घड़ियाल—**मकरः, नक्रः** ।
गोह—**गोधा** ।
बत्तक—**बर्त्तकः, कलहंसः** ।
मुर्गा—**कुक्कुटः, ताम्रचूडः** ।
भेड़िया—**वृकः, कोकः** ।
गैंड़ा—**गण्डकः** ।

सूअर—**शूकरः, वराहः, कोलः** ।
बिड़ाल—**विडालः, मार्जारः** ।
मूसा—**मूषकः, आखुः, उन्दुरुः** ।
गरुड़—**गरुडः, वैनतेयः, खगेशः** ।
गीध—**गृध्रः** ।
कौआ—**काकः, वायसः** ।
कोयल—**पिकः, कोकिलः, परभृत्** ।
बाज—**श्येनः** ।
कबूतर—**कपोतः** ।
बगुला—**बकः** ।
चील—**चिल्लः** ।
उल्लू—**उलूकः, पञ्चकः, दिवाभीतः** ।
सुग्गा—**शुकः, कीरः, कौशिकः** ।
मैना—**सारिका** ।
तीतर—**तित्तिरः** ।
खञ्जन—**खञ्जनः, खञ्जरीटः** ।
बटेर—**लावकः** ।
पपीहा—**चातकः** ।
सारस—**सारसः** ।
चकवा—**चक्रवाकः** ।
हंस—**हंसः** ।
मोर—**मयूरः, केकी** ।
चमगादर—**जतुकः** ।

## सरीसृप और कीड़े-मकोड़े

साँप—**सर्पः, भुजङ्गः, अहिः** ।
बिच्छू—**वृश्चिकः, अलिः** ।
गिरगिट—**कृकलासः, सरटः** ।
मकड़ा—**मर्कटः, लूता** ।
गिलहरी—**काष्ठमार्जारः, चमरपुच्छः, चिक्षुरः** ।
कीड़ा—**कीटः** ।
फतिंगा—**पतङ्गः, शलभः** ।

मक्खी—**मक्षिका (स्त्री०)** ।
मधुमक्खी—**मधुमक्षिका** ।
जुगनू—**खद्योतः** ।
भौंरा—**भ्रमरः, अलिः, षट्पदः** ।
केंकड़ा—**कर्कटः** ।
मछली—**मत्स्यः, मीनः** ।
कछुआ—**कच्छपः, कूर्मः** ।
मेढक—**भेकः, मण्डूकः, दर्दुरः** ।

घोंघा--शम्बूकः।
जोंक--जलौका (स्त्री०)।
बिढ़नी--मधूलिका।
डाँस--दंशः।
मच्छर--मशकः, मशः।
खटमल--यूका (स्त्री०), मत्कुणः।
जूँ--लिक्षा (स्त्री०)।
झींगुर--भृङ्गारी, झिल्लिका।
चींटी--पिपीलिका।
घुन--घुणः।
दीमक--वल्मीकः।
घुरघुरा--घुर्घुरः।

## शरीर के अंगादि

सिर--मस्तकम्, शिरः (न०)।
आँख--नेत्रम्, नयनम्, अक्षि, लोचनम्, चक्षुः।
कान--कर्णः, श्रोत्रम्।
नाक--नासिका, नासा।
मुँह--मुखम्, वदनम्, आस्यम्।
जीभ--जिह्वा, रसना।
दाँत--दन्तः, दंष्ट्रा।
ओठ--ओष्ठः, अधरः।
डाढ़ी--चिबुकः।
कपार--कपालः, भालः।
गाल--कपोलः, भालः।
कन्धा--स्कन्धः, अंसः।
बाँह--बाहुः, भुजः।
काँख--कक्षः।
केहुनी--कफोणिः।
हाथ--हस्तः, करः, पाणिः।
उँगली--अङ्गुली (स्त्री०)।
हथेली--हस्ततलम्, करतलम्।
नाखून--नखः।
मुट्ठी--मुष्टिः (स्त्री०)।
पेट--उदरम्, कुक्षिः।
पीठ--पृष्ठम्।
छाती--उरः, वक्षः (न०)।
पसली--पार्श्वम्।
कलेजा--हृदयम्।
गर्दन--ग्रीवा (स्त्री०)।
ढोंढ़ी--नाभिः (स्त्री०)।
कमर--कटिः (स्त्री०)।
चूतर--नितम्बः।
जाँघ--जङ्घा (स्त्री०), ऊरुः (पुं०)।
स्तन--स्तनः, कुचः। पयोघटः।
घुटना--जानुः (न०)।
टाँग--पादः, चरणः।
पैर--पादः, चरणः।
एड़ी--पार्ष्णिः।
घुट्ठी--घुटिका, गुल्फः।
केश--केशः, कचः, बालः।
भौं--भ्रूः (स्त्री०)।
दाढ़ी-मूँछ--श्मश्रु (न०)।
हड्डी--अस्थि (न०)।
मांस--मांसम्।
चर्बी--मेदः, वसा।
शोणित--शोणितम्, रक्तम्, रुधिरम्, असृक्।
पीब--क्लेदः, पूयम्।

## निवासस्थानादि

पृथ्वी--पृथ्वी, भूः, धरा, रसा, भूमिः, मही।
मिट्टी--मृत् (स्त्री०), मृत्तिका।
जल--पानीयम्, जलम्, वारि, उदकम्, सलिलम्।
नदी--नदी, तरङ्गिणी, शैवलिनी, स्रोतस्वती।
पहाड़--पर्वतः, गिरिः, अचल, भूधरः।
राजमहल--सौधः, प्रासादः।
किला--प्राकारः, सालः, दुर्गमः।
दीवाल--भित्तिः (स्त्री०), कुडचम्।
खिड़की--गवाक्षः, वातायनम्।
दरवाजा--द्वार् (स्त्री०)। द्वारम्
फाटक--तोरणम्।
आँगन--अङ्गनम्, अजिरम्।
चबूतरा--चत्वरम्।
किवार--कपाटम्, अररम्, कवाटम्।
जङ्गल--वनम्, जङ्गलम्, काननम्, विपिनम्।
गाँव--ग्रामः, पूः (स्त्री०)।
छोटी बस्ती--पल्ली (स्त्री०)।
शहर--नगरम्।
बाजार--आपणः, निषद्या।
सड़क--राजमार्गः।
गली--प्रतोली, विशिखा, रथ्या।
मकान--गृहम्, भवनम्, सदनम्, आलयः।
छत, छप्पर--छदिः।
खपड़ा--खर्परः।
ईंटा--इष्टका, इष्टकम्।
फूस--तृणम्।
अलीन--अलिन्दम्।
दहलीज--देहली।
ओसारा--उपशालम्।
हाट--हट्टम्।
अटारी--अट्टम्।
छत--छदिः।
ठाट--स्थात्रम्।

## गृहोपयोगी वस्तुएँ

ऊखल--उलूखलम्।
मूसल--मूसलम्।
सूप--शूर्पम्, प्रस्फोटनम्।
चलनी--चालनी, तितउः।
सिल--शिला।
लोढ़ा--पेषणम्।
वर्तन--पात्रम्। भाजनम्।
टोकरी--कण्डोलः, पिटः।
बोरा--स्यूतः, प्रसेवः।
चटाई--कटः।
थाली--स्थालिका।
बाटी--कंसिका।
लोटा--जलपात्रम्।
गिलास--लघुपात्रम्।
घड़ा--घटः, कुम्भः, कलशः।
गगरी--गर्गरी।
बटलोई--स्थाली, कुण्डम्।
करछुल--दर्विः (स्त्री०)।
तवा--कन्दुः (स्त्री०)।
कड़ाही--कटाहः, ऋजिषम्।
हाँडी--भाण्डम्, हण्डिका।
सरवा--शरावः।

ढकना——**छादिका, पिधानम्।**
कलछी——**खजिका।**
चमचा——**लघुर्दविका, चमचः।**
खटिया——**खट्वा।**
पलंग——**पर्यंकः।**
चौकी——**चतुष्किका।**
सेज——**शय्या।**
बिछावन——**आस्तरणम्।**
कम्बल——**कम्बलः।**
शतरंजी——**सप्तरञ्जिता।**
तोशक——**उषीरः।**
तकिया——**उपधानम्।**
मसहरी——**मशहरी।**
सन्दूक——**वासकः, मञ्जूषा।**
ट्रंक——**पेटी, पेटिका।**
खूँटी——**नागदन्तः।**
छड़ी——**यष्टिः (स्त्री०)।**
छाता——**छत्रम्, आतपत्रम्।**
जूता——**उपानत् (स्त्री०), चर्मपादुका।**
खड़ाऊँ——**काष्ठपादुका।**
पीढ़ा——**पीठम्, आसनम्।**
झाड़——**सम्मार्जनी।**
चूल्हा——**चुल्लिः।**
रसोईघर——**महानसम्, पाकशाला।**
कठौता——**कर्करी, आलुः (स्त्री०)।**
पीकदान——**प्रतिग्राहः, ष्ठीवनपात्रम्।**
डब्बा——**सम्पुटकः।**
पंखा——**व्यजनम्, तालवृन्तः।**
सींक——**शिक्यम्।**
बोतल——**काचभाण्डम्।**
शीशी——**सीसिका।**
आइना——**दर्पण; मुकुरः।**
कंघी——**कङ्कतिका, प्रसाधनी।**
चिराग——**प्रदीपः।**
बत्ती——**वर्त्तिः।**

## विविध

भूख——**क्षुधा, बुभुक्षा।**
प्यास——**तृषा, पिपासा।**
नींद——**निद्रा।**
छींक——**छिक्का।**
हिचकी——**हिक्का।**
जम्हाई——**जृम्भा, जृम्भिका।**
ढकार——**आध्मानम्।**
ताली——**तालिका, करतलध्वनिः।**
चुटकी——**छोटिका।**
खुजली——**पामा (पुं०)।**
दाद——**दद्रुः।**
खुजलाहट——**कण्डुः, कण्डूतिः।**
मालिश——**संवाहनम्, मर्दनम्, शीलनम्।**
दबाना——**अङ्गमर्दनम्।**
विष्ठा——**गूथम्, मलम्, पुरीषम्, विष्ठा।**
कूड़ा-कचरा——**आवर्जनम्, अवस्करः।**
मूत्र——**मूत्रम्, प्रस्रावः।**
मलमूत्र——**पुरीषम्।**
कुल्ली करना——**गण्डूषः।**
दाँत माँजना——**दन्तधावनम्।**
आँख की काँची——**नेत्रमलम्।**
कान की गोंजी——**कर्णमलम्, पिञ्जूषम्।**
नाक का पोंटा——**नासामलम्। सिङ्घाणम्।**
थूक——**थुक्का, निष्ठ्यूतम्।**
लार——**लाला।**

पसीना—घर्मः, स्वेदः।
दाँत की खराट—पुष्पिका।
जीभ का मैल—कुलकम्, रसनामलम्।
फुसफुस—फुसफुसः।
मुँहासा—युवपिटिका।
गाली— गालिः।
मोम—मधूच्छिष्टम्, सिक्थम्।
फेफड़ा—फुपफुसः।
गोंद—निर्यासः।
लेई—विलेपी।

## विशेषण

सोडा—सर्जिः (स्त्री०)।
अच्छा—उत्तमः, सुष्ठु, साधुः।
बुरा—कुत्सितः, दुष्टः, असाधुः।
धनी—धनी, धनिकः, समृद्धः।
गरीब—दरिद्रः, निर्धनः।
मोटा—स्थूलः, पीनः।
पतला—कृशः।
कमजोर—दुर्बलः, निर्बलः।
मजबूत—सबलः, बलवान्, बली।
लम्बा—लम्बः दीर्घः, विशालः।
नाटा—खर्वः, वामनः, ह्रस्वः।
अन्धा—अन्धः, दृष्टिहीनः।
काना—एकाक्षः।
लूला—श्रोणः, न्युब्जः।
लँगड़ा—खञ्जः।
बहरा—बधिरः, एडः।
गूँगा—मूकः।
कुबड़ा—कुब्जः।
कोढ़ी—कुष्ठी।
बीमार—रोगी, रुग्णः, व्याधितः।
तन्दुरुस्त—स्वस्थः, नीरोगः।
पागल—मत्तः, विक्षिप्तः।
चतुर—चतुरः, बुद्धिमान्।
जवान—युवा, युवकः, तरुणः।
बूढ़ा—वृद्धः, स्थविरः।
मूर्ख—मूर्खः, मूढः, मन्दः, जडः।
विद्वान्—विद्वान्, पण्डितः, सुधीः।
सुंदर—सुन्दरः, रम्यः, चारुः, रुचिरः, मञ्जुलः।
कुरूप—कुरूपः, कान्तिहीनः।
सज्जन—सुशीलः, सज्जनः।
दुष्ट—दुष्टः, दुर्जनः, कुटिलः, शठः।
उदार—उदारः, विशालहृदयः।
कंजूस—कृपणः, कदर्यः।
ओछा—नीचः, सङ्कीर्णहृदयः, पिशुनः, क्षुद्रः, पामरः।
चुगुलखोर—पिशुनः, कर्णेजपः।
डरपोक—कातरः, भीरुः।
लालची—लोभी, लोलुपः, तृष्णालुः।
ठग—धूर्त्तः, वञ्चकः, प्रतारकः।
नया—नवीनः, नूतनः, नवः, अर्वाचीनः।
पुराना—प्राचीनः, पुरातनः, पुराणः।
ऊँचा—उच्चः, तुङ्गः, प्रांशुः।
नीचा—नीचः, निम्नः।
सीधा—ऋजुः, सरलः, अकुटिलः।
टेढ़ा—वक्रः, कुटिलः।
चिकना—चिक्कण,: मसृणः।
कोमल—कोमलः, स्निग्धः, मृदुलः।
कड़ा—कठोरः।
रुखड़ा—कर्कशः, कठिनः, रूक्षः।
बहुत—प्रभूतम्, प्रचुरम्, प्राज्यम्, बहु, बहुलम्।
थोड़ा—अल्पः, स्तोकः।
गोल—गोलः, वर्त्तुलः, गोलाकारः।

बड़ा—दीर्घः, आयताकारः।
छोटा—क्षुद्रः, ह्रस्व, लघुः।
भरा—पूर्णः।
खाली—रिक्तः, शून्यः।
गहरा—गम्भीरः।
उथला—उत्थलः।
सूखा—शुष्कः।
गीला—आर्द्रः, सरसः।
गर्म—उष्णः।
ठण्ढा—शीतः, शीतलः।
उजला—उज्ज्वलः, श्वेतः, सितः, शुक्लः, धवलः।
काला—कृष्णः, श्यामः, कालः, असितः।
नीला—नीलः।
पीला—पीतः।
हरा—हरितः।
लाल—रक्तः।
मीठा—मिष्टः, मधुरः।
तीता—तिक्तः।
कड़वा—कटुः।
नमकीन—लवणः
खट्टा—अम्लः।
कसैला—कषायः।
खारा—क्षारः।
साफ—स्वच्छः, निर्मलः।
शुद्ध—पूतः, पवित्रः, शुचिः।
मैला—मलिनः, अशुचिः।
अशुद्ध—अपवित्रः।
पका—पक्वः।
कच्चा—अपक्वः, आमः।
तेज—तीक्ष्णः, तेजितः, निशितः।
थोथा—मन्दः, मन्दबुद्धिः।
हाजिरजवाब—प्रत्युत्पन्नमतिः।

***

# क्रिया

## १. गत्यर्थक

जाना—गम् (गच्छति)।
—व्रज् (व्रजति)।
—या (याति)।
—इ (एति)।
—ऋ (ऋच्छति)।
आना—आ*+गम् (आगच्छति)
आ +या (आयाति)।
घूमना—भ्रम् (भ्रमति, भ्राम्यति)।
टहलना—परि+अट् (पर्यटति)।
—वि+चर् (विचरति)।
दौड़ना—धाव् (धावति)।
चलना—चल् (चलति)।
ससरना—सृ (सरति)।
—सृप् (सर्पति)।
कूदना—कूर्द (कूर्दते)।
खेलना—खेल् (खेलति)।
—क्रीड् (क्रीडति)।
उड़ना—उत्+डी (उड्डयते, उड्डीयते)।
तैरना—तृ (तरति)।
—प्लु (प्लवते)।
नाचना— नृत् (नृत्यति)।
घुसना—प्र+विश् (प्रविशति)।
निकलना—निः+सृ (निःसरति)।
[illegible] (पलायते)।



* गमनार्थक धातु के पूर्व 'आ' उपसर्ग जोड़ देने से आने का अर्थ निकलता है।

गिरना--पत् (पतति)।
बहना--वह् (वहति)।
--वा (वाति)।
ले जाना--नी (नयति)।
ढो ले जाना--वह् (वहति)।
हर ले जाना--हृ (हरति)।
ले आना--आ+नी (आनयति)
फिसलना--स्खल् (स्खलति)।
चूना--च्यु (च्यवते)।
--द्रु (द्रवति)।
भेजना--प्र+इष् (प्रेषयति)।

## २. भोजनार्थक

खाना--खाद् (खादति)।
--भक्ष् (भक्षयति)।
--भुज् (भुङ्क्ते)।
--अद् (अत्ति)।
--अश् (अश्नाति)।
पीना--पा (पिबति)।
आचमन करना--आ+चम् (आचमति)।
चबाना--चर्व (चर्वति)।
निगलना--नि+गृ (निगिरति)।
--नि+गिल् (निगिलति)।
चाटना--लिह् (लेढि)।
चूसना--चूष् (चूषति)।
चखना--आ+स्वाद्+णिच् (आस्वादयति)।

## ३. ज्ञानार्थक

जानना--ज्ञा (जानति)।
समझना--अव+गम् (अवगच्छति)।
--बुध (बोधति)।
--विद् (वेत्ति)।
सुनना--श्रु (शृणोति)।
आ+कर्ण (आकर्णयति)।
नि+शम् (निशमयति)।
सूँघना--घ्रा (जिघ्रति)।
देखना--दृश् (पश्यति)।
--ईक्ष (ईक्षते)।
--लोच् (लोचते)।
--अव+लोक् (अवलोकते)।
अवलोकयति, विलोकयति।
छूना--स्पृश् (स्पृशति)।
स्वाद लेना--स्वद् (स्वद्ते)।
सोचना--चिन्त् (चिन्तयति)।
--तर्क (तर्कयति)।

## ४. भावार्थक

होना--भू (भवति)।
प्रसन्न होना--प्र+सद् (प्रसीदति)।
--तुष् (तुष्यति)।
--हृष् (हृष्यति)।
दुखी होना--खिद (खिद्यते)।
--सद् (सीदति)।
क्रोधित होना--क्रुध् (क्रुध्यति)।
--रुष् (रुष्यति)।
घबराना--क्षुभ् (क्षुभ्यति)।
--आकुल+च्वि (आकुलीभवति)।
कष्ट पाना--क्लिश् (क्लिश्यति)।

घमंड करना--मद् (माद्यति)।
लज्जा करना--लज्ज् (लज्जते)।
--त्रप् (त्रपते)।
डरना--भी (बिभेति)।
सहना--सह् (सहते)।
थकना--श्रम् (श्राम्यति)।
--क्लम् (क्लाम्यति)।
चमकना--द्युत् (द्योतते)।
--भा (भाति)।
--राज् (राजते)।
शोभना--शुभ् (शोभते)।
विराजना--वि+राज् (विराजते)।
रहना वा होना--विद् (विद्यते)।
मूर्च्छित होना--मूर्छ् (मूर्च्छति)।
सुस्त होना--ग्लै (ग्लायति)।
गंदा होना--दुष् (दुष्यति)।
पुष्ट होना--पुष् (पुष्यति)।
नष्ट होना--नश् (नश्यति)।
भ्रष्ट होना--भ्रंश् (भ्रश्यति)।
जीना--जीव् (जीवति)।
मरना--मृ (म्रियते)।
--पञ्चत्वं+गम् (पञ्चत्वं गच्छति)।
दया करना--दय् (दयते)।
क्षमा करना--क्षम् (क्षमते)।
गाना--गै (गायति)।
स्वीकार करना--स्व+च्वि+कृ (स्वीकरोति)।
--अङ्ग+च्वि+कृ (अङ्गीकरोति)।
प्रशंसा करना--प्र+शंस् (प्रशंसति)।
निंदा करना--निन्द् (निन्दति)।
डाह करना--द्रुह् (द्रुह्यति)।
--द्विष् (द्विष्यति)।
संतुष्ट होना--सम्+तुष् (सन्तुष्यति)।
--तृप् (तृप्यति)।

## ५. शब्दार्थक

कहना--कथ् (कथयति)।
--ब्रू (ब्रवीति, ब्रूते, आह)।
--वच् (वक्ति)।
--भण् (भणति, अभिदधाति)
बोलना--वद् (वदति)।
--गद् (गदति)।
--भाष् (भाषते)।
चिल्लाना--क्रुश् (क्रोशति)।
गाना--गै (गायति)।
ध्यान करना--ध्यै (ध्यायति)।
--आ+लप् (आलपति)।
हँसना--हस (हसति)।
रोना--क्रन्द् (क्रन्दति)।
--रुद् (रोदिति)।
खिलखिलाना--अट्टहासं+कृ (अट्टहासं करोति)।
विलाप करना--वि+लप् (विलपति)।
बड़बड़ाना--(जल्पति)।
--प्र+लप् (प्रलपति)।
बातचीत करना--सं+भाष् (सम्भाषते)।
--सं+लप् (संलपति)।
बहस करना--वि+वद् (विवदते)।
झगड़ा करना--कलह (कलहायते)।

गरजना—गर्ज् (गर्जति)।
शब्द करना—शब्द (शब्दायते)।
—रु (रौति)।
—नद् (नदति)।
—क्वण् (क्वणति)।
घोषणा करना—घुष् (घोषयति)।
—आ+ख्या (आख्याति)।
वर्णन करना—वर्ण् (वर्णयति)।
ललकारना—आ+ह्वे (आह्वयते)।

पुकारना—आ+ह्वे (आह्वयति)।
—आ+कृ+णिच् (आकारयति)।
जवाब देना—उत्तरं+दा
(उत्तरं ददाति)।
गूँजना—गुञ्ज् (गुञ्जति)।
पढ़ना—पठ् (पठति)।
—अधि+ई (अधीते)
रटना—रट् (रटति)।
भजन करना—भज् (भजति, भजते)।
स्तुति करना—स्तु (स्तौति)।

## ६. हस्तक्रियार्थक

करना—कृ (करोति)।
—वि+धा (विदधाति)।
देना—दा (ददाति)।
—दाण् (यच्छति)।
लेना—ग्रह् (गृह्णाति)।
—आ+दा (आददाति)।
—ला (लाति)।
पकड़ना—धृ (धरति)।
फेंकना—क्षिप् (क्षिपति)।
—अस् (अस्यति)।
छोड़ना—मुच् (मुञ्चति)।
—त्यज् (त्यजति)।
तोड़ना—त्रुट्+णिच् (त्रोटयति)।
—भञ्ज् (भनक्ति)।
—भिद् (भिनत्ति)।
काटना—कृत् (कृन्तति)।
—छिद् (छिनत्ति)।
—सो (स्यति)।
जोड़ना—युज्+णिच् (योजयति)।
टुकड़ा करना—खण्ड् (खण्डयति)।
बुकनी करना—चूर्ण् (चूर्णयति)।
पीसना—पिष् (पिनष्टि)।

कूटना—कुट्ट् (कुट्टयति)।
कण्ड् (कण्डयति)।
मारना—हन् (हन्ति)।
पीटना—तड् (ताडयति)।
—प्र+हृ (प्रहरति)।
थप्पड़ मारना—चपेटां+दा
(चपेटां ददाति)।
छेदना—व्यध् (विध्यति)।
बाँधना—बन्ध् (बध्नाति)।
रगड़ना—घृष् (घर्षति)।
लीपना—लिप् (लिम्पति)।
बुहारना—सम्+मृज्+णिच्
(सम्मार्जयति)।
सँवारना—भूष् (भूषयति)।
—सज्ज् (सज्जयति)।
—मण्ड् (मण्डयति)।
लिखना—लिख् (लिखति)।
रँगना—रंज् (रञ्जयति)।
गूँथना—ग्रन्थ् (ग्रथ्नाति)।
—गुफ् (गुम्फति)।
बनाना—रच् (रचयति)।
—निर्+मा (निर्माति)।

पकाना--पच् (पचति)।
--रध् (रध्यति)।

चुनना--चि (चिनोति)।
--सं+कल् (सङ्कलयति)।

## विविध

खरीदना--क्री (क्रीणाति)।
बेचना--वि+क्री (विक्रीणीते)।
तौलना--तुल् (तोलयति)।
नापना--मा+णिच् (मापयति)।
फैलाना--तन् (तनोति)।
समेटना--सं+कुच् (सङ्कोचयति)।
जलना--ज्वल् (ज्वलति)।
जलाना--दह् (दहति)।
--ज्वल्+णिच् (ज्वालयति)।
डसना--दंश् (दशति)।
डाँटना--तर्ज् (तर्जति, तर्जयते)।
बचाना--त्रै (त्रायते)।
--रक्ष् (रक्षति)।
--पा (पाति)।
हिलना--कम्प् (कम्पते)
--वेप् (वेपते)।
हिलाना--धु (धुनोति)।
--धू (धुवति)।
दूहना--दुह् (दोग्धि)।
चरना--चर् (चरति)।
फूलना--पुष्प् (पुष्पति)।
फलना--फल् (फलति)।
दवाना--पीड् (पीडयति)।
मलना--मर्द् (मर्दयति)।
रोकना--बाध् (बाधते)।
मुसकुराना--स्मि (स्मयते)।
चूमना--चुम्ब् (चुम्बति)।
आलिंगन करना--स्वज् (स्वजते)।
--आ+लिङ्ग (आलिङ्गते)।
--श्लिष् (श्लिष्यति)।

पूछना--प्रच्छ् (पृच्छति)।
--अनु+युज् (अनुयुनक्ति)।
बढ़ना--वृध् (वर्द्धते)।
--एध् (एधते)।
माँगना--याच् (याचते)।
--भिक्ष् (भिक्षते)।
कोशिश करना--यत् (यतते)।
--चेष्ट् (चेष्टते)।
लटकना--लम्ब् (लम्बते)।
सींचना--सिच् (सिञ्चति)।
थूकना--ष्ठिव् (ष्ठीवति)।
चाहना--इष् (इच्छति)।
--कम् (कामयते)।
--कांक्ष् (कांक्षति)।
सकना--शक् (शक्नोति)।
--कल्प् (कल्पते)।
शुरू करना--आ+रभ् (आरभते)।
खतम करना--सम्+आप् (समापयति)।
जीतना--जि (जयति)।
हराना--परा+जि (पराजयते)।
पाना--लभ् (लभते)।
--प्र+आप् (प्राप्नोति)।
सोना--शी (शेते)।
--स्वप् (स्वपिति)।
जागना--जागृ (जागर्ति)।
बैठना--उप+विश् (उपविशति)।
छींकना--छिक्क (छिक्कायते)।
जम्हाई लेना--जृम्भ (जृम्भते)।
नहाना--स्ना (स्नाति)।

धोना—क्षल् (क्षालयति)।
कुल्ला करना—गण्डूषं+कृ (गण्डूषं करोति)।
पूजा करना—पूज् (पूजयति)।
—अर्च् (अर्चति) वा (अर्चयति)।
स्मरण करना—स्मृ (स्मरति)।
भूलना—वि+स्मृ (विस्मरति)।
प्रणाम करना—प्र+नम् (प्रणमति)।
—वन्द् (वन्दते)।
आशीर्वाद देना—आशीः+दा (आशिषं ददाति)।
शाप देना—शप् (शपते)।

सेवा करना—सेव् (सेवते)।
सीखना—शिक्ष् (शिक्षते)।
झुकना—नम् (नमति)।
ठहरना—स्था (तिष्ठति)।
रहना—वस् (वसति)।
छिपना—लुक्क् (लुक्कायते)।
—नि+ली (निलीयते)।
—गुह् (गूहति)।
ढाँकना—छद् (छादयति)।
गुदगुदाना—गूर्द् (गूर्दते)।
खुजलाना—कण्डूञ् (कण्डूयते)।
हिनहिनाना—हृष्+ (ह्रेषते)।

***

# सेकेंडरी बोर्ड परीक्षा में आए हुए प्रश्न एवं उत्तर

## १९६४ (वार्षिक)

निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं पाँच का अनुवाद संस्कृत में कीजिए--

(१) विहार की राजधानी पटना है।
(२) यह गंगा के समीप अवस्थित है।
(३) गंगा हिमालय से निकलती है।
(४) हिमालय पर्वतों का राजा है।
(५) इसकी गुफाओं में ऋषि तपस्या करते हैं।
(६) हमलोग भी वहाँ चलें।
(७) पटना का गोलघर बहुत प्रसिद्ध है।
(८) पटना कॉलेज बिहार में सबसे पुराना कॉलेज है।
(९) उसमें लगभग तीन हजार छात्र पढ़ते हैं।
(१०) रमेश के साथ मैं भी वहीं पढ़ूंगा।
(११) हम दोनों छात्रावास में रहेंगे।

**उत्तर--**

(१) बिहारस्य राजधानी पाटलिपुत्रम् अस्ति।
(२) इयं गङ्गायाः समीपे अवस्थिता अस्ति।
(३) गङ्गा हिमालयात् प्रवहति।
(४) हिमालयः पर्वतराजः अस्ति।
(५) अस्य गुहासु ऋषयः तपः कुर्वन्ति।
(६) वयमपि तत्र गच्छाम।
(७) पाटलिपुत्रस्थं 'गोलाकारगृहम्' (गोलघरम्) अतिप्रसिद्धम् अस्ति।
(८) पटना-महाविद्यालयः बिहारे प्राचीनतमः महाविद्यालयः अस्ति।
(९) तस्मिन् प्रायः त्रीणि सहस्राणि छात्राः पठन्ति।
(१०) रमेशेन सह अहमपि तत्रैव पठिष्यामि।
(११) आवां छात्रावासे स्थास्यावः।

## १९६४ (पूरक)

निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं पाँच का अनुवाद संस्कृत में कीजिए--

(१) गंगा में नाव चलती है।
(२) मैं तुम्हारे व्यवहार से प्रसन्न हूँ।
(३) उसने अपने घर से मुझे एक पत्र लिखा।

(४) मेरी कक्षा में पचास छात्र हैं।
(५) उसने भारतीय काँग्रेस का इतिहास लिखा।
(६) कहना आसान है, पर करना कठिन।
(७) परिश्रम समृद्धि का मूल कारण है।
(८) बुद्धिहीन छात्र शिक्षक से डरते हैं।

**उत्तर--**

(१) गङ्गायां नौका चलति।
(२) अहं तव व्यवहारेण प्रसन्नः अस्मि।
(३) सः स्वगृहात् माम् एकं पत्रम् अलिखत्।
(४) मम कक्षायां पञ्चाशत् छात्राः सन्ति।
(५) तेन भारतीयकाँग्रेसस्य इतिहासं लिखितम्।
(६) कथनं सुकरं, किन्तु करणं कठिनम्।
(७) परिश्रमः समृद्धेः मूलं कारणम् अस्ति।
(८) बुद्धिहीनाः छात्राः शिक्षकात् बिभ्यति।

## १९६५ (वार्षिक)

६. (क) पटना एक प्राचीन नगर है। (ख) यह मगध साम्राज्य की राजधानी थी। (ग) इस समय बिहार प्रान्त की राजधानी है। (घ) यह गंगा के तट पर अवस्थित है। (ङ) यहाँ अनेक चक्रवर्ती राजा उत्पन्न हुए। (च) उनमें अशोक बहुत प्रसिद्ध थे। (छ) इन्होंने अपनी प्रजा के हित के लिए अनेक काम किए। (ज) इसी कारण अशोक आदर्श राजा माने जाते हैं।

**उत्तर--**(क) पाटलिपुत्रं एकम् प्राचीनं नगरम् अस्ति। (ख) इदं मगध-साम्राज्यस्य राजधानी आसीत्। (ग) अधुना बिहारप्रान्तस्य राजधानी अस्ति। (घ) इदं गङ्गातीरे अवस्थितमस्ति। (ङ) अत्र अनेके चक्रवर्त्तिनः राजानः समुत्पन्नाः अभवन्। (च) तेषु अशोकः महान् प्रसिद्धः आसीत्। (छ) अयम् स्वप्रजानाम् कल्याणाय अनेकानि कार्याणि अकरोत्। (ज) अतएव अशोकः आदर्शः राजा परिगण्यते।

## १९६५ (पूरक)

६. (क) चन्द्रगुप्त मगध का चक्रवर्त्ती राजा था। (ख) उसने चाणक्य की सहायता से राज्य प्राप्त किया था। (ग) चाणक्य एक बहुत बड़ा विद्वान् था। (घ) उसका अर्थशास्त्र बहुत प्रसिद्ध ग्रंथ है। (ङ)

अर्थशास्त्र में अनेक विषय वर्णित हैं। (च) इसके अध्ययन से बड़ा

लाभ होता है। (छ) इसमें शासन-व्यवस्था तथा अर्थशास्त्र का विशद वर्णन है। (ज) भारतीय नेताओं को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिए।

**उत्तर--**(क) चन्द्रगुप्तः मगधस्य चक्रवर्त्ती राजा आसीत्। (ख) सः चाणक्यस्य साहाय्येन राज्यं प्राप्नोत्। (ग) चाणक्यः एकः महाविद्वान् आसीत्। (घ) तस्य 'अर्थशास्त्रम्' अतिप्रसिद्धः ग्रन्थः अस्ति। (ङ) अर्थशास्त्रे अनेके विषयाः वर्णिताः सन्ति। (च) अस्याध्ययनेन अतीव लाभः भवति। (छ) अस्मिन् शासन-व्यवस्थायाः अर्थशास्त्रस्य च विशदम् वर्णनम् अस्ति। (ज) भारतीयैः नेतृभिः अयं ग्रन्थः अवश्यमेव पठनीयः।

## १९६६ (वार्षिक)

६. (क) नालंदा पटना जिला में है। (ख) यहाँ प्राचीन काल में बौद्धों का एक विहार था। (ग) वहाँ एक विख्यात विश्वविद्यालय था। (घ) इसमें चौदह सौ शिक्षक थे। (ङ) यहाँ दस हजार विद्यार्थी रहते थे। (च) यहाँ विदेशों से भी लोग पढ़ने के लिए आते थे। (छ) आज भी यहाँ पाली भाषा का संस्थान है। (ज) कार्यालय के सामने एक विशाल तालाब है।

**उत्तर--**(क) नालन्दा पटना-मण्डले अस्ति। (ख) अत्र पुरा बौद्धानां एकः विहारः आसीत्। (ग) तत्र एकः विख्यातः विश्वविद्यालयः आसीत्। (घ) अस्मिन् चतुर्दशशतानि शिक्षकाः आसन्। (ड) अत्र अयुतसंख्यकाः छात्राः निवसन्ति स्म। (च) अत्र विदेशादपि जनाः पठितुम्, आगच्छन्ति स्म। (छ) साम्प्रतमपि अत्र पालि-भाषायाः संस्थानमस्ति। (ज) कार्यालयस्य सम्मुखे एकः विशालः तडागः अस्ति।

## १९६६ (पूरक)

६. (क) हरद्वार उत्तर प्रदेश में है। गंगा की स्वच्छ धारा वहाँ बहती है। (ग) उस स्थान से बदिराकाश्रम समीप है। (घ) वहाँ लोग वैशाख मास में जाते हैं। (ङ) मार्ग में अनेक विश्रामगृह हैं। (च) बदरिकाश्रम का मार्ग कष्टदायक है। (छ) वहाँ एक धर्मशाला भी है। (ज) इससे यात्रियों को आराम मिलता है।

**उत्तर--**(क) हरद्वारम् उत्तरप्रदेशे अस्ति। (ख) गङ्गायाः स्वच्छधारा तत्र वहति। (ग) तत्स्थानान् बदरिकाश्रमः समीपे अस्ति। (घ) तत्र जनाः वैशाखे मासि गच्छन्ति। (ङ) मार्गे अनेकानि विश्राम-गृहाणि सन्ति। (च) बदरिकाश्रमस्य मार्गम् कष्टदायकमस्ति। (छ) तत्र एका धर्मशाला अपि अस्ति। (ज) अनेन [illegible]

## १९६७ (वार्षिक)

७. (क) पण्डित जवाहरलाल भारत के प्रधान मंत्री थे। (ख) वे बड़े विद्वान् और राजनीतिज्ञ थे। (ग) भारत को स्वतन्त्र उन्होंने बनाया। (घ) भारत की स्वतन्त्रता का श्रेय उन्हीं को है। (ङ) आधुनिक भारत के निर्माण में वे सफल रहे। (च) भारत उनके ऋणों को नहीं चुका सकता। (छ) आधुनिक भारत धनी और समृद्ध है। (ज) वह अपनी ही शक्ति पर निर्भर करता है।

**उत्तर**--(क) पण्डितः जवाहरलालः भारतस्य प्रधानमन्त्री आसीत्। (ख) स महाविद्वान् राजनीतिज्ञश्च आसीत्। (ग) भारतम् स स्वतन्त्रं कारितवान्। (घ) भारतस्य स्वतन्त्रतायाः श्रेयः तमेव अस्ति। (ङ) आधुनिकभारतस्य निर्माणे असौ सफलीभूतः। (च) भारतम् तस्य ऋणं परशोधितुम् न शक्नोति। (छ) आधुनिकं भारतम् धनी समृद्धश्च अस्ति। (ज) स आत्मशक्त्या निर्भरं करोति।

## १९६७ (पूरक)

६. (क) मलमास प्रत्येक तीन वर्षों पर होता है। (ख) इस मास में राजगृह में मेला लगता है। (ग) यह मेला एक मास तक रहता है। (घ) राजगृह में गर्म झरने हैं। (ङ) इनमें से एक सप्त धारा के रूप में विदित है। (च) यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है। (छ) शीत ऋतु में दूर-दूर से लोग आते हैं।

**उत्तर**--(क) मलमासः प्रतितृतीये वर्षे भवति। (ख) अस्मिन् मासि राजगृहे जन-समारोहः भवति। (ग) अयं जन-समारोहः एकं मासपर्यन्तम् तिष्ठति। (छ) राजगृहे उष्णजलप्रपातानि सन्ति। (ङ) एषु एकः सप्तधारारूपे विदितः अस्ति। (च) अत्रत्यः जलवायुः स्वास्थ्यप्रदः अस्ति। (छ) शीततौ सुदूरात् जनाः आगच्छन्ति।

## १९६८ (वार्षिक)

७. (क) दशरथ अयोध्या के राजा थे। (ख) राम उनके पुत्र थे। (ग) लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न इनके भाई थे (घ) राम की माता का नाम कौशल्या था। (ङ) कैकेयी भरत की माँ थी। (च) वह अपने पुत्र के लिए राज्य चाहती थी। (छ) भरत को इसका लोभ नहीं था।

**उत्तर**--(क) दशरथः अयोध्यायाः नृपतिरासीत्। (ख) रामः तस्य

पुत्रः आसीत्। (ग) लक्ष्मणः, भरतः, शत्रुघ्नश्च अस्य भ्रातरः आसन्।

(घ) रामस्य मातुः नाम कौशल्या आसीत्। (ङ) कैकेयी भरतस्य माता आसीत्। (च) सा स्वपुत्रार्थम् राज्यं इच्छति स्म। (छ) भरतम् अस्य लोभः नासीत्।

## १९६८ (पूरक)

६. (क) बिहार की राजधानी पटना है। (ख) इसका पुराना नाम कुसुमपुर है। (ग) यह बहुत एतिहासिक नगर है। (घ) यहाँ अशोक नाम के राजा थे। (ङ) वे पहले बहुत कठोर थे। (च) एक बार सैनिकों को कटते देख वे द्रवित हो गए। (छ) उनका हृदय परिबर्त्तन हो गया।

उत्तर—(क) बिहारस्य राजधानी पाटलिपुत्रम् अस्ति। (ख) अस्य प्राचीनं नाम कुसुमपुरः अस्ति। (घ) अत्र अशोक नामा नृपतिरासीत्। (ङ) सः अतीव निष्ठुरः आसीत्। (च) एकदा सैनिकान् हन्यमानान् दृष्ट्वा असौ द्रवितः अभवत्। (छ) तस्य हृदयाः परिवर्त्तितः अभूत्।